राष्ट्रीय दैनिक

# प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 कोई खिलाड़ी खेल रहा हो या नहीं सीएसके फ्रेंचाइजी सभी ...

केजरीवाल और उनके साथी सहानुभूति या समर्थन के हकदार ... 12



वर्ष : 10 | अंक : 333 | पटना, मंगलवार, 18 अप्रैल, 2023 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com


# बिहटा में अवैध खनन के खिलाफ छापेमारी करने गई टीम पर पत्थरबाजी

## जिला खनन पदाधिकारी सहित तीन जख्मी, तीन हिरासत में

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। जिला प्रशासन की कड़ाई व प्रतिबंध के बावजूद ओवरलोडिंग, वाहनों के अवैध परिचालन तथा अवैध खनन का धंधा थमने का नाम नहीं ले रहा है। अवैध कारोबारी खुलेआम कानून की धज्जियां उड़ा रहे हैं। इतना ही नहीं छापेमारी के दौरान प्रशासन व खनन विभाग के अधिकारियों पर धावा बोलने से भी नहीं हिचकते। सोमवार को बिहटा प्रखंड में एक बार फिर अवैध खनन माफियाओं का दबंगई देखने को मिला। दरअसल, बिहटा प्रखंड में जिला खनन पदाधिकारी, जिला परिवहन पदाधिकारी एवं अपर अनुमंडल दंडाधिकारी, दानापुर के नेतृत्व में सोमवार को ओवरलोडिंग, वाहनों के अवैध परिचालन तथा अवैध खनन के विरुद्ध छापेमारी कर रही थी। इसमें एमवीआई, ईएसआई सहित परिवहन एवं माइनिंग की संपूर्ण टीम लगी हुई थी। दिन के लगभग पौने तीन बजे कोइलवर पुल के नीचे बंद पेट्रोल पम्प पर असामाजिक तत्वों द्वारा छापेमारी टीम पर पत्थरबाजी

कर दी गई। इसमें जिला खनन पदाधिकारी एवं 2 खनन निरीक्षक घायल हैं। तीनों का उपचार चल रहा है। इसकी सूचना पर जिलाधिकारी, पटना द्वारा तुरंत अनुमंडल पदाधिकारी एवं अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, दानापुर को घटनास्थल पर भेजा गया। पत्थरबाजी करने वालों के विरूद्ध सघन छापामारी की जा रही है। 44 लोगों के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज की गई है। लगभग 50 वाहनों को भी पकड़ा गया है। वाहन मालिकों एवं चालकों के विरुद्ध एफआइआर दर्ज करने की कार्रवाई की जा रही है। पुलिस अधीक्षक पश्चिमी, अनुमंडल पदाधिकारी एवं अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, दानापुर बिहटा में ही कारवाई का अनुश्रवण कर रहे हैं। जिलाधिकारी ने कहा कि जिनकी भी संलिप्तता रहेगी सबके विरुद्ध विधिसम्मत कार्रवाई की जाएगी। बताते चलें कि सोमवार को बिहटा के कोईलवर पुल परेव में अवैध बालू कारोबारियों के खिलाफ खनन विभाग द्वारा की गई कार्रवाई के बीच बालू माफियाओं ने अधिकारियों पर पथराव कर दिया। जानकारी के मुताबिक घटना में महिला खनन पदाधिकारी सहित तीन पुलिस भी जख्मी हो गये है। बिहटा पुलिस ने चार माफियाओं को हिरासत में लिया है। स्थल से एक काली स्कॉर्पियो भी पकड़ी गयी है जिसमें वायरलेस सेट लगा था।

घटना के बाद इलाके में तनाव का माहौल है। वरीय पुलिस आधिकारी के निर्देश पर भाड़ी संख्या में पुलिस बल को बिहटा भेजा गया है।

**घायलों के नामः** कुमार गौरव, ज़िला खनन पदाधिकारी सैयद फरहीन, खनन निरीक्षक आम्या कुमारी, खनन निरीक्षक

**मौसम**

अधिकतम तापमान 43.0°C

न्यूनतम तापमान 28.°C

राजधानी दिल्ली व आसपास के क्षेत्रों में आज भी बारिश के आसार

| | |
|---|---|
| हां | 30% |
| नहीं | 50% |
| कह नहीं सकते | 10% |

**बाजार**

| | |
|---|---|
| सोना | 62,435 |
| चांदी | 78,500 |
| सेंसेक्स | 59,910 |
| निफ्टी | 17,707 |

# जहरीली शराब पर सीएम का बड़ा ऐलान- मृतकों के आश्रितों को मिलेंगे 4-4 लाख रुपये

## गरीब परिवार के लोग जहरीली शराब पीकर मर जाते हैं, यह बहुत दुःखद : नीतीश

### बोलें- हमसब लोगों को प्रेरित करेंगे कि शराब नहीं पीनी चाहिए

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने जहरीली शराब से हुई मौत मामले पर बड़ा ऐलान किया है। सोमवार को पत्रकारों से बातचीत करते हुये मुख्यमंत्री ने कहा कि 01 अप्रैल 2016 यानि शराबबंदी लागू होने के बाद से जिनकी मृत्यु जहरीली शराब पीने से हुयी है, उनके आश्रितों को मुख्यमंत्री राहत कोष से 4 लाख रुपये दिये जायेंगे। उन्होंने कहा कि सामान्य तबके के गरीब परिवार के लोग जहरीली शराब पीकर मर जाते हैं, यह बहुत दुःखद है। अब जिस परिवार का कोई मरा है उस परिवार के लोग साफ तौर पर ये बता दें कि ये हमारे परिवार के सदस्य हैं और इन्होंने कहां से शराब खरीदी और पी थी ?ये सब लिखित रूप में जिलाधिकारी के यहां भेजना होगा। अगर पीड़ित परिवार की ओर से ये सब लिखित रूप में जिलाधिकारी के यहां भेज दिया जाएगा तो हमने यह तय कर दिया है। कि पीड़ित परिवार को मुख्यमंत्री राहत कोष से 4 लाख रुपये की मदद दी जाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह अभी ही नहीं बल्कि 01 अप्रैल 2016 से शराबबंदी लागू होने के बाद से उन सभी पीड़ित परिवारों को भी जिनके यहां जहरीली शराब पीने से किसी की मृत्यु हुई है, उन्हें भी ये मदद दी जाएगी। हमने जो आज कहा है, उसे लेकर मुख्य सचिव से लेकर अन्य अधिकारी सभी को निर्देश दे देंगे। जहरीली शराब से हुई मौत से संबंधित पत्रकारों के प्रश्न के जवाब में मुख्यमंत्री ने कहा कि इससे हमें बहुत दुःख हुआ है, भीतर से तकलीफ हो रही है कि कैसे कोई पी लेता है और मर भी जाता है। इतनी ज्यादा कोशिशों के बाद भी यह सब हो रहा है उनको ये भी कहना होगा कि शराब नहीं पीनी चाहिए।

हमसब लोगों को प्रेरित करेंगे कि शराब नहीं पीनी चाहिए। हमलोग शराबबंदी के पक्ष में हैं। इधर दो-तीन सालों से हम देख रहे हैं कि बार-बार समझाने के बावजूद लोग जहरीली शराब पीकर अपनी जान गंवा दे रहे हैं। हर चीज के लिए कानून बना हुआ है, इसके बाद भी अगर

कोई कुछ बोलता है तो उसका क्या कहना। शराबबंदी के प्रभावी नियंत्रण के पत्रकारों के सवाल पर मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2016 में शराबबंदी लागू की गई और सभी पार्टियों की सहमति से इसे लागू किया गया। हमलोग निरंतर अभियान चलाते रहे हैं। इससे कितने लोगों ने शराब का सेवन करना छोड़ दिया। इधर जो घटनाएं घट रही हैं, अभी कुछ दिन पहले और फिर वर्ष 2021 के अंत में और इसके बाद फिर से घटना घटी है। आपको मालूम है कि जब वर्ष 2016 में हमलोगों ने शराबबंदी लागू की थी और फिर जहरीली शराब का मामला आया तो पीड़ित परिवार को राज्य सरकार की ओर से मदद दी गई।

फिर बाद में कोई कोर्ट चला गया तो वो पेंडिंग रह गया। दो दिन पहले हम जो देखे, हमको बड़ा दुःख हुआ। हमने तुरंत अपने अधिकारियों के साथ विमर्श किया और कहा कि आपलोग इतनी मेहनत कर रहे हैं और जो भी गड़बड़ करता है उसकी गिरफ्तारी करते हैं। हमलोग इतना ज्यादा अभियान चलाए लेकिन इधर लगातार जहरीली शराब का मामला सामने आ रहा है। वर्ष 2021 के अंत में और वर्ष 2022 में समाज सुधार अभियान चलाकर हमने बिहार में घूम-घूमकर इसके बारे में लोगों को जागरूक और सचेत किया लेकिन कोई भी काम करिएगा तो शत-प्रतिशत सफल नहीं हो सकता है। जहरीली शराब की भट्ठियों को ध्वस्त किया जा रहा है, ये सब तो हो ही रहा है लेकिन इसके बाद भी कुछ हो रहा है तो हम पीड़ित परिवार को मदद करेंगे। हम सभी लोगों को मुख्यमंत्री राहत कोष से से मदद करेंगे। शराबबंदी लागू होने के बाद से यानी 01 अप्रैल 2016 से जो भी पीड़ित परिवार होंगे उन्हें मदद दी जाएगी। शराबबंदी को लेकर पुलिस की भूमिका से संबंधित पत्रकारों के प्रश्न पर मुख्यमंत्री ने कहा कि अरेस्टिंग की कोई बात नहीं है, मौत हुई है। अरेस्टिंग तो गड़बड़ करनेवालों की होती है, जो शराब का धंधा करते हैं। संविधान को देख लीजिए। कानून बना हुआ है, राज्यों को अधिकार दिये गये है, कई राज्यों ने पहले भी शराबबंदी कानून को लागू किया है, हमने भी किया है, यहां पर पहले भी हुआ था और फिर अब हमने किया है, सात साल हो गये और अब आठवां साल शुरू हो गया है। हम बराबर सब जगह बोलते रहते हैं कि शराब बुरी चीज है। बापू ने क्या कहा था, याद करिए डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट आई है दुनियाभर से उसे भी हम लोगों के बीच बताते रहते है। उसके बाद भी अपने बिहार में इस तरह की घटना घट रही है तो हम मदद तो कर देंगे लेकिन पीड़ित परिवार को एश्योरेंस देना होगा।

## इस तरह की घटना पर यूपी सरकार को सोचना चाहिए

पटना। उत्तर प्रदेश में अतीक अहमद की हत्या से संबंधित पत्रकारों के सवाल पर मुख्यमंत्री ने कहा कि यह दुःखद घटना है। प्रेस के लोग ये सब करेंगे ? झूठ बोल दिया कि प्रेसवाला खड़ा डोकर पूछ रहा था। कौन आकर वहां खड़ा हो गया, यह सब पुलिस को पहले से देखना चाहिए था। कोई जेल में है और आप उसको इलाज के लिए ले जा रहे हैं और रास्ते में इस तरह की घटना घट जाती है, यह बहुत ही दुःखद है। इसपर निश्चित रूप से एक्शन लेना चाहिए। किसी को सजा होती है और किसी पर केस होता है, कोई जेल में है तो उसपर हमको कुछ नहीं कहना है हमारा कहना है कि कोई भी जेल में रहेगा और वो बाहर जाएगा तो उसकी सुरक्षा का पूरा प्रबंध होना चाहिये।

६हमलोगों के यहां से भी कोई जेल से कोर्ट जाता है तो उसकी सुरक्षा में पुलिस रहती है या नहीं ? इस तरह की घटना होती है तो वहां की सरकार को सोचना चाहिए। अपराधियों के सफाये का मतलब क्या है, उसको मार देना चाहिए। ये कोई तरीका है, इसका मतलब कि कोई जेल में जाएगा तो उसको मार दीजिएगा ? ऐसा कोई नियम है ? ये तो कोर्ट फैसला करता है। किसी को फांसी की सजा होती है तो वो भी कोर्ट फैसला करता है, बाकी कितने साल या महीनें जेल में रहने है, ये भी कोर्ट फैसला करता है। जाति आधारित गणना के पत्रकारों के सवाल पर मुख्यमंत्री ने कहा कि जाति आधारित गणना तो हमलोग कर रहे हैं लेकिन जातीय आधारित जनगणना की मांग हमने पहले केन्द्र से की थी। वर्ष 2011 में जो जनगणना हुई उसकी रिपोर्ट जारी नहीं की गई। उसके बारे में ये पता चला कि वो ठीक से नहीं हुई थी। बिहार में इस मुद्दे पर सारी पार्टियों का एक मत था। वर्ष 2019 में बिहार विधानसभा और बिहार विधान परिषद् दोनों जगहों से जातीय जनगणना के लिए प्रस्ताव पारित हुआ था लेकिन बाद में केंद्र की ओर से हुआ कि आपलोग अपने स्तर से करिए तो हमलोग अपने स्तर से करवा रहे हैं। इसमें सभी दलों की सहमति है बख्तियारपुर जाकर हमने खुद अपनी गणना करवाई है। इसमें सब की आर्थिक स्थिति का भी पता लगाया जाएगा। संख्या जानने के अलावा कोई भी कास्ट हो अपर कास्ट हो या बैकवर्ड या दलित हो, मुस्लिम हो, अगर कोई खराब स्थिति में है तो उसके उत्थान के लिए काम किया जाएगा।

## हिंसक संस्कृति को जन्म दे रही भाजपा : तेजस्वी

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में माफिया अतीक और उसके भाई अशरफ की पुलिस कस्टडी में हुई हत्या के बाद पूरे देश की राजनीति गर्म हो गई है। बिहार में सियासी संग्राम छिड़ा है। इस बीच सोमवार को दिल्ली से पटना पहुंचे तेजस्वी यादव ने माफिया अतीक अहमद हत्याकांड को लेकर योगी सरकार पर जमकर हमला बोला है। प्रयागराज में अतीक अहमद और उसके भाई की पुलिस कस्टडी में हुई हत्या पर तेजस्वी ने कहा कि अपराध या अपराधियों से हमें कोई सहानुभूती नहीं है लेकिन अपराध और अपराधियों के खात्मे के लिए देश में कानून और संविधान है। कानून के तहत ही सभी अपराधियों को सजा मिलनी चाहिए। इसी देश में प्रधानमंत्री के हत्यारों का ट्रायल हुआ और कानून के तहत उन्हें सजा मिली लेकिन यूपी में जो भी हुआ वह शर्मनाक है। तेजस्वी ने कहा कि यूपी में अतीक जी का नहीं बल्कि कानून का जनाजा निकला है। सुनियोजित तरीके से एक स्क्रिप्ट के तहत एक पूर्व सांसद की पुलिस कस्टडी में हत्या की गयी है। इसकी आशंका तो मरने वाले पहले से ही जता रहे थे। पुलिस कस्टडी में हत्या के मामलों में यूपी अव्वल है। उत्तरप्रदेश में ये सब सस्ती लोकप्रियता पाने के लिए किया जा रहा है। देश में शांति रहेगी तो जनता महंगाई, बेरोजगारी, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और गरीबी जैसे मुद्दों पर चर्चा करेगी इसलिए बीजेपी और बीजेपी समर्थित, संरक्षित और संपोषित अपराधी गोदी मीडिया के सहयोग से देश में हिंसक संस्कृति को जन्म दे रहे है। बीजेपी बहुत खतरनाक राजनीति कर देश को अकल्पनीय बबार्दी की ओर धकेल रही है।

## जंगलराज का विलाप करने वाले भाजपा नेताओं को यूपी में दिख रहा मंगलराज : ललन

पटना। जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष ललन सिंह ने भाजपा नेताओं को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि बिहार में मामूली विवाद पर भी जंगलराज का विलाप करने वाले भाजपाइयों को उत्तरप्रदेश पुलिस फोर्स की मौजूदगी में अंधाधुंध गोलीबारी और न्यायिक हिरासत में दो हत्याएं दिखाई नहीं देती। न्यायिक प्रक्रिया और संविधान पर ताक पर रखकर खुलेआम कानून की धज्जियां उड़ाई जा रही है और हैरानी का विषय यह है कि प्रशासनिक विफलताओं पर चिंतन करने के बजाएं भाजपा के नेता इन तमाम घटनाओं पर अपनी पीठ खुद ही थपथपा रहें हैं। आगे उन्होंने कहा कि जबसे बिहार में महागठबंधन की सरकार का गठन हुआ है तबसे दिल्ली से लेकर प्रदेश स्तर के नेताओं को जंगलराज का भूत सताने लगा है जबकि आज उत्तरप्रदेश की स्थिति डरावनी बनी हुई और राज्य की कानून-व्यवस्था को सरेआम कुचला जा रहा है तब ये सारे भाजपाई बेशर्मी के साथ इस घटनाक्रम पर चुप्पी साधे हुए हैं, भाजपा नेताओं का दोहरा चरित्र बिहार और देश की जनता अच्छे से समझ रही है। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि देश की जनता मूकदर्शक बनकर आपके घटिया करतूतों और संविधान विरोधी कारनामों को देख रही है। अगले लोकसभा चुनाव में जनता इनके सारे कुकृत्यों का हिसाब चुकता करेगी। संविधान और लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ खिलवाड़ किसी भी कीमत पर सहन नहीं होगा।

# महाराष्ट्र भूषण पुरस्कार कार्यक्रम में गर्मी से 12 लोगों की मौत, 100 से अधिक बीमार

नई दिल्ली, एजेंसी

रायगढ़ जिले के नवी मुंबई में महाराष्ट्र भूषण पुरस्कार कार्यक्रम में गर्मी लगने से अब तक 12 लोगों की मौत हो चुकी है। इस घटना में 4 लोगों की स्थिति चिंताजनक बनी हुई है। इस कार्यक्रम में गर्मी लगने से 100 से अधिक लोग बीमार हैं। इन सभी का इलाज सोमवार को एमजीएम पनवेल, एमजीएम वाशी, डीवाई पाटिल, टाटा अस्पताल जैसे विभिन्न अस्पतालों में हो रहा है। मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने इस घटना पर गहरा दुख जताया है। उन्होंने प्रत्येक मृतक के आश्रितों को 5 लाख रुपये की आर्थिक मदद देने का ऐलान किया है। सभी बीमार लोगों का सरकारी खर्च से इलाज करवाया जाएगा। इन सभी के इलाज में तालमेल रखने के लिए सचिव स्तर के अधिकारी को जिम्मेदारी सौंपी गई है। उल्लेखनीय है कि रविवार दोपहर नवी मुंबई के खारघर में राज्य सरकार की ओर से महाराष्ट्र भूषण पुरस्कार कार्यक्रम आयोजित किया गया था। समाजसेवक अप्पासाहेब धर्माधिकारी को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के हाथों इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया। हालांकि कार्यक्रम के बाद यहां गर्मी से परेशान लोग बीमार होने लगे थे। रविवार को देर रात तक इस घटना में भीषण गर्मी से 11 लोगों की मौत हो गई थी। सोमवार को सुबह कल्याण के निवासी एक व्यक्ति की एमजीएम अस्पताल में मौत हो गई। इस घटना में मरने वालों में से 8 महिलाएं और 4 पुरुष हैं। मृतकों में महेश नारायण गायकर (42), जयश्री जगन्नाथ पाटिल (54), मंजूषा कृष्ण भोंबांडे (51), स्वप्निल सदाशिव केनी (30), तुलसीराम भाऊ वांगड (58), कलावती सिद्धराम वैचल (46), भीमा कृष्ण साल्वी (58), सविता संजय पवार (42), पुष्पा मदन गायकर (64), वंदना जगन्नाथ पाटिल (2), विनायक हलदणकर और एक अन्य के रूप में की गई है। इन सभी के शव उनके आश्रितों को दे दिए गए हैं। एक अन्य शव की अभी तक पहचान नहीं हो सकी है। इस घटना के बाद मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे अस्पताल में जाकर बीमार लोगों से मिले और उनके इलाज के लिए सचिव स्तर के अधिकारी को जिम्मेदारी दी है। इसके बाद विधानसभा ने नेता प्रतिपक्ष अजीत पवार, शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे पार्टी) के अध्यक्ष उद्धव ठाकरे, विधानपरिषद के नेता प्रतिपक्ष अंबादास दानवे भी अस्पताल पहुंचकर बीमार लोगों से मुलाकात की है।

## संक्षिप्त खबरें

### मुख्यमंत्री ने संपादक एमए जफर के निधन पर जताया शोक

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने उर्दू रोजनामा फारूकी तंजीम के संपादक एमए जफर के निधन पर गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है। मुख्यमंत्री ने अपने शोक संदेश में कहा है कि स्व एमए जफर ने बिहार एवं झारखंड में उर्दू पत्रकारिता को नया आयाम दिया। वे अपने जिंदगी के आखिरी समय तक लेखन कार्य और पत्रकारिता से जुड़े रहे। उनके निधन से पत्रकारिता विषेषकर उर्दू पत्रकारिता के क्षेत्र में अपूरणीय क्षति हुई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि ईश्वर से प्रार्थना है कि वे उन्हें जन्नत में अहम मकाम अता करे और उनके परिवार वालों को इस अपूरणीय क्षति को सहन करने की ताकत दें।

### राज्यपाल व मुख्यमंत्री ने पूर्व सीएम स्व विनोदानंद झा को दी श्रद्धांजलि

पटना। पूर्व मुख्यमंत्री स्व विनोदानंद झा जी के जन्म दिवस के अवसर पर पटना में राजकीय जयंती समारोह का आयोजन श्रीकृष्ण स्मारक भवन परिसर में किया गया। राज्यपाल राजेन्द्र विष्वनाथ आर्लेकर एवं मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने पूर्व मुख्यमंत्री स्व विनोदानंद झा जी के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया एवं भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर वित्त, वाणिज्य कर एवं संसदीय कार्य मंत्री विजय कुमार चौधरी, परिवहन मंत्री शीला कुमारी, विधि मंत्री शमीम अहमद सहित अनेक सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकताओं ने स्व विनोदानंद झा के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

### राज्यपाल व मुख्यमंत्री ने पूर्व पीएम चन्द्रशेखर को दी श्रद्धांजलि

पटना। पूर्व प्रधानमंत्री स्व चन्द्रशेखर के जन्म दिवस के अवसर पर पटना में राजकीय जयंती समारोह का आयोजन बहादुरपुर हाउसिंग कॉलोनी, पार्क नं0-2, कंकड़बाग में किया गया। राज्यपाल राजेन्द्र विष्वनाथ आर्लेकर एवं मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व चन्द्रशेखर की आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हेंनमन किया एवं भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर वित्त, वाणिज्य कर एवं संसदीय कार्य मंत्री विजय कुमार चौधरी, परिवहन मंत्री शीला कुमारी, विधायक मुकेश रौशन, पूर्व महासचिव बिहार राज्य नागरिक परिषद अरविंद कुमार सहित अनेक सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकताओं ने स्व चन्द्रशेखर की आदमकद प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

**कार्यक्रम** जनता के दरबार में मुख्यमंत्री कार्यक्रम में शामिल हुए मुख्यमंत्री, 40 लोगों की सुनी समस्यायें, अधिकारियों को दिए आवश्यक निर्देश

# पुश्तैनी जमीन पर कब्जा की शिकायत पर मुख्यमंत्री सख्त

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार सोमवार को 4, देशरत्न मार्ग स्थित मुख्यमंत्री सचिवालय परिसर में आयोजित जनता के दरबार में मुख्यमंत्री कार्यक्रम में शामिल हुए। इस दौरान पुश्तैनी जमीन पर दबंगों द्वारा कब्जा जमाए जाने की फरियादी की शिकायत पर मुख्यमंत्री सख्त दिखें। मुख्यमंत्री ने संबंधित अधिकारियों को शीघ्र कार्रवाई करने का निर्देश दिया। दरअसल, सीवान जिला से आए एक युवक ने मुख्यमंत्री से फरियाद करते हुये कहा कि उसकी पुश्तैनी जमीन पर कब्जा कर लिया गया है। इस पर मुख्यमंत्री ने संबंधित विभाग को कड़ी कार्रवाई करने का निर्देश दिये। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने राज्य के विभिन्न जिलों से पहुंचे 40 लोगों की समस्याओं को सुना और संबंधित विभागों के अधिकारियों को समाधान के लिए समुचित कार्रवाई के निर्देश दिए। किशनगंज जिला से आए एक युवक ने मुख्यमंत्री से आग्रह करते हुए कहा कि 20 हजार की आबादी का गांव बाढ़ से प्रभावित हो रहा है उसके लिए उचित उपाय किए जाएं। अरवल जिला से आयी एक महिला ने मुख्यमंत्री से गुहार लगाते हुए कहा कि 8 फीट चैड़ी सड़क होने के बाद भी हर घर तक पक्की गली-नाली का निर्माण योजना के तहत हमारे यहां नाली का निर्माण नहीं हो रहा है। कटिहार जिला से आये एक फरियादी ने मुख्यमंत्री से आग्रह करते हुए कहा कि विधायक फंड से वर्ष 2019-20 में पथ निर्माण कराने का टेंडर किया गया था, लेकिन अब तक किए गए कार्य की राशि का भुगतान नहीं किया गया है। मुख्यमंत्री ने संबंधित विभाग को समुचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया।

वहीं, मुजफ्फरपुर जिला से आयी एक महिला ने अपनी शिकायत में कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत लाभ दिए जाने के बाद भी उन्हें अपना घर नसीब नहीं हुआ है, इससे काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। मुख्यमंत्री ने ग्रामीण विकास विभाग को समुचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया। सुपौल जिला से आए एक युवक ने मुख्यमंत्री से आग्रह करते हुए कहा कि उनके पिताजी बियाडा में कार्यरत थे, उनकी नौकरी के दरम्यान मौत हो गई थी, लेकिन उसके बाद भी आश्रित को नौकरी नहीं मिली है। मुख्यमंत्री ने संबंधित विभाग को ऐसे मामलों में त्वरित

कार्रवाई करने के निर्देश दिये।

**लंबित वेतन भुगतान शीघ्र हो : सीएम**

सीतामढ़ी जिला से आए एक व्यक्ति ने मुख्यमंत्री से गुहार लगाते हुए कहा कि उनके लंबित वेतन का अब तक भुगतान नहीं किया गया है। मुख्यमंत्री ने संबंधित विभाग को उचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया। पश्चिम चंपारण जिला से आये एक युवक ने मुख्यमंत्री से गुहार लगाते हुए कहा कि जनवरी 2021 से ही उनके ट्रैक्टर को वन विभाग द्वारा जब्त कर लिया गया है। लाख गुहार लगाने के बावजूद भी उन्हें ट्रैक्टर वापस नहीं मिला है। मुख्यमंत्री ने पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग को समुचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया। भोजपुर जिला से आए एक युवक ने मुख्यमंत्री से गुहार लगाते हुए कहा कि जनवितरण प्रणाली दुकान में दो लोगों का चयन किया गया लेकिन स्थानीय जनप्रतिनिधि की उदासीनता की वजह से शिक्षित बेरोजगार होने के बाद भी उन्हें इसका लाभ नहीं मिल पा रहा है। मुख्यमंत्री ने खाद्य एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग को समुचित कार्रवाई के निदेश दिये। करने के निर्देश दिये। बक्सर जिला के डुमरांव से आए एक युवक ने गुहार लगाते हुए कहा कि नगर परिषद के द्वारा कई कार्यों को नहीं किया गया है। डस्टबीन की खरीदारी में भी अनियमितता बरती गई है। मुख्यमंत्री ने संबंधित विभाग को समुचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया। बेगूसराय जिला से आयी एक महिला ने मुख्यमंत्री से आग्रह करते हुए कहा कि उनके घर के ऊपर से बिजली का तार जाने से काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। मुख्यमंत्री ने ऊर्जा विभाग को समुचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया।

**इन विभागों से संबंधित विषय निर्धारित थे :** जनता के दरबार में मुख्यमंत्री कार्यक्रम में सोमवार को सामान्य प्रशासन विभाग, ग्रामीण विकास विभाग, ग्रामीण कार्य विभाग, पंचायती राज विभाग, ऊर्जा विभाग, पथ निर्माण विभाग, लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग, कृषि विभाग, सहकारिता विभाग, पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग, जल संसाधन विभाग, उद्योग विभाग, नगर विकास एवं आवास विभाग, खाद्य एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग, परिवहन विभाग, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवत्तन विभाग, लघु जल संसाधन विभाग, योजना एवं विकास विभाग, पर्यटन विभाग, भवन निर्माण विभाग, वाणिज्य कर विभाग, सूचना एवं जन-संपर्क विभाग, गन्ना उद्योग विभाग एवं विधि विभाग से संबंधित विषय निर्धारित थे।

**ये रहें मौजूद :** जनता के दरबार में मुख्यमंत्री कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव, वित्त, वाणिज्य कर एवं संसदीय कार्य मंत्री विजय कुमार चौधरी, ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार, जल संसाधन सह सूचना एवं जन-संपर्क मंत्री संजय कुमार झा, सहकारिता मंत्री सुरेंद्र प्रसाद यादव, उद्योग मंत्री समीर कुमार महासेठ, खाद्य एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री लेशी सिंह, परिवहन मंत्री शीला कुमारी, लघु जल संसाधन मंत्री जयंत राज, विधि मंत्री शमीम अहमद, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव दीपक कुमार, मुख्य सचिव आमिर सुबहानी, पुलिस महानिदेशक आरएस भट्टी, संबंधित विभागों के अपर मुख्य सचिव/प्रधान सचिव/सचिव, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव डॉ एस सिद्धार्थ, मुख्यमंत्री के सचिव अनुपम कुमार, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य पदाधिकारी गोपाल सिंह, पटना के जिलाधिकारी चंद्रशेखर सिंह तथा वरीय पुलिस अधीक्षक राजीव मिश्रा उपस्थित थे।

## संक्षिप्त खबरें

### अंबेडकर के बताए रास्ते पर चलने का संकल्प

दानापुर खगौल। नगर के सोमवार को अंबेडकर जयंती के अवसर पर पूर्व मध्य रेलवे सिनियर सेकेन्ड्री स्कूल, दानापुर में डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के जीवन की उपलब्धियों और सराहनीय कार्योपरविचाराभिव्यक्ति क्रियाकलाप कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जहां छात्रों ने कविता पाठ व उनके जीवनी पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम से पूर्व प्राचार्य ज्ञानेश्वर एवं मौजूद अन्य शिक्षक शिक्षिकाओं ने बाबा साहेब के तैल चित्र पर माल्यापर्ण कर कार्यक्रम की शुरूआत की। इस मौके पर प्राचार्य ने क्रियाकलाप में छात्रों का मार्गदर्शन करते बताया कि बाबा साहेब ने समता, बंधुत्ववादी, सदभाव के दर्शन पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होने डॉ. अंबेडकर के जातिवाद पर आधारित भेदभाव एवं शोषण को खत्म करने के संकल्प की जानकारी भी दी।

### आम तोड़ने के विवाद में मारपीट, एक युवक की मौत

फतुहा। बीते रविवार को थाना क्षेत्र के बुद्धदेव चक गांव में आम तोड़ने के विवाद में हुई मारपीट में जख्मी 35 वर्षीय युवक का इलाज के दौरान पटना के एक निजी अस्पताल में मौत हो गयी। मृतक बुद्धदेव चक गांव के ही सुबोध प्रसाद है। बताया जाता है कि मृतक गांव के ही एक आम के बगीचे को भाड़े पर लिया था। इस नाते वह बगीचे में लगे आम की फसल को पहरेदारी कर रहा था। रविवार को सुबह गांव के ही कुछ लड़के आम की फसल को तोड़ने लगे। यह देख मृतक ने जब विरोध किया तो आरोपियों ने उसकी जमकर पिटाई कर जख्मी कर दिया। जख्मी हालत में उसे पटना के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था। घटना के बाद जहां दोनों पक्षों के बीच तनाव व्याप्त है, वहीं पुलिस पुरे मामले की छानबीन करने में जुटी है।

### सती सत्यवान मंदिर जीर्णोद्वार का संकल्प लेकर हुआ मेले समापन

पटना सिटी (प्राकि)। रानीपुर के बभनगावां गांव स्थित सती सावित्री सत्यवान मंदिर के जीर्णोद्वार का संकल्प लेकर मेला का समापन हुआ। मेला को राष्ट्रीय मेला का दर्जा मिले, रानीपुर के बभनगावां स्थित सती सावित्री के मंदिर को पर्यटन स्थल घोषित कर विकसित करने और मंदिर से बाइपास रोड तक संपर्क पथ का निर्माण कराने की मांग की गई है। गठित कमेटी के संरक्षक रामजी योगेश, अध्यक्ष अंजू सिंह, कार्यकारी अध्यक्ष अवधेश कुमार सिन्हा, उपाध्यक्ष संजीव सिन्हा तथा महासचिव रजनीश राय ने यह मांग की है। इन सबों ने कहा कि जल्द ही मांगों को लेकर शिष्टमंडल एसडीओ और संबंधित अधिकारियों से मिल कर बातों को रखेगा।

### एनएमसीएच का एक कर्मी कोरोना संक्रमित

पटना सिटी (प्राकि)। एनएमसीएच में आरटीपीसीआर जांच में अस्पताल का एक कर्मी कोविड संक्रमित पाया गया है। अस्पताल के अधीक्षक डॉ राजीव रंजन व नोडल पदाधिकारी डॉ मुकुल कुमार सिंह ने बताया कि सोमवार को माइक्रो बॉयोलॉजी विभाग में 392 सैंपल की जांच आरटी पीसीआर से हुई। इसमें वैशाली से आए 373 सैंपल की जांच में रिपोर्ट निगेटिव पाया गया है। अस्पताल के 19 नमूना की जांच में एक मरीज पाजिटिव मिला है। अस्पताल के एमसीएच में कोविड मरीज के भर्ती करने के लिए 40 बेड की व्यवस्था है, जिसे बढ़ाया भी गया है। दूसरी ओर अगमकुआंस्थित आरएमआरआई के निदेशक डॉ कृष्णा पांडेय ने बताया कि स्वाइन फ्लू के तीन सैंपल की जांच हुई। इसमें कोई पाजिटिव मरीज नहीं मिला। नौ और सैंपल जांच के लिए आया है, जिसकी जांच मंगलवार को होगी।

### वैश्य समाज की सभी उपजातियों का कोड एक हो : पूनम

फतुहा। जातिय जनगणना में वैश्य समाज के सभी उपजातियों का एक ही कोड हो उक्त बाते भाजपा नेत्री पूनम केसरी ने कही और बतायी कि इससे वैश्य समाज की कितनी आबादी है इसकी सही जानकारी मिल पायेगी, लेकिन बिहार सरकार वैश्य समाज के सभी उपजातियों को अलग-अलग कोड देकर उसके वास्तविक संख्या से अलग-थलग करने की साजिश कर रही है इसका विरोध वैश्य समाज के नेताओं को करना चाहिए चाहें वे

# परीक्षा नियंत्रक डॉ संजय के गायब होने से पारा मेडिकल छात्रों का भविष्य दांव पर

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

वर्ष 2018 और 2020 बैच का प्रथम और द्वितीय वर्ष की परीक्षा बीते साल नवंबर में हुआ था, चस्का रिजल्ट अभी तक प्रकाशित नहीं किया गया है। छात्रों ने हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया। इसमें कोर्ट ने साफ आदेश दिया कि परीक्षा के तीन माह के अंदर रिजल्ट दिया जाना है। कोर्ट के आदेश की अवहेलना करते हुए अबतक रिजल्ट प्रकाशित नहीं किया गया है। इसके कारण बिहार सरकार के ओटी असिस्टेंट, एक्स-रे तकनीशियन आदि की वेकेंसी आई थी, जिसमें छात्र शामिल नहीं हो सके। परीक्षा नियंत्रक संजय कुमार के गायब होने से एनएमसीएच बोर्ड ऑफिस का सारा काम ठप है। छात्रों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए बिहार सरकार व स्वास्थ्य मंत्री तेजस्वी यादव से छात्रों का अनुरोध है कि जल्द से जल्द नया परीक्षा नियंत्रक बनाया जाए, जिससे ठप काम चालू हो सके और छात्र का रिजल्ट प्रकाशित जल्द से जल्द किया जा सके। साथ ही अनियमित सेशन को नियमित करने के लिए कुछ आवश्यक कदम उठाया जाए।आज सभी सरकारी मेडिकल कॉलेज और पारा मेडिकल इंस्टिट्यूट के बच्चे स्वास्थ्य मंत्री तेजस्वी यादव से अपनी मांगों को लेकर मिलने की कोशिश किए, लेकिन वहां सुरक्षाकर्मी द्वारा पारा मेडिकल छात्रों को खदेड़ दिया गया। इससे वे अपनी मांग को लेकर स्वास्थ्य मंत्री से नहीं मिल नहीं पाए।

पारा मेडिकल छात्रों की समस्या है कि उनके दो साल के कोर्स को पूरा करने में पांच साल लग जाता है। अभी पिछले साल नवंबर में एग्जाम हुआ था। चार महीने बीत जाने के बाद अब तक रिजल्ट नहीं प्रकाशित किया गया है। पारा मेडिकल छात्रों को राज्य सरकार द्वारा स्वीकृत 1500 रुपया प्रतिमाह पैड इंटर्नशिप अभी तक नहीं दिया जा रहा है। पारा मेडिकल काउंसिल नहीं होने के कारण छात्र दूसरे राज्य में नौकरी नहीं कर पा रहे हैं। लैब तकनीशियन, ओटी असिस्टेंट, एक्स-रे तकनीशियन आदि की वेकेंसी समय पर नहीं आती है और जो वेकेंसी आई है, उसको पूरा करने में दो साल का समय लग जाता है। अभी तक उसका काउंसलिंग की प्रक्रिया शुरू नहीं की गई है।विदित हो कि एक मार्च को परीक्षा नियंत्रक डॉ संजय कुमार लापता हो गए थे। उनकी जगह दूसरे परीक्षा नियंत्रक का अब तक नियुक्ति नहीं किया गया है। इसके कारण एनएमसीएच बोर्ड ऑफिस में सारा काम ठप और अभी तक रिजल्ट प्रकाशित और एग्जाम आदि नहीं हो पा रहा है। 2018-20 बैच के छात्र शुभम कुमार ने बताया कि उसकादो साल के कोर्स को पांच साल हो जाने के बाद भी पूरा नहीं हो पाया है। 2020-22 बैच के छात्र रजनीश झा और सत्यम कुमार ने बताया कि अबतक उनसबों का फर्स्ट ईयर का परीक्षा परिणाम नही आया है, जबकि तीन साल हो गया। 2021 बैच के छात्र अभी तक फर्स्ट ईयर का परीक्षा का इंतजार कर रहे है। इधर वैशाली जिला के राजापाकर में आज से अनिशितकालीन धरना-प्रदर्शन छात्रों के द्वारा दिया जा रहा है। ट्यूटयर, डिमांस्ट्रेटर, लैक्चर, स्टाइपेंड्स, प्रैक्टिकल, सही समय पर परीक्षा हो। इन सब मुद्दो को लेकर हड़ताल जारी है।

# समाजसेवी व उद्यमी मनोज कमलिया को दी श्रद्धांजलि

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

युवा उद्यमी वरिष्ठ समाजसेवी और पाटलिपुत्र जनसेवा संस्थान के भूतपूर्व महासचिव स्व मनोज कमलिया की 21वीं पुण्यतिथि धर्मशाला गली स्थित खंडेलिया विवाह भवन में मनाई गई। सोमवार को संस्थान के परिसर में पूर्व महासचिव स्व कमलिया की आदमकद प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें भावभीनी श्रृद्धांजलि अर्पित की गई। साथ ही उनके द्वारा किए गए कार्यों पर आए हुए अतिथियों ने प्रकाश डाला और कहा कि उनके मन में समाज के प्रति सेवा भाव के साथ गरीबों की मदद के लिए वह हमेशा तैयार रहते थे। उन्होंने कम आयु में समाज ही नहीं, बल्कि शहर में अपनी पहचान बनाई थी। इस अवसर पर दो मिनट का मौन रख उन्हें श्रद्धांजलि दी गई।लोगों ने शपथ लिया कि उनके आदर्शों पर चल कर उनके द्वारा किए गए कार्य को बढ़ाना है।

श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में आदर्श अग्रवाल, मनोज झुनझुनवाला, गणेश शर्मा, रवि रस्तोगी, संजीव देवड़ा, ललित अग्रवाल, संजय यादव, प्रभु दयाल अग्रवाल आदि उपस्थित थे। वहीं दूसरी ओर मारवाड़ी सेवा समिति के श्री गुरु गोविंद सिंह पथ स्थित कार्यालय में भी स्व मनोज कमलिया की पुण्यतिथि मनाई गई। अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष संजीव देवड़ा ने की। इस अवसर पर एक मिनट का मौन रख उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई और राज्य सरकार और जिला प्रशासन से मांग की गई कि मंगल तालाब स्थित मनोज कमलिया स्टेडियम में एक आदमकद प्रतिमा लगाई जाए।

इस अवसर पर राजकुमार गोयनका, सुभाष पोद्दार, राहुल अग्रवाल, अनूप पोद्दार, सन्नी साह और पप्पू मोदी उपस्थित थे। चार्ल्स डार्विन इंग्लिश स्कूल में भी नरेंद्र मिश्रा की अध्यक्षता में स्व मनोज कमलिया को श्रद्धांजलि दी गई शिक्षकों छात्र छात्राओं में रखकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

# ईद पर विधि-व्यवस्था होगी पुख्ता : एसडीओ

## सोशल मीडिया पर रहेगी पैनी नजर, गलत अफवाह फैलाने वालों पर कार्रवाई

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

ईद का त्योहार मिल-जुल कर मनाने और विधि-व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग देने को लेकर सोमवार को एसडीओ गुंजन सिंह की अध्यक्षता में अनुमंडलीय शांति समिति की बैठक हुई। गुलजारबाग स्टेडियम में हुई बैठक में एसडीओ ने त्योहार को लेकर की गयी प्रशासनिक तैयारियों से सदस्यों को बताने का काम किया। इसमें कहा गया कि त्योहार के दौरान मजिस्ट्रेट और पुलिस पदाधिकारी को संवेदनशील स्थान पर तैनात किया जाएगा।

विधि-व्यवस्था बनाए रखने के लिए चिह्नत संवदेनशील स्थान पर थानाध्यक्ष को कड़ी चौकसी का आदेश दिया गया है। खानकाहों व मस्जिदों के पास सफाई के साथ चूना-ब्लीचिंग का छिड़काव कराए जाने का निर्देश दिया गया है। बिजली की अबाध आपूर्ति, भीड़ वाली जगह पर पीने के पानी की व्यवस्था की जाएगी। खासकर सोशल मीडिया पर पूरा ध्यान दिया जाएगा। कारण कि कोई भी गलत सूचना सोशल मीडिया पर प्रसारित होने से विधि-व्यवस्था की समस्या होती है। लोग ऐसा न करें। मीडिया भी इस मामले पर चौकस रहे। फिर भी कोई गलत अफवाह फैलाता है, तो ऐसे लोगों की पहचान कर कार्रवाई की जाएगी। इसके अलावा भी तैयारियों के संबंध में अवगत कराया गया। बैठक में एएसपी शरथ आरएस ने कहा कि पुलिस बल विधि-व्यवस्था में तैनात रहेगी। बैठक में सीओ, बीडीओ, थानाध्यक्ष, नगर निगम व बिजली विभाग के अभियंता के साथ स्वास्थ्य व अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे। शांति समिति के सदस्यों में गोविंद कानोडिया, पार्षद बैजू लाल दास, रामजी योगेश, अंजू सिंह, पूर्व पार्षद धर्मेंद्र प्रसाद मुन्ना, चुन्नू चंद्रवंशी, डॉ राजीव गंगौल, डॉ विनोद अवस्थी, राजेश शुक्ला टिल्लू, गणेश कुमार, हिदायत अहमद, विकास विशाल, रमेश रजक, बाबू भाई, नासिर जाफरी, राजेश गुप्ता, संजय मालाकार, संजय अलबेला, पूनम मेहता, अजय साह आदि उपस्थित थे। सदस्यों ने ईदगाह व खानकाहों के आसपास में विशेष चौकसी बरतने की बात कही।

# वार्षिकोत्सव में कलाकारों को किया सम्मानित

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

तारा इंस्टीट्यूट ऑफ लर्निंग का वार्षिकोत्सव प्रेमचंद रंगशाला में मनाया गया। इसका उद्घाटन निगरानी अन्वेषण ब्यूरो के महानिदेशक आलोक राज ने दीप जला कर किया।

अतिथियों का स्वागत सचिव किरण कुमारी ने प्रतीक चिह्न देकर की। आयोजन में विशिष्ट अतिथि के तौर पर पद्मश्री श्याम शर्मा एवं संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली के सदस्य आशीष कुमार मिश्र थे। इस दौरान संगीत एवं नृत्य में कलाकारों को रसमंजरी कला सम्मान, 23 से सम्मानित किया गया। सम्मानित होने वालों में मनोरंजन ओझा को लोक गायन सह संगीत निर्देशन, पंडित अर्जुन कुमार चौधरी को नाल, तबला वादन, म्यूजिक कंपोजर, सुदीपा घोष को भरतनाट्यम, डॉ पल्लवी विश्वास को शास्त्रीय गायन सह कत्थक नृत्य, लोक गायन में भरत सिंह भारती,

शास्त्रीय व सुगम संगीत में अशोक कुमार प्रसाद, तबला में डॉ श्याम मोहन, शास्त्रीय लोक गायन में डॉ रंजना कुमारी झा, ढोलक पर विजय कुमार चौबे, बांसुरी पर मो सरफुद्दीन, तबला पर चरणजीत सिंह, कत्थक अंजुला कुमारी और लोक गायन में गोविंद बल्लभ को सम्मानित किया गया। शिक्षकों में कत्थक नृत्य के लिए कुमार कृष्ण किशोर, तबला के लिए रविंद्र कुमार मिश्र, पश्चिमी नृत्य में अमन श्रीवास्तव, कुशल प्रबंधन में निरुपमा कुमारी और सुजीत कुमार सिंथेसाइजर के लिए सम्मानित किया गया। इस दौरान बच्चों ने प्रस्तुति से समा बांध दिया। धन्यवाद ज्ञापन अजीत कुमार सिन्हा ने किया।

# बिहार की पृष्ठभूमि पर बनी हिंदी फिल्म 'बेरा- एक अघोड़ी' : राजू भारती

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। धिराल एंटरटेनमेंट के बैनर तले बनी हॉरर हिन्दी फीचर फिल्म "बेरा - एक अघोड़ी" आगामी 28 अप्रैल को अखिल भारतीय स्तर पर प्रदर्शित होगी। इस बात की जानकारी फिल्म के निमार्ता राजू भारती ने पटना राजधानी के एक निजी होटल में एक प्रेसवार्ता किया गया। उन्होने बताया कि फिल्म बेरा-एक अघोड़ी के लेखक हैं शक्तिवीर धिराल और निर्देशक हैं प्रेम धिराल। राजू भारती ने बताया की मूलतः हॉरर विषयक फिल्म "बेरा - एक अघोड़ी" में सिर्फ डरावने दृश्य ही नहीं हैं, बल्कि रोचक और लुभावने किस्से भी हैं। इसमें रहस्य, रोमांच के समानांतर रोमांस का तड़का भी है, जो नौजवानों को खूब पसंद आयेगा। उन्होने बताया कि इन सारे इंद्रधनुषी दृश्यों को आपके समक्ष जीवंत रूप में दिखायेंगे अभिनेता शक्ति धिराल, प्रेम धिराल और प्राजक्ता शिंदे।

फिल्म निमार्ता राजू भारती ने बताया कि फिल्म में संगीतकार जोड़ी प्रेम-शक्ति ने कर्णप्रिय संगीत दिया है। नक्काश अजीज, शाहिद माल्या और वैशाली द्वारा गाये गीतों के लोकप्रिय होने की उम्मीद है। फिल्म के डीओपी रोशन खड़गी हैं। ऑडियो लैब मीडिया कॉर्पोरेशन द्वारा प्रदर्शित होने जा रही हॉरर फिल्म "बेरा - एक अघोड़ी" 28 अप्रैल 2023 से सिनेमाघरों में दिखाई जायेगी। फिल्म के निर्देशक और अभिनेता प्रेम धिराल ने बताया कि फिल्म बेरा एक अघोड़ी, तंत्र मंत्र की दुनिया से दूर एक साफ सुथरी हॉरर, रहस्य रोमांच से लबरेज होने के साथ रोमांस से भी भरपूर है। निर्देशक ने फिल्म के बारे में बताया कि यह फिल्म एक ऐसी सुंदरी की कहानी है जो अपने दो प्रेमियों शक्ति और प्रेम को अपनी अंगुली पर नचाती है और स्वयं मोहित हो कर दोनों के मध्य पेंडुलम बन जाती है, जो काफी रोमांचक होगा। फिल्म अभिनेता शक्ति धिराल ने बताया कि फिल्म 'बेरा - एक अघोड़ी' एक नयी सोच वाली नये जमाने और नये मिजाज की फिल्म है, इसको यंगस्टर्स खूब एंज्वॉय करेंगे। फिल्म की अभिनेत्री प्रजक्ता शिन्दे ने बताया कि फिल्म में उनकी भूमिका एक ऐसी लड़की की है, जो पहले अपने दो प्रेमियों को अपने प्रेम जाल में फंसा कर अपनी उंगलियों पर नचाती है और फिर दोनो के बीच खुद फंस जाती है। उन्होने बताया कि पटना के बारे में जितना सुना था उससे ज्यादा कहीं देखने-सुनने को मिला। यहां का लिटी चोखा , बिहारी बातचीत का ढंग और यहां के संस्कार और इमारतें अपनी ओर बहुत आकर्षित करती है।

# भाजपा ने कुशवाहा को केंद्र में नही दिया हिस्सा

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। बिहार प्रदेश कुशवाहा राजनैतिक चेतना मंच की बैठक पोलो रोड पटना स्थित मंत्री जयंत राज के आवास पर सम्पन्न हुई । जिसमें चेतना मंच के संगठन को राज्य, जिला एवं प्रखंड स्तर तक संगठन का विस्तार कर पार्टी को मजबूत करने का निर्णय लिया गया। भाजपा ने कुशवाहा समाज के किसी भी व्यक्ति को केन्द्र में मंत्री न बनाकर समाज को ठगने का कार्य किया है। ऐसे लोगों से समाज को सचेत रहने की आवश्यकता है। बैठक में मुख्य रूप से प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा, मंत्री जयंत राज, सांसद संतोष कुशवाहा, सांसद सुनील कुमार, विधायक जीव कुमार, विधायक सुधांशु शेखर, पूर्व सांसद अश्वमेघ देवी, पूर्व मंत्री रामसेवक सिंह, मनोज कुशवाहा, भगवान सिंह कुशवाहा, मंजु वर्मा, वीरेन्द्र कुशवाहा, पूर्व विधायक अभय कुशवाहा, अशोक सिंह, सत्यदेव कुशवाहा, विरेन्द्र सिंह दांगी, संतोष कुशवाहा, नन्द किशोर कुशवाहा, वासुदेव कुशवाहा, धीरज कुशवाहा, अरुण कुशवाहा, शक्ति सिंह शोला, रामबाबू कुशवाहा, शत्रुघ्न कुशवाहा, राम किशोर वर्मा, अजय कुशवाहा, ब्रिजेश कुशवाहा, बबन सिंह कुशवाहा, बबन कुशवाहा, राजकिशोर कुशवाहा, दिलिप कुशवाहा, अजय कुशवाहा, कविन्द्र कुशवाहा, वीणा कुशवाहा, कुंडल वर्मा, पूनम कुशवाहा, राजेश कुशवाहा, कौशल किशोर कुशवाहा, राजेश कुशवाहा, दीनानाथ क्रांति, चंदन कुशवाहा, संजय कुशवाहा, ललन कुशवाहा, अरविन्द कुमार ज्योति, समेत प्रमुख नेतागण उपस्थित रहें ।

# आरपीएफ के हत्थे चढ़ा मोबाइल चोर

प्रात : किरण संवाददाता

दानापुर खगोल । रविवार की रात आरपीएफ की टीम ने अपराधिक गस्ती के दौरान फुलवारी शरीफ स्टेशन पर रात को अपराधी गतिविधि की रोकथाम के लिए प्लेटफार्म का विशेष्य चेकिंग करते हुए उसी दौरान एक व्यक्ति ने फरक्का एक्सप्रेस जो मेन लाइन पर सिंगल ना होने के कारण खड़ी थी उसी ट्रेन से मोबाइल चोरी कर भाग रहा था यात्री द्वारा चोर चोर हल्ला किया गया हम लोगों ने देर न करते हुए उस व्यक्ति को पकड़ लिया गया उसके पास से मोबाइल बरामद किया गया।

उसी समय मोबाइल मालिक का फोन आया तो उनके द्वारा मोबाइल चोरी होने की बात बताएं गिरफ्तार चोर फुलवारी शरीफ एकता क्लब राष्ट्रीय गंज का रहने वाला 22 वर्षीय राजूराम है। पुलिस ने गिरफ्तार चोर के पास से चोरी का एक मोबाइल फोन भी बरामद है। जानकारी के मुताबिक रविवार की देर शाम फुलवारी शरीफ स्टेशन पर अपराधी गतिविधि की रोकथाम के लिए विशेष चेकिंग चलाते हुए इसी क्रम में एक व्यक्ति को फरक्का एक्सप्रेस ट्रेन जो मेन लाइन पर खड़ी थी व्यक्ति

मोबाइल फोन पर हाथ साफ कर दिया। इस चोरी के घटना के बाद कुछ यात्रियो ने हल्ला करने लगे आरपीएफ के द्वारा चोर को धर दबोचा। वही मौके पर मौजूद आरपीएफ उप निरीक्षक विमल कुमार प्रधान आरक्षी शैलेश कुमार ओझा आरक्षी रंजीत कुमार सिंह फुलवारी शरीफ कैंपिंग स्टाफ आरक्षी रविंद्र पाल आरक्षी राजेश रोशन एक चोर को चोरी के मोबाइल के साथ रंगे हाथ गिरफ्तार किया गया पटना जीआरपी पुलिस के हवाले कर दिया। गया है।

# मंत्री ने दिव्यांगों के बीच बैट्री चालित ट्राई साइकिल किया वितरित

प्रात : किरण संवाददाता

फतुहा। सोमवार को मनरेगा सभागार भवन में दिव्यांगजन सशक्तीकरण कोषांग, पटना के सौजन्य से दिव्यांगों के लिए आयातित बैट्री चालित ट्राई साइकिल का वितरण भूतत्त्व एवं खनन मंत्री डॉ. रामानंद यादव के हाथों किया गया। लोगों की उपस्थिति में करीब 25 दिव्यांगों को साइकिल की चाबी दी गई। इन्होंने बताया कि अन्य बचे हुए दिव्यांगों के लिए भी शीघ्र ही साइकिल का वितरण किया जाएगा। मौके पर बीडीओ धर्मवीर कुमार, सीओ अनिता भारती, राजस्व पदाधिकारी पल्लवी मिश्रा सहित कई अधिकारी मौजूद रहे। बैट्री चालित ट्राई साइकिल मिलने पर दिव्यांगों ने खुशी जाहिर किया।

# नोपानी ने राधे श्याम परिवार को दिया चार आक्सीजन सिलिंडर

प्रात : किरण संवाददाता

पटना सिटी (प्राकि)। राधे श्याम परिवार की सामाजिक और धार्मिक गतिविधियां बढ़ती जा रही हैं। अब तो संस्था ने लोगों को स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में भी लोगों को एलोपैथ और होम्योपैथ चिकित्सक की सेवा उपलब्ध कराई जा रही है। यह सब

सेवा को देखते हुए वरीय समाजसेवी हमारे अभिभावक श्री कमल नोपानी ने राधे श्याम परिवार सेवा संस्थान को चारआक्सीजन सिलिंडर प्रदान किया है। यह शोभा गुप्ता, चक्रेश अग्रवाल, पंकज लोयलका, सीमा शर्मा, सरोज जायसवाल आदि मौजूद थे। इसके बाद संस्थान के द्वारा एक आक्सीजन सिलिंडर की सेवा जरूरतमंद मरीज को दी गई। उज्जवल चौधरी एवं आनंद कमलिया ने रात में मरीज के घर जाकर आक्सीजन सिलिंडर पहुंचाया।

# दो सप्ताह में फामेर्सी काउंसिल रजिस्ट्रेशन करे या आवेदन स्वीकार करे : कोर्ट

प्रात :किरण संवाददाता

लगभग एक साल से भी अधिक से बिहार राज्य फामेर्सी काउंसिल में फामेर्सी छात्रों का रजिस्ट्रेशन का काम नहीं हो रहा था। इससे फामेर्सी छात्र काफी दिनों से परेशान थे। अंततः सभी जगह से थक-हार कर कुल 33 लोग मिल कर पटना उच्च न्यायालय के समक्ष याचिका दायर किया।

मुख्य याचिकाकर्ता चंचल कुमार (सदस्य) बिहार डिप्लोमा फार्मासिस्ट ऑर्गनाइजेशन छात्र संघ की याचिका पर सुनवाई करते हुए पटना उच्च न्यायालय की एकल पीठ न्यायमूर्ति राजीव रंजन प्रसाद के द्वारा यह न्याय निर्णय दिया गया कि राज्य सरकार के द्वारा जनहित याचिका की सुनवाई के दौरान माननीय खंडपीठ के समक्ष शपथ पत्र दायर किया गया था कि फामेर्सी काउंसिल सुचारु रूप से संचालित करने के लिए राज्य औषधि नियंत्रक, बिहार को निबंधक के पद पर एवं निदेशक प्रमुख, स्वास्थ्य सेवाएं, बिहार को अध्यक्ष पद पर बिहार राज्य फामेर्सी काउंसिल में नामित किया जाता है। लेकिन निबंधक और अध्यक्ष के द्वारा रजिस्ट्रेशन का कार्य शुरू नहीं किया गया और उन्होंने कोर्ट को गुमराह किया।

इसी बीच बिहार तकनीकी सेवा आयोग के द्वारा 1539 पदों पर फार्मासिस्टों का विज्ञापन प्रकाशित किया गया है। इसमें डिप्लोमा फार्मासिस्टों का काउंसिल में रजिस्ट्रेशन होना अनिवार्य है और ऐसा नहीं होने के कारण सभी डिप्लोमा फामेर्सी छात्र आवेदन नहीं कर पा रहे थे।

# पालीगंज में बीडीसी की बैठक का किया बहिष्कार

पालीगंज। सोमवार को जन प्रतिनिधियों ने प्रखण्ड कार्यालय परिसर में आयोजित बीडीसी की बैठक का सामूहिक रूप से बहिष्कार कर दिया। जानकारी के अनुसार सोमवार को पालीगंज प्रखण्ड कार्यालय में बीडीसी की बैठक आयोजित की गयी थी। जिसमे कुछ पदाधिकारियो को नही पहुंचने के कारण जन प्रतिनिधियों ने बैठक का बहिष्कार कर दिया। वही जन प्रतिनिधियों ने बताया कि पूर्व की बैठक में जन प्रतिनिधियों द्वारा दिये गए प्रस्ताव पर किसी भी तरह का सकारात्मक कार्यवाई नही किया जो काफी निंदनीय है। वही उन जनप्रतिनिधियों ने मांग किया है कि बैठक की नई तिथि निर्धारित किया जाए व उस बैठक में सम्बंधित सभी पदाधिकारियो की उपस्थिति सुनिश्चित किया जाए। मौके पर मुखिया संघ के प्रखण्ड अध्यक्ष आनन्द यादव, प्रमुख अनीशा कुमारी सहित अन्य जनप्रतिनिधि मौजूद थे।

## झूठे मुकदमे में 14 साल बाद आया फैसला, सत्यमेव जयते : शाहनवाज

# पूर्व मंत्री शाहनवाज हुसैन, ई. शैलेंद्र समेत 4 अदालत से बरी

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

● मामला 2009 के लोकसभा चुनाव के दौरान का है।

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता और बिहार के पूर्व उद्योग मंत्री शाहनवाज हुसैन को अदालत से बड़ी राहत मिली है। एक झूठे मुकदमे में बीजेपी नेता शाहनवाज हुसैन, बिहपुर विधायक इंजीनियर शैलेंद्र समेत चार को अदालत ने बाइज्जत बरी कर दिया है और इनके खिलाफ दर्ज मुकदमे को भी अदालत ने झूठा करार दिया है। पूर्व मंत्री शाहनवाज हुसैन और विधायक ई. शैलेंद्र के साथ जो दो अन्य बरी हुए हैं, उनमें से एक हैं मंटू कुमार मोदी जो कि दिव्यांग हैं और दूसरे का नाम है व्यास मिश्र। दोनों बिहपुर के झंडापुर के निवासी हैं। मामला 2009 के लोकसभा चुनाव के दौरान का है। चुनाव में मजिस्ट्रेट की ड्यूटी कर रहे तत्कालीन प्रखंड विकास पदाधिकारी अरशद फिरोज ने 15 मार्च 2009 को नवगछिया के झंडापुर में पेट्रोल पंप के पास स्थित एक पान की दुकान में शाहनवाज हुसैन और विधायक इंजीनियर शैलेंद्र की तस्वीरों का पोस्टर टंगे होने का केस दर्ज कराया था। आदर्श आचार संहिता उल्लंघन के इस मामले में पूर्व मंत्री शाहनवाज हुसैन और विधायक ई. शैलेंद्र के साथ पान दुकानदार-दिव्यांग मंटू कुमार मोदी और व्यास मिश्र को भी आरोपी बनाया गया। सोमवार को भागलपुर एसीजेएम एक की कोर्ट के द्वारा राहत का फैसला सुनाए जाने पर शाहनवाज हुसैन के वकील भोला मंडल ने खुशी जाहिर की है। शाहनवाज हुसैन के वकील भोला मंडल ने कहा कि काफी देर से इंसाफ मिला है लेकिन बड़ी राहत महसूस हो रही है कि इस मामले के सभी आरोपी अदालत के द्वारा बरी कर दिए गए हैं। वकील भोला मंडल ने कहा कि अदालत ने केस को पूरी तरह झूठा माना है । सैयद शाहनवाज हुसैन के वकील ने कहा कि करीब 14 साल चले इस झूठे मुकदमे की वजह से हमारे मुवक्किल को धन, समय की बबार्दी का नुकसान झेलने के साथ अनावश्यक मानसिक परेशानी भी हुई। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता और बिहार के पूर्व उद्योग मंत्री सैयद शाहनवाज हुसैन ने अदालत के फैसले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा है - सत्यमेव जयते । सत्य की जीत होती है ।बिहपुर के भारतीय जनता पार्टी के विधायक इंजीनियर शैलेंद्र ने कहा है कि सत्य परेशान हो सकता है लेकिन पराजित नहीं।

## अंबेडकर परिचर्चा में जुटे राजद के दिग्गज, मनुस्मृति बनाम संविधान विषय पर हुई चर्चा

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

● प्रदेश कार्यालय में तीन दिवसीय अम्बेडकर परिचर्चा शुरू

राजद के प्रदेश कार्यालय में सोमवार को पार्टी का तीन दिवसीय अम्बेडकर परिचर्चा की शुरूआत हुई। जिसमें राज्य के लगभग एक सौ प्रतिभागी के साथ हीं पार्टी के वरिष्ठ नेता भाग ले रहे हैं। परिचर्चा कुल 6 सत्रों में होगा। प्रति दिन दो-दो सत्र होंगे जिसमें अलग-अलग विषयों पर चर्चा होगी। प्रथम दिन पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव भोला यादव ने परिचर्चा के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए विषय प्रवेश कराया। आज के दो सत्रों में बाबा साहेब का जीवन एवं दर्शन एवं मनुस्मृति बनाम संविधान विषय पर चर्चा हुई। सोमवार के सत्र को उदय नारायण चौधरी, जयप्रकाश नारायण यादव, श्याम रजक, मंत्री प्रो. चन्द्रशेखर, वृषण पटेल, सुरेश पासवान, चित्तरंजन गगन, मुजफ्फर हुसैन राही , एज्या यादव , ऋतु जायसवाल एवं ई. संतोष यादव ने सम्बोधित किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष शिवानंद तिवारी, राष्ट्रीय महासचिव बीनु यादव, मंत्री डॉ शमिम, मंत्री सुरेन्द्र राम, पूर्व मंत्री शिवचन्द्र राम , पूर्व सांसद सरफराज अहमद, अनिल सहनी, अर्जुन यादव , विधायक शक्ति सिंह यादव, प्रो. रामबली सिंह चन्द्रवंशी,मुकेश रौशन, संजय गुप्ता,सुदय यादव, रणविजय साहू ,विजय सम्राट, राजेश कुमार सिंह,मंजू अग्रवाल, सतीश दास , मुन्नी रजक , फतेह बहादुर सिंह, निरंजन राय , रामवृक्ष सदा , राजेश कुमार गुप्ता, चन्द्रहास चौपाल, पूर्व विधायक राजेन्द्र कुमार राम , केदार गुप्ता, अनिल यादव, समता देवी, आजाद गांधी, रामविलास पासवान , सीताराम यादव, रामावतार पासवान, सहित देवकुमार चौरसिया, गौतम कृष्ण, सारिका पासवान, उर्मिला ठाकुर , अरविन्द सहनी , सिपाही लाल महतो,शोभा कुशवाहा, राजेश यादव, मुकुंद सिंह , नन्दु यादव, प्रमोद राम , निर्भय अम्बेडकर, मधु मंजरी के अलावा कई अन्य विधायक, पूर्व विधायक और पार्टी नेता उपस्थित थे। राजद प्रवक्ता ने बताया कि कल दूसरे दिन मनुस्मृति-वर्ण व्यवस्था पर बाबा साहेब अम्बेडकर के विचार एवं लालू जी के सरकार में दलितों एवं वंचितों के लिए दिये गये संवैधानिक अधिकारों पर केन्द्र सरकार के द्वारा हमला पर चर्चा होगी। तीसरे दिन प्रश्नावली उत्तर का सत्र होगा और वरिष्ठ नेताओं का सम्बोधन होगा। आज के सम्बोधन में वक्ताओं द्वारा बाबा साहेब के जीवन एवं दर्शन पर विस्तार से चर्चा हुई। इसके साथ हीं सुनियोजित तरीके से देश के संवैधानिक व्यवस्था के स्थान पर मनुस्मृति की व्यवस्था लागू करने की हो रहे साजिश को रेखांकित किया गया।

## महागठबंधन में कोई नीति,सिद्धांत नहीं : सम्राट

● कहा- सरकार को पुलिस के हाथ को खुला छोड़ना चाहिए

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी ने सोमवार को कई मुद्दों को लेकर राज्य सरकार पर जमकर हमला बोला है। शिक्षक नियुक्ति मामले पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर कटाक्ष करते हुए भाजपा नेता ने कहा कि जो बिना परीक्षा दिए सरकार बदल लेते हैं, वह शिक्षक नियुक्ति के लिए फिर से परीक्षा की बात कर रहे है, जबकि शिक्षक नियुक्ति के लिए ये अभ्यर्थी तीन परीक्षा पास कर लिए हैं। भाजपा प्रदेश कार्यालय में आयोजित सहयोग कार्यक्रम में भाग लेने के बाद सम्राट चौधरी ने पत्रकारों से चर्चा करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सदन में शराबबंदी कानून को लेकर सर्वदलीय बैठक बुलाने की बात किए थे, लेकिन कोई बैठक नहीं बुलाई। कहा कि पूर्वी चंपारण में जहरीली शराब से 30 से अधिक लोगों की मौत हो गई है, लेकिन अब तक मात्र छोटे अधिकारियों पर कार्रवाई की खानापूर्ति की गई। उन्होंने कहा कि इसके लिए पुलिस महानिदेशक, गृह सचिव और मुख्य सचिव पर कार्रवाई क्यों नहीं की गई। भाजपा नेता ने कहा कि बिहार में 2006 के बाद जहरीली शराब से हजारों लोगों की मौत हो गई। सरकार तो केवल आंकड़ा छिपाने का काम कर रही है। उन्होंने कहा कि रविवार को विपक्ष के नेता विजय कुमार सिन्हा पीड़ित परिजनों से मिलने मोतिहारी गए थे और मंगलवार को पूर्व केंद्रीय मंत्री और सांसद राधामोहन सिंह के नेतृत्व में भाजपा कार्यकर्ता मोतिहारी में धरना पर भी बैठने वाले हैं। बिहार में शिक्षक नियुक्ति की नई नियमावली को लेकर सरकार को आडे हाथों लेते हुए श्री चौधरी ने कहा कि बिहार लोक सेवा आयोग को 2 लाख शिक्षक नियुक्ति में 10 वर्ष लग जाएंगें। पत्रकारों के एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार ने अतीक हत्याकांड में न्यायिक आयोग का गठन किया है और आयोग की रिपोर्ट आते ही दोषी लोगों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। जाति आधारित जनगणना पर कहा कि हमलोगों ने भी इसका समर्थन किया। श्री चौधरी ने महागठबंधन के जुडे एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने सवालिया लहजे में कहा कि महागठबंधन में कोई नीति, कोई सिद्धांत ही नहीं है। उन्होंने कहा कि वहां कोई भ्रष्टाचारी है तो कोई पलटीमार है। घटक दल के नेता अपनी ही सरकार पर सवाल उठाते रहते हैं।

## जहरीली शराब से हुई मौत पर 4 लाख रु. मुआवजा की घोषणा स्वागतयोग्य : माले

● शराबबंदी कानून के तहत जेलों में बंद गरीबों को रिहा कर पुनर्वास कराया जाए

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

भाकपा-माले राज्य सचिव कुणाल ने जहरीली शराब से हुई मौत पर बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा आज 4 लाख रु. मुआवजे की घोषणा का स्वागत किया है। मुख्यमंत्री ने आज कहा कि यदि पीड़ित परिवार फिर से शराब नहीं पीने की शपथ लेते हैं, तो उन्हें यह मुआवजा दिया जाएगा। भाकपा-माले लंबे समय से मुआवजे की मांग करती रही है क्योंकि जहरीली शराब की चपेट में अधिकांश गरीब-गुरबे ही आते हैं। उन्होंने आगे कहा कि इसके साथ-साथ सरकार को शराब माफिया पर कार्रवाई करनी चाहिए और अवैध तरीके से फल-फूल रहे शराब के अवैध कारोबार पर कारगर नियंत्रण स्थापित करना चाहिए। शराब माफियाओं के साथ पुलिस-प्रशासन की मिलीभगत के भी उदाहरण मिलते रहते हैं। अभी हाल ही में मोतिहारी में जहरीली शराब से हुई मौतों में यही तथ्य उभरकर सामने आए। सुगौली प्रखंड के कई गांवों में लंबे समय से शराब के अवैध कारोबार चल रहे हैं जिसमें बड़े लोगों की संलिप्तता रहती है, लेकिन शराब माफिया चारे के बतौर गरीबों का इस्तेमाल करते हैं। सुगौली में हमारी पार्टी की जांच टीम का कहना है कि शराब माफियाओं की भाजपा के स्थानीय सांसद व विधायकों से भी घनिष्ठ रिश्ते हैं। इसकी जांच होनी चाहिए। हम बिहार सरकार से यह भी मांग करते हैं कि शराबबंदी कानून के तहत जेलों में बंद गरीबों को अविलंब रिहा किया जाए और सरकारी स्तर पर उनके पुनर्वास की व्यवस्था की जाए। इस कानून के तहत लाखों की संख्या में लोग जेलों में बंद हैं। उन्हें अपराधी की तरह नहीं देखा जाए। साथ ही, शराब की लत छुड़वाने के लिए प्रखंड स्तर पर कारगर नशा मुक्ति केंद्र की भी स्थापना की जाए।

## शराबबंदी नीति की सोशल ऑडिटिंग होनी चाहिए : निखिल

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

भाजपा ओबीसी मोर्चा के राष्ट्रीय महामंत्री एवं बिहार भाजपा प्रवक्ता डॉ निखिल आनंद ने राज्य सरकार व राजद पर हमला बोला है। भाजपा प्रवक्ता ने कहा है कि आरजेडी हमेशा बाहुबली सफेदपोशों को संरक्षित कर आगे बढ़ाने की राजनीति करती रही है। कांग्रेस जिस प्रकार ओसामा बिन लादेन, दाऊद इब्राहिम और शाहीन बाग के अपराधियों को सम्मान देती रही है। राजद भी तस्लीमुद्दीन- शहाबुद्दीन जैसे लोगों को प्रश्रय देती रही है। अतीक अहमद को लेकर उपमुख्यमंत्री के बयान पर भी निखिल ने तंज कसा है। कहा है कि ।इस तरह की भाषा से राजद- जदयू- काँग्रेस के लोग मुसलमानों को संदेश देकर वोट बैंक के लिए एकजुट रखना चाहते हैं। वहीं, उन्होंने आगे कहा कि बिहार सरकार की शराबबंदी की नीति पूरी तरह से फेल है, जहरीली शराब से मौतों का सिलसिला रुकने का नाम नहीं ले रहा है ।शराबबंदी की नीति की सोशल ऑडिटिंग होनी चाहिए और एक जुडिशियल कमेटी गठित कर सरकार को शराबबंदी नीति की विफलता और अब तक हुई मौतों पर श्वेत पत्र जारी करना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि बिहार में चल रहे 50 हजार करोड रुपए के अवैध शराब और ड्रग्स के कारोबार का पैसा किसकी जेब में जा रहा है? साथ ही भाजपा प्रवक्ता ने कहा कि उत्तर प्रदेश पर प्रवचन देने से पहले अपने गिरेबान में झांकना चाहिए और बिहार की कानून व्यवस्था को ठीक करना चाहिए।

## धूमधाम से मनाएगी दानवीर भामा शाह की 525वीं जयंती

● राज्यपाल होंगे मुख्य अतिथि, मुख्यमंत्री भी हो सकते हैं शामिल

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

आगामी 23 अप्रैल को रविंद्र भवन में होने वाले दानवीर शुरवीर भामाशाह की 525 वीं जयंती सह सम्मान समारोह के उपलक्ष्य में सोमवार कोर्ि बहार वैश्य महासभा द्वारा एक बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महासभा के अध्यक्ष डॉ आनंद कुमार ने बताया कि 23 अप्रैल को एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया जाना तय है उक्त कार्यक्रम में वैश्य समाज के तमाम विधायक, मेयर, उप मेयर, सभापति, वार्ड सदस्य आदि को सम्मानित किया जाएगा। साथ ही चिकित्सा, उद्योग, साहित्य, आदि क्षेत्रों में उत्कृष्ट सफलता अर्जित करने वाले वैसे विभूतियों का भी अभिनंदन होगा। इस अवसर पर वैश्य समाज की गरीब महिलाएं, जो व्यवसाय करना चाहती है, उसे आर्थिक एवं तकनीकी सहायता/सहयोग किया जाएगा, ताकि वे आत्मनिर्भर हो सके। कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में बिहार के राज्यपाल राजेन्द्र अर्लेकर भी मौजूद रहेंगे। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के शामिल होने की भी संभावना है। महासभा के महासचिव दिलीप कुमार गुप्ता ने कहा कि उक्त उद्योग मंत्री समीर महासेठ एवं वैश्य समाज के सभी विधायकों, सांसदों को सादर आमंत्रित किया गया है। वैश्य महासभा के उपाध्यक्ष डॉ अमित केसरी ने कहा कि भामाशाह जयंती का मुख्य उद्देश्य है वैश्य समाज के सामान्य, पिछड़ा वर्ग तथा अति पिछड़ा वर्ग में बंटे वैश्य समाज की 56 जातियों को एक करना,ताकि बिहार में उसकी संख्या के अनुपात में उन्हें राजनीतिक भागीदारी मिल सके इस कार्यक्रम में उपस्थित महिला अध्यक्ष कांति केसरी, सत्यनारायण केसरी, दीन दयाल सिंह अग्रहरि, अभय देव आर्य, योगेंद्र प्रसाद गुप्ता, डॉ आशुतोष आग्रहारी, के एम अग्रवाल, गणेश कानू , संजय कुमार, बिनोद कुमार गुप्ता,संतोष कुमार गुप्ता, सुरज कुमार गुप्ता, राधे गुप्ता, बिना मानवी, कोमल बरनवाल रीता जैन, रेनू गुप्ता, नीतू कुमारी, रीमा रौनक, ममता कुमारी, प्रेरणा गुप्ता, सुनीता गुप्ता, आरती बरनवाल, श्वेता गुप्ता इत्यादि मौजूद रहे।

## गरीबों को नशे की आग में झोंकना चाहती है भाजपा : राजीव

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

भाजपा को निशाने पर लेते हुए जदयू के राष्ट्रीय महासचिव व प्रवक्ता जहरीली शराब से किसी भी व्यक्ति की असामयिक मृत्यु होना यकीनन दुखद है, लेकिन इसके आड़ में भाजपा जिस तरह से अपनी राजनीति चमकाना चाह रही है उसकी जितनी निंदा की जाए कम होगी। उन्होंने कहा कि शराबबंदी कानून सर्वदलीय फैसले के तहत लागू किया गया था, जिसमें भाजपा भी शामिल थी। लेकिन सत्ता से बेदखल किये जाने के बाद से यह शराबबंदी के पक्ष में ली हुई अपनी कसम को भी भूल गये हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा के नेता मीडिया के सामने शराबबंदी के पक्ष में खड़े रहने का दावा करते हैं, वहीं दूसरी तरफ इनका एक भी काम इनके समर्थन में नहीं रहता। दरअसल भाजपा के नेता शराबबंदी खत्म करवा गरीबों को फिर से नशे की आग में झोंकना चाहती है। जिससे इन्हें वोटों की खेती करने में आसानी हो। जदयू महसचिव ने कहा कि भाजपा को समझना चाहिए कि शराब एक सामाजिक कुरीति है, शराबबंदी कानून इसी के खात्मे के लिए लाया गया है। बिहार का भला चाहने वाला हर कोई इसमें सहयोग करेगा। लेकिन शराबियों को हतोत्साहित करने के बजाए भाजपा के कई नेता इस कानून को शिथिल करने की मांग कर उलटे उन्हें शराब पीने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। भाजपा को बताना चाहिए कि भाजपा विधायकों और सांसदों ने अपने स्तर से शराब के खिलाफ आज तक कितने जागरूकता कार्यक्रम चलाये हैं? वह बताये कि उनके संगठन ने आज तक कितने शराब माफियाओं को पकड़वाने में पुलिस की मदद की है? भाजपा को चुनौती देते हुए उन्होंने कहा कि शराबबंदी पर ओछी राजनीति करने से बेहतर है कि भाजपा विधानसभा में लिखित तौर पर इसे समाप्त करने की मांग करे। उन्होंने कहा कि लोग अच्छे से जानते हैं कि शराबबंदी होने से सबसे अधिक फायदा महिलाओं और गरीबों को ही हुआ है। इससे जहां महिलाओं के खिलाफ होने वाली घरेलू हिंसा में अभूतपूर्व कमी आ गयी वहीं गरीबों के पास पैसे बचने लगे हैं।

## योगी राज के महाजंगलराज पर खामोश हैं बिहार भाजपा के बयानवीर : उमेश कुशवाहा

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने बिहार भाजपा के नेताओं पर निशाना साधते हुए कहा कि जंगलराज का राग अलापने वाले भाजपा के बयानवीर और बड़बोले नेताओं को उत्तरप्रदेश में मौजूदा कानून-व्यवस्था के हालातों पर अपनी चुप्पी तोड़ना चाहिए। भाजपा शासित उत्तरप्रदेश आज देशभर में अपराध और महाजंगलराज का पर्याय बन चुका है लेकिन भाजपाई उत्तरप्रदेश प्रकरण पर बिल्कुल खामोश हैं। आगे उन्होंने कहा कि उत्तरप्रदेश में कानून का राज खत्म हो चुका है। पुलिस की मौजूदगी में कड़ी सुरक्षा के बीच अंधाधुंध गोलीबारी से दो लोगों की हत्या सरकार की विफलता और अकर्मण्यता का एक जीवंत उदारहण है। किसी भी प्रदेश की शासन-व्यवस्था के लिए यह भयावह और चिंताजनक स्थिति है। इस घटना के बाद अब यह स्पष्ट तौर पर सिद्ध होता है कि उत्तरप्रदेश के अपराधियों के अंदर से प्रशासन का भय समाप्त हो चुका है। श्री कुशवाहा ने आरोप लगाते हुए कहा कि भाजपा दोहरी नीति पर चलती है। भाजपा शासित राज्य में किसी भी आपराधिक घटनाओं पर ये लोग पूरी तरह से चुप्पी साध लेते हैं जबकि अन्य राज्यों में मामूली विवाद को जंगल राज की संज्ञा से परिभाषित करने लगते हैं। अपराध के प्रति इनका दोहरा मापदंड जनता भलीभांति समझ रही है। बिहार भाजपा के बड़बोलेपन से ग्रसित नेताओं को उत्तरप्रदेश की असलियत दिखाई नहीं देती है। उन्होंने कहा कि उत्तरप्रदेश की सरकार न्याययिक प्रक्रियाओं को धता बताते हुएं अपने हिसाब से न्यायाधीश की भूमिका निभा रही है। सरकार के संरक्षण में खुलेआम सवैंधानिक मूल्यों की धज्जियां उड़ाई जा रही है। किसी भी लोकतांत्रिक राष्ट्र में इस तरह की घटनाओं को कोई स्थान नहीं है। केंद्र सरकार उत्तरप्रदेश के मौजूदा हालात पर गम्भीरता से संज्ञान लेना चाहिए। उत्तरप्रदेश की सरकार गुंडाराज की नीति पर चल रही है। भाजपा पोषित माफियाओं को खुली छूट मिली हुई है जबकि सरकार एकतरफा करवाई के जरिए एक खास वोटबैंक को खुश रखना चाहती है।

## आदित्य कुमार प्रदेश कांग्रेस सेवादल यंग ब्रिगेड का प्रदेश अध्यक्ष मनोनीत

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

अखिल भारतीय कांग्रेस सेवादल के मुख्य संगठक लालजी देसाई ने आदित्य कुमार पासवान को बिहार प्रदेश कांग्रेस सेवादल यंग ब्रिगेड का अध्यक्ष मनोनीत किया है। कांग्रेस सेवादल के बिहार प्रभारी मो अफरोज खान के अनुशंसा पर अखिल भारतीय कांग्रेस सेवादल के अध्यक्ष श्री लालजी देसाई ने आदित्य कुमार पासवान को सेवादल के यंग ब्रिगेड का अध्यक्ष बनाया है। श्री आदित्य कुमार पासवान के नियुक्ति से बिहार यंग ब्रिगेड सेवादल एक नयी उँचाई पर पहुंचेगा और कांग्रेस पार्टी को मजबूती मिलेगी। प्रदेश कांग्रेस के नेता ी राज किशोर सिंह, प्रदेश कांग्रेस सेवादल के कार्यकारी मुख्य संगठक डा संजय कुमार, सेवादल के कार्यालय प्रभारी विपिन झा ने सेवादल के यंग ब्रिगेड के प्रदेश अध्यक्ष पद पर आदित्य कुमार पासवान को बनाये जाने पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की है।

## 51 जोड़ों का सामूहिक विवाह 25 जून को महाराणा प्रताप भवन में

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

माँ वैष्णो देवी सेवा समिति के द्वारा कोविड के कारण स्थगित सामूहिक विवाह कार्यक्रम को फिर से इस वर्ष 51 जोड़ों का सामूहिक विवाह 25 जून रविवार को पटना में करवाया जायेगा। समिति के आलोक आजाद ने बताया की वैसे जोड़े जो विवाह के लिए तैयार हैं परन्तु स्थान और आर्थिक तंगी के कारण उनकी शादी नहीं हो पा रही है, उन सभी जोड़ों को समिति ने एक जगह देने का प्रयास इस सामुहिक विवाह के माध्यम से किया है।इस विवाह समारोह में सभी रीती रिवाजों के साथ यह अनोखा विवाह आगामी 25 जून रविवार को पटना में सम्पन्न होगा। इस अवसर पर समिति द्वारा इन नव विवाहित जोड़ों को गृहस्थी आरम्भ करने की जरूरत की सामग्री भी उपहार स्वरुप प्रदान की जाएगी। इस आदर्श विवाह में समाज के प्रबुद्ध और गणमान्य व्यक्ति नव विवाहित जोड़ों को अपना आशीर्वाद देंगे। आलोक आजाद ने बताया कि शादी के बाद सभी नवविवाहित जोड़ों को मां वैष्णो देवी सेवा समिति की ओर से बतौर उपहार एक साइकिल, एक सिलाई मशीन, एक सेट बर्तन और 15 दिन का राशन भी दिया जाएगा। इस उपहार को देने का हमारा उद्देश्य समाज को आत्मनिर्भर बनाना है। आलोक आजाद ने बताया कि अंतिम चयन के बाद 25 जूल को जोड़ों को पटना के महाराणा प्रताप भवन बुलाया जाएगा। यहां वर पक्ष और वधु पक्ष अपने 10-10 रिश्तेदारों के साथ आएंगे। यहीं से शादी के दिन की सारी रस्में पूरी कर शाम 4 बजे एक साथ 51 दूल्हों की बारात निकाली जाएगी। इस दौरान यहां पर उनके लिए सुबह का नाश्ता, दोपहर का खाना व शादी की रस्मों के लिए अन्य सभी व्यवस्था मां बैष्णो देवी सेवा समिति की ओर से किए जाएंगे। आलोक आजाद ने बताया कि अगर कोई भी ऐसा आर्थिक रूप से कमजोर परिवार है जिन्होंने अपने बेटियों की शादी तय कर दी है या उन्होंने अपने बेटियों के लिए दूल्हा देख लिया है लेकिन पैसे के अभाव में उनकी शादी नहीं हो पा रही है तो वे हम से निःशुल्क फार्म ले कर रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं। रस्ट्रेशन कराने वाले ये जरूर ध्यान रखें कि वर की उम्र कम से कम 21 वर्ष और वधु की उम्र 18 वर्ष होनी चाहिए।उनसे इससे संबंधित प्रमाण-पत्र भी लिया जाएगा। रजिस्ट्रेशन खत्म होने के बाद विभिन्न इलाकों से चयनित जोड़ों को पटना बुलाया जाएगा और वहां उनसे शादी के लिए अंतिम सहमति ली जाएगी। इस दौरान वर और वधु के परिवार वालों से पूछा जाएगा कि दोनों पक्ष यह शादी आपसी सहमति से कर रहे हैं, वहीं वर-वधु की भी सहमति ली जाएगी। अंतिम चयन के बाद 51 वरों को सूट पीस और 51 वधुओं को शगुन की साड़ी दी जाएगी।

## ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान यात्रियों की भीड़ के मद्देनजर अब तक 10 जोड़ी स्पेशल ट्रेनों की घोषणा

# विशाखपट्टणम और बनारस बीच एक जोड़ी समर स्पेशल ट्रेन का होगा परिचालन

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ के मद्देनजर उनकी सुविधा हेतु रेलवे द्वारा कई स्पेशल ट्रेनों का परिचालन करने का निर्णय लिया गया है । इनमें से अब तक 10 जोड़ी स्पेशल ट्रेनों की घोषणा की जा चुकी है । इसी क्रम में रांची-बरकाकाना-गढ़वा रोड- डेहरी ऑन सोन-सासाराम-पं.दीन दयाल उपाध्याय जं. के रास्ते विशाखपट्टणम और बनारस बीच एक जोड़ी स्पेशल ट्रेन 08588/08587 विशाखपट्टणम-बनारस- विशाखपट्टणम समर स्पेशल चलाने का निर्णय लिया गया है । यह स्पेशल विशाखपट्टणम से 19 से 17 मई तक सप्ताह के प्रत्येक बुधवार को तथा बनारस से 20 से 18 मई तक सप्ताह के प्रत्येक गुरूवार को परिचालित की जायेगी । गाड़ी संख्या 08588 विशाखपट्टणम-बनारस समर स्पेशल विशाखपट्टणम से बुधवार को 12.30 बजे खुलकर गुरूवार को 02.55 बजे रांची, 05.30 बजे बरकाकाना, 07.30 बजे लातेहार, 08.30 बजे डालटनगंज, 09.25 बजे गढ़वा रोड, 11.20 बजे डेहरी ऑन सोन, 11.38 बजे सासाराम, 12.10 बजे भभुआ रोड, 13.30 बजे पं. दीन दयाल उपाध्याय जं रूकते हुए 16.30 बजे बनारस पहुंचेगी । वापसी में, गाड़ी संख्या 08587 बनारस-विशाखपट्टणम समर स्पेशल बनारस से गुरूवार को 18.00 बजे खुलकर 19.00 बजे पं. दीन दयाल उपाध्याय जं., 20.00 बजे भभुआ रोड, 20.45 बजे सासाराम, 21.05 बजे डेहरी ऑन सोन, 23.15 बजे गढ़वा रोड एवं 23.55 बजे डालटनगंज रूकते हुए शुक्रवार को 20.30 बजे विशाखपट्टणम पहुंचेगी । यह स्पेशल बनारस और विशाखपट्टणम के बीच वाराणसी, पं. दीन दयाल उपाध्याय जं., भभुआ रोड, सासाराम, डेहरी ऑन सोन, गढ़वा रोड, डालटनगंज, लातेहार, बरकाकाना, मूरी, रांची, हटिया, राउरकेला, झारसुगुड़ा, सम्बलपुर, बरगढ़ रोड, बलांगीर, टिटिलागढ़, केसिंगा, मुनिगुडा, रायगडा, पार्वतीपुरम, बोब्बिलि जं., विजयनगरम, कोतवलसा एवं सिम्हाचलम स्टेशनों पर रूकेगी । इस स्पेशल ट्रेन में द्वितीय वातानुकूलित श्रेणी का 01, तृतीय वातानुकूलित श्रेणी के 03, शयनयान श्रेणी के 12 एवं साधारण श्रेणी के 02 कोच होंगे ।

## अंबेडकर जयंती के उपलक्ष्य में पूर्व मध्य रेल मुख्यालय में समारोह का आयोजन

पटना। भारत रत्न बाबा साहेब डा भीमराव अंबेडकर की 132वीं जयंती के उपलक्ष्य में पूर्व मध्य रेल मुख्यालय हाजीपुर में सोमवार को वैशाली रेल प्रेक्षागृह में भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पूर्व मध्य रेल के महाप्रबंधक अनुपम शर्मा ने बाबा साहेब के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धापूर्वक नमन किया । कार्यक्रम में पूमरे के प्रधान विभागाध्यक्षों व उच्चाधिकारियों सहित, यूनियन, एस.एसटी.एशोसिएशन के पदाधिकारियों द्वारा भी बाबा साहेब के चित्र पर पुष्पांजलि एवं माल्यार्पण किया गया। इस अवसर पर बाबा साहेब के जीवनी पर आधारित एक नाटक का भी मंचन किया गया जिसे उपस्थित अधिकारियों एवं रेलकर्मियों द्वारा काफी सराहा गया ।

## जहरीली शराब लोगों की जिंदगी के लिए बन गया नासूर : पप्पू

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जन अधिकार पार्टी के प्रमुख पप्पू यादव जहरीली शराब से मौत की घटना के पीड़ित लोगों से मिले। इस क्रम में उन्होंने कहा कि जहरीली शराब आम लोगों की जिंदगी के लिए नासूर बन गया है। यह शर्मनाक भी है कि शराबबंदी वाले राज्य में लगातार लोग जहरीली शराब पीकर मर रहे हैं। शराबबंदी अच्छे नियत से की गई थी, लेकिन नियति समय पर उसकी समीक्षा किए बैगर इस बंदी को जारी रखने से प्रदेश की जनता और प्रदेश के राजस्व को हानि हुआ। नतीजा सबके सामने है। रोज लोग शराब ही पीकर मर रहे हैं और शराबबंदी से विकास के हजार करोड़ रुपये का घटा हुआ। सो अलग। और शराब धड़ल्ले से बिक रही है और इसी के आधार पर ड्रग्स का भी कारोबार पनप गया है। आज हम एक बार फिर से शराबबंदी में जहरीली शराब से मौत की घटना के पीड़ित लोगों से मुलाकात को पूर्वी चंपारण के तुरकौलिया गए, जहां दर्जनों लोग काल के गाल में समा गए। हमने सबों के परिजनों से मुलाकात की और 10 परिवार को पार्टी की ओर से तत्काल 10-10 हजार रुपये की आर्थिक मदद भी की। हम सरकार से मांग करते हैं कि शराब पर 70 प्रतिशत टैक्स लगे और यह सुनिश्चित हो कि शराब गाँव और पंचायत में उपलब्ध ना हो। साथ ही 25 वर्ष से कम उम्र के लोगों को शराब ना मिले, इसके लिए आधार कार्ड की सहायता ली जा सकती है। हम प्रदेश के सभी राजनीतिक दलों और सरकार से आग्रह करेंगे कि वे इस पर विचार करें।

## सांसद रामकृपाल ने 551 लाख की लागत से बनी सड़क का किया उद्घाटन

पटना। पूर्व केंद्रीय राज्यमंत्री और भाजपा सांसद रामकृपाल यादव ने नौबतपुर प्रखंड में प्रधानमंत्री सड़क योजना के तहत 551 लाख की लागत से बनी 6.90 किमी लंबाई की कैब्रिज स्कूल से नौबतपुर भाया अकबरपुर सड़क का उद्घाटन किया। इस अवसर पर पूर्व विधायक अनिल शर्मा, बिक्रम के पूर्व प्रत्याशी अतुल कुमार, मंटू शर्मा, रजनीश कुमार, अखिलेश सिंह, बिपिन यादव, गुड़िया तिवारी, मंडल अध्यक्ष अरुणंजय कुमार, मनीष कुमार, ललित यादव सहित कई लोग उपस्थित थे।

## संक्षिप्त खबरें

### अगलगी की घटना में चार घर जलकर राख

समस्तीपुर जिले के उजियारपुर प्रखंड के नाजिरपुर पंचायत के वार्ड 6 में सोमवार को हुई आगलगी की घटना में 4 घर जल गए। इसमें हजारों रुपए का नुकसान हो गया। बताया गया है कि दोपहर के समय अचानक से घर में आग लग गई। लोग जब तक कुछ समझ पाते देखते ही देखते आग ने चार घर को अपने जद में ले लिया। आनन फानन में लोग आग पर काबू पाने की कोशिश में जुट गए। बाद मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड की टीम ने आग पर काबू पाया। हालांकि घटना में किसी प्रकार के जान माल का नुकसान होना नहीं बताया गया है। इसमें विनय पोद्दार के पुत्र श्रवण पोद्दार, दीपक पोद्दार व मुकेश पोद्दार एंव शंकर पासवान के पुत्र अशोक पासवान का घर जल गया। जानकारी के अनुसार आगे पक्के मकान होने की वजह से आग आगे नहीं फैल पाई। घटना का कारण बिजली का शोर्ट-सर्किट होना बताया गया है। इधर आरओ पल्लवी कुमारी ने जानकारी देते हुए बताया कि सूचना मिलते ही राजस्वकर्मी को जांच में भेज दिया गया है।

### युवक का शव पहुंचते ही गांव में मचा कोहराम

कल्याणपुर, समस्तीपुर। कल्याणपुर थाना क्षेत्र के लदोरा गांव में सोमवार की सुबह मृतक युवक का शव पुणे से पहुंचते ही गांव में कोहराम मच गया। मृतक युवक की पहचान लदौरा गांव निवासी व हरिनंदन महतो के 28 वर्षीय पुत्र भोला कुमार के रूप में हुई है। वह पुणे में होटल में मजदूरी का करता था। अचानक शनिवार की सुबह उसकी मौत हो गई। मौत के कारण का पता नहीं चल पाया है। युवक की मौत की खबर उसके घर पहुंचते ही परिवार सहित गांव में कोहराम मच गया। हालांकि स्थानीय मुखिया विनोद दास पूर्व मुखिया अनामिका देवी मृतक के परिजनों को सांत्वना देने में लगे हुए थे।

### खालीसपुर चौर में खरही-इकड़ी में लगी आग

सरायरंजन, समस्तीपुर। सरायरंजन थाना क्षेत्र के खालीसपुर चौर में किसान अनिल कुमार सिंह के खरही -इकड़ी में अचानक आग लग गया। आग लगने से करीब एक बीघा में लगे खरही जलकर राख हो गया। आग लगने की सूचना पर पहुंचे दमकल की गाड़ी और ग्रामीणों की मदद से किसी तरह ग पर काबू पाया गया। इस अगलगी में करीब एक लाख से अधिक का नुकसान बताया गया है

### अभद्र व्यवहार करने व छिनतई की प्राथमिकी दर्ज

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर थाना क्षेत्र के पटवारा वार्ड 4 निवासी जय नारायण महतो की पत्नी ललिता देवी ने अभद्र व्यवहार करने व छिनतई की प्राथमिकी दर्ज करवाई है। जिसमें गांव के ही अर्जुन महतो को नामजद किया है। दर्ज प्राथमिकी के माध्यम से पीड़ित ने बताई की 8 दिसंबर को हम अपने दरवाजे के पास सड़क पर खड़ी थी। तभी उपर्युक्त नामित मुझे जबरन खींच कर ले जाने लगा। शोर मचाने पर गर्दन से मंगलसूत्र एवं तीन जितिया शंकर फरार हो गया।

### मारपीट की प्राथमिकी दर्ज

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर थाना क्षेत्र के मुस्तफापुर वार्ड 10 निवासी गेना पासवान के पुत्र जगत पासवान ने मारपीट की प्राथमिकी दर्ज करवाई है। जिसमें गांव के ही विष्णु देव पासवान, बिजली पासवान, शंकर पासवान, लालो पासवान, श्रीराम पासवान, हरिओम पासवान, सिकंदर पासवान, बिरजू पासवान को नामजद किया है। दर्ज प्राथमिकी के माध्यम से पीड़ित ने बताया कि मैं 11 अप्रैल को महिरवाना चौर से मजदूरी कर वापस घर आ रहा था। तभी उपयुक्त नामित सभी जान मारने की नियत से हरवे हथियार से लैस होकर घेर लिया एवं जानलेवा हमला कर जख्मी कर दिया।

### सदाकत आश्रम में दावत ए इफ्तार 19 को

पटना। बिहार प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह आगामी 19 अप्रैल को सदाकत आश्रम स्थित पार्टी कार्यालय में दावत -ए- इफ्तार देंगे। प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में आयोजित दावत ए इफ्तार में महागठबंधन के शीर्ष नेताओं सहित बड़े नेताओं को आमंत्रित किया गया है । इस आशय की जानकारी बिहार प्रदेश कांग्रेस मीडिया कमेटी के चेयरमैन राजेश राठौड़ ने दी। उन्होंने कहा कि दावत ए इफ्तार से अमन-चैन बढ़ता है ।उन्होंने कहा कि देश में सांप्रदायिकत ताकतें सौहार्दपूर्ण वातावरण में जहर घोलने का काम कर रही है ।ऐसे मौके में कांग्रेस पार्टी दावत ए इफ्तार के माध्यम से समाज में आपसी भाईचारे के माहौल को मजबूत बनाने में लगी है।

# नई शिक्षक नियमावली के विरोध में शिक्षकों ने किया जातीय जनगणना का बहिष्कार

सिंघिया, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार सरकार द्वारा हाल में लाई गई नई शिक्षक (अध्यापक नियुक्ति) नियमावली के बाद प्रदेश के शिक्षक संगठनों द्वारा लगातार इसका विरोध हो रहा है। शिक्षक संगठनों ने बैठक कर शिक्षक नियुक्ति नियमावली के खिलाफ 15 अप्रैल को सभी प्रखंडों में एक दिवसीय धरना देने के उपरांत बिहार में हो रहे जातीय जनगणना से खुद को अलग रखते हुए, इसके बहिष्कार का निर्णय लिया है। इसी कड़ी में संयुक्त शिक्षक संघर्ष मोर्चा प्रखंड इकाई सिंघिया के त्वावधान में कृष्ण कुमार सिंह की नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मंडल द्वारा प्रखंड विकास पदाधिकारी सिंघिया को सोमवार को पत्र सौंप कर अपना विरोध जताते हुए, सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि बिहार राज्य शिक्षक संयुक्त मोर्चा द्वारा लिए गए निर्णय के आलोक में प्रकाशित नई शिक्षक नियमावली 2023 के विरोध में जातीय जनगणना का बहिष्कार करते हुए खुद को इससे अलग रखने का निर्णय लिया गया है। इस बाबत जानकारी देते हुए संघ के अध्यक्ष कृष्ण कुमार सिंह ने बताया कि विगत कई महीने से सरकार द्वारा राज्य कर्मी का दर्जा, जिला संवर्ग में समायोजन, अंतर्जिला स्थानांतरण एवं आकर्षक वेतनमान आदि का आश्वासन दिया जा रहा था। लेकिन नई नियमावली में पूर्व से कार्यरत शिक्षकों को कोई लाभ नहीं देकर अपमानित किया गया। अतः तत्काल चल रहे जातीय आधारित जनगणना का सभी शिक्षक बहिष्कार कर नई सेवा-शर्त का विरोध करेंगे। अगर इससे भी सरकार नहीं मानती है तो चरणबद्ध आंदोलन जारी रहेगा। मौके पर सीताराम गिरी, मनोज कुमार सिंह, नवीन साफी, मनोज साफी, रामबालक पासवान, सुनील कुमार कमती, राजीव कुमार, लालेश्वर माझी अनिल यादव सहित दर्जनों शिक्षक मौजूद रहें।

## 20 सदस्यीय विद्यालय मीना मंच गठित

प्रात : किरण संवाददाता

सरायरंजन, समस्तीपुर। सरायरंजन प्रखंड के उत्क्रमित मध्य विद्यालय गंगापुर गोपालपुर में सोमवार को 20 सदस्यीय मीना मंच का सर्वसम्मति से गठन किया गया। इनमें अंजनी कुमारी मीना मंत्री एवं रिया राय को मीना सचिव बनाया गया। इसके अलावा 18 छात्रा मीना प्रेरक बनाई गई। इनमें चाहत कुमारी, श्रेया कुमारी प्रियांशु कुमारी, सुहानी कुमारी, अंजली कुमारी, खुशी कुमारी, करिश्मा कुमारी, चांदनी कुमारी, आश्मीन खातून, लाडली खातून, पूनम कुमारी, नेहा कुमारी आदि के नाम शामिल हैं। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाध्याप मनोज कुमार राम ने बताया कि मीना मंच के गठन से लड़कियों में नेतृत्व क्षमता एवं सहयोग की भावना विकसित होती है। साथ ही लड़कियों के व्यक्तित्व में भी निखार आता है। मौके पर सुगमकर्ता शिक्षिका सोनाली चौधरी, नयन तारा, फरदीन नाज, बलदेव राय, विनोद कुमार, चन्नू सादा आदि मौजूद रहे।

## ईद को लेकर कल्याणपुर थाने में शांति समिति की बैठक आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

कल्याणपुर, समस्तीपुर। कल्याणपुर थाना परिसर में सोमवार को आगामी ईद को लेकर शांति समिति की बैठक हुआं। जिसकी अध्यक्षता थानाध्यक्ष गौतम कुमार ने किया। वहीं लोगों को शांतिपूर्ण भाई चारे के साथ सौहार्दपूर्ण माहौल में ईद का पर्व मनाने का अपील लोगों से किया गया। मोके पर सीओ कमलेश कुमार, उप प्रमुख दीपक राय, पूर्व प्रमुख इफ्तेखार अहमद, मुखिया गोपाल राजेश कुमार, विनोद दास, राधा देवी, मुखिया प्रतिनिधि आशीष पटेल, पूर्व मुखिया रजन चौधरी, सरपंच लालबाबू राय, हरिचंद चौधरी, राम नरेश राय सभी राजनीतिक दल के अध्यक्ष मोईन अहमद खां मो० मोनाजीर और कल्याणपुर थाने से सजय कुमार, संगीत कुमारी, मुकेश सिंह व अन्य जनप्रतिनिधि मौजूद थे।

## राज्यपाल के समस्तीपुर आगमन पर सांसद ने किया आभार प्रकट, जिले के बारे में कराया अवगत

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर जिले के रोसड़ा प्रखंड के स्वरूप नगर बटहा स्थित सुंदरी देवी सरस्वती विद्या मंदिर सैनिक स्कूल में आयोजित रजत जयंती समारोह में बिहार के राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ अर्लेकर का समस्तीपुर सांसद प्रिंस राज ने रालोजपा कार्यकताओं के साथ अभिवादन व स्वागत किया।

राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ अर्लेकर से कुशल-क्षेम पूछते हुए सांसद प्रिंस राज ने उन्हें समस्तीपुर जिले के बारे में अवगत कराया। उन्होंने कहा कि उनके समस्तीपुर आगमन जिलेवासी अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि ऐसा मौका बार-बार नहीं आता और उनके समस्तीपुर पहुंचने से जिले का मान बढ़ा है। जिसके लिए संपूर्ण जिले वासियों की तरफ से वह उनका आभार प्रकट करते हैं।

उन्होंने बताया कि हसनपुर प्रखंड समस्तीपुर जिले के रोसरा अनुमंडल क्षेत्र अंतर्गत आता है। सांसद प्रिंस राज ने इस दौरान राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ अर्लेकर से रालोजपा जिलाध्यक्ष विनय कुमार चौधरी के साथ आये कार्यकताओं की मुलाकात और परिचय करवायी। मौके पर जिला प्रधान महासचिव नीरज भारद्वाज, सचिन कुमार, मनोज कुमार, विनय सिंह, राकेश सिंह, ऋषि सिंह, राजेश झा, रीना सहनी, मो० कुरुशी, सहित अन्य रालोजपा कार्यकर्ता उपस्थित थे।

## दूसरे चरण की जाति आधारित गणना कार्य का नियोजित शिक्षक करेंगे बहिष्कार

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

संयुक्त शिक्षक संघर्ष मोर्चा के तत्वाधान में विभूतिपुर में द्वितीय चरण के जाति आधारित गणना कार्य से नियोजित शिक्षक अपने-आप को अलग रहने का निर्णय लिया है। तथा इसकी सूचना प्रखंड चार्ज पदाधिकारी सह प्रखंड विकास पदाधिकारी को देते हुए बताया गया कि नियोजित शिक्षक विगत 20 वर्षो से पंचायती राज एवं नगर निकाय व्यवस्था के अधीन बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने का काम किया है। सत्तारूढ़ दल द्वारा इन शिक्षकों को राज्य कर्मी का दर्जा देने तथा नियोजन इकाई को समाप्त कर जिला संवर्ग में समायोजित करने का आश्वासन दिया जा रहा था। लेकिन राज्य सरकार ह्यबिहार राज्य विद्यालय अध्यापक नियमावली 2023 जारी कर स्पष्ट कर दिया कि नियोजन इकाई पूर्व की भांति प्रभावी रहेगी एवं विद्यालय अध्यापक का एक नया संवर्ग बना दिया गया। जिससे इन शिक्षकों में असंतोष व्याप्त है। राज्य के 25 शिक्षक संगठनों के संयुक्त शिक्षक संघर्ष मोर्चा द्वारा बैठक में जिला स्तरीय संयुक्त शिक्षक संघर्ष मोर्चा के निर्णय के आलोक में प्रखंड स्तरीय शिक्षक संघर्ष मोर्चा द्वितीय चरण के जाति आधारित गणना कार्य से नियोजित शिक्षक पूर्णतः अलग रहने का निर्णय लिया। जिसकी सूचना विभिन्न शिक्षक संगठनों का हस्ताक्षरित आवेदन के साथ चार्ज पदाधिकारी सह प्रखंड विकास पदाधिकारी को दिया गया है।

## ट्रैक्टर के चपेट में आने से बच्चे की मौत

सरायरंजन, प्रात : किरण संवाददाता

सरायरंजन थाना क्षेत्र के नौआचक पंचायत के हरसिंगपुर टांरी दुर्गा स्थान के समीप सोमवार की दोपहर एक अनियंत्रित ट्रैक्टर के चपेट में आने से एक बालक की मौत घटना स्थल पर हीं हो गई। मृतक बालक की पहचान नौआचक पंचायत के हरसिंगपुर टांरा निवासी अब्दुल सलाम उर्फ भोला के 12 वर्षीय पुत्र मो० निजाम के रूप में की गई है। घटना की सूचना पर पहुंचे ग्रमीणों ने रोहित कंपनी का इट लदे ट्रैक्टर को पकड़ लिया है। घटना की सूचना पुलिस को दिया। पुलिस ने पहुंचकर युवक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए समस्तीपुर भेज दिया है। घटना के संबंध में ग्रामीण एवं परिजनों ने बताया कि उक्त युवक इद पर्व को लेकर सरैया पुल चौक से बाल कटाकर साईकिल से घर वापस आ रहा था। इसी दौरान विपरीत दिशा से इट लदा ट्रैक्टर अनियंत्रित हो गया और बालक को कुचल दिया। जिससे घटना स्थल पर बालक की मौत हो गई।

मौत की खबर सुनते हीं परिजनों में कोहराम मच गया है। मृतक बालक के परिजनों का रोरोकर बुरा हाल देखा जा रहा है। थानाध्यक्ष रविकांत कुमार ने बताया की ईंट लदा ट्रैक्टर से घटना हुई है। शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए तत्काल भेज दिया गया है। घटना की जांच की जा रही है दोषी ट्रैक्टर व चालक पर कार्रवाई की जाएगी। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार नौआचक पंचायत स्थित रोहित भट्ठा से ट्रैक्टर पर ईंट लोड कर भगवतपुर जा रहा था। इसी दौरान घटना घट गई। घटना के बाद घटनास्थल पर ही गाड़ी छोड़ चालक भागने में सफल हो गया।

## पखवाड़ा समारोह के तहत मनायी गई डॉ भीमराव अंबेडकर की जयंती

प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर। समस्तीपुर मण्डल रेल प्रशासन के द्वारा सोमवार को भारत रत्न बाबा साहेब डॉ भीमराव अंबेडकर का 132वीं जयंती पखवाड़ा समारोह के तहत बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। मण्डल रेल प्रबंधक आलोक अग्रवाल ने बाबा साहेब के संघर्षों को याद करते हुए उनके जैसे संघर्ष शील, राष्ट प्रेम और देश के प्रति समर्पित बनने का आह्वान किया। साथ ही संविधान में वर्णित अनुच्छेद एवं धाराओं पर चर्चा की। कार्यक्रम में अपर मण्डल रेल प्रबंधक प्रथम जितेंद्र कुमार सिंह, अपर मण्डल रेल प्रबंधक द्वितीय मनीष शर्मा, ऑल इंडिया एससीएसटी रेलवे एम्प्लाइज एसोसिएशन के मण्डलमंत्री शशि रंजन कुमार, अध्यक्ष अर्जुन कुमार, कोषाध्यक्ष आलोक आनंद, लालबाबू राम, कार्मिक अधिकारी राजीव कुमार, अशुतोष झा, दिलीप पासवान, डॉ नीलेश कुमार, आरएन झा एवं सभी विभागीय अधिकारी एवं अन्य रेल कर्मी उपस्थित थे।

## 10 दिवसीय प्रशिक्षण हेतु विभूतिपुर से गणित की शिक्षक पुणे के लिए हुआ रवाना

प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर प्रखण्ड के जगतारणी उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, खम्हार विगत वर्षों में एक नई पहचान बनाई है। जहाँ एक ओर छात्र छात्राएँ उत्कृष्ट सफलता प्राप्त करते हैं वहीं दूसरी ओर शिक्षक भी अपने क्षेत्र में नया अध्याय जोड़ते हैं। मैट्रिक परीक्षा 2023 में गणित विषय में 100 अंक लाने वाले छात्र के शिक्षक सुरेश कुमार का चयन ह्ल भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, पुणेह्व में दस दिवसीय प्रशिक्षण हेतु हुआ है। वे प्रशिक्षण के लिए रवाना हो गया है। बता दें कि प्रखण्ड के गणित शिक्षक श्री कुमार जिला में अपने समर्पण और तत्परता के लिए प्रसिद्ध हैं। जिला से मात्र एक गणित शिक्षक के रूप में इनके चयन पर विद्यालय परिवार गौरवान्वित है। प्रधानाध्यापक अरूण कुमार ठाकुर, विज्ञान शिक्षक मनोज कुमार साह एवं वरीय शिक्षक अजीत कुमार सिंह ने इन्हें बधाई दी एवं सुखद यात्रा की शुभकामनाएँ देकर विद्यालय से विदा किया।

## सड़क हादसे में युवक की मौत

रोसड़ा, प्रात : किरण संवाददाता

रोसड़ा अनुमंडल के बिथान थाना क्षेत्र में रविवार रात सड़क हादसे में एक युवक की मौत हो गई। मृतक की पहचान रोसड़ा थाना क्षेत्र के भिरहा गांव के वार्ड संख्या-8 निवासी घनश्याम यादव के 18 वर्षीय पुत्र अर्जुन कुमार के रूप में की गई है। घटना की सूचना पर पुलिस ने शव को जब्त कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया, जहां पोस्टमार्टम की प्रक्रिया के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया है। इस घटना के बाद परिवारक सदस्यों के बीच कोहराम मच गया है। घटना जिले के बिथान थाना क्षेत्र के मेदो चौक के पास घटी है। घटना के संबंध में बताया गया कि अर्जुन रात को अपनी फूआ के घर बिथान जा रहा था। इसी दौरान मेदो चौक के पास उसकी बाइक असंतुलित होकर पलट गई। इस घटना में अर्जुन गंभीर रूप से जख्मी हो गया। वहीं, हल्ला होने पर स्थानीय लोंगों की मदद से उसे रोसड़ा अनुमंडीय अस्पताल लाया गया। लेकिन अस्पताल पहुंचने पर डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। लोगों का कहना है उसकी मौत रास्ते में ही हो गई। उधर, इस घटना के बाद अस्पताल में बड़ी संख्या में लोगों की भीड़ जुट गई। बाद में रोसड़ा पुलिस ने शव को जब्त कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस के अनुसार इस मामले में यूडी केस दर्ज किया जा रहा है। दुर्घटनाग्रस्त बाइक को जब्त कर लिया गया है।

## छेड़खानी की विरोध करने पर नाबालिग लड़की को पिस्तौल के बट से मारकर किया जख्मी

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर थाना क्षेत्र के एक गांव में मनचले ने दरवाजे पर पढ़ रही नाबालिग लड़की के साथ छेड़खानी करना शुरू कर दिया। विरोध करने पर पिस्तौल के बट मुंह पर मार कर मुंह का जबरा तोड़ दिया। पीड़ित लड़की की भाई विनोद पासवान के पुत्र अभिनव कुमार ने बताया कि 16 अप्रैल को मैं और मेरा भाई राहुल राज कोचिंग पढ़ने गया था। और मेरी बहन घर पर ही पढ़ रही थी। तभी गांव के ही विशाल कुमार एवं प्रशांत कुमार मेरी नाबालिग बहन की इज्जत लूटने की ख्याल से वहां पहुंचकर छेड़छाड़ करने लगा। जब मेरी बहन विरोध किया तो कमर से पिस्तौल निकालकर पिस्तौल के बट से मुंह पर मारा जिससे मेरी बहन की दांत एवं जबड़ा टूट गया।

फिर दोनों मिलकर पूरे शरीर पर बेहरमी से पिटाई किया। मेरी बहन को चिल्लाने पर मेरी मां शकुंतला देवी बचाने गई तभी विशाल कुमार पुनः पिस्तौल के बट से सिर में मार कर जख्मी कर दिया। तब तक हम दोनों भाई कोचिंग से वापस आए उसी समय दोनों आरोपी के परिवार के सदस्य दिनेश पासवान, दिलीप पासवान, अमन कुमार सभी लोहे की रॉड लेकर आया और मुझ पर हमला कर दिया। मुझे बचाने मेरा भाई दौरा आया उसे भी सिर पर मार कर जख्मी कर दिया। तथा मेरी मां और मेरी बहन के गले से सोने का चेन ले लिया। तथा पूरे परिवार को जान मारने की धमकी देख कर चला गया। ग्रामीणों के सहयोग से मुझे एवं पूरे परिवार पूरे परिवार को विभूतिपुर सीएससी में भर्ती कराया गया। जहां स्थिति गंभीर देखते हुए मुझे एवं मेरी बहन को डॉक्टर ने सदर अस्पताल समस्तीपुर रेफर कर दिया जहां इलाज जारी है। वहीं पीड़ित ने इमरजेंसी वार्ड में नगर थाना के समक्ष फर्द बयान देकर घटना की जानकारी दी है।

## पिकअप लूट कांड का आरोपी गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

शिवाजीनगर, समस्तीपुर। शिवाजीनगर प्रखंड अंतर्गत हथौड़ी थाना क्षेत्र में बीते दिनों हुए पिकअप लूट मामले में पुलिस ने कार्रवाई करते हुए गुप्त सूचना के आधार पर आरोपी सचिन कुमार पिता दुखा मंडल ग्राम सिसई ओपी शिवाजीनगर थाना हथौडी.निवासी को हथौड़ी पुलिस ने कटघारा गाँव से हथौडी.थाना अध्यक्ष विशाल कुमार सिंह, प्रशिक्षु एसआई राहुल कुमार ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। एक और आरोपी फरार चल रहा, जिसको लेकर थानाध्यक्ष ने कहा जल्द होगी उसकी भी गिरफ्तारी कर ली जाएगी।

## 30 लीटर देसी शराब के साथ धंधेबाज गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

शिवाजीनगर, समस्तीपुर। शिवाजीनगर ओपी पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर गनौली गांव में छापेमारी कर 30 लीटर देसी शराब के साथ विपिन कुमार पिता रमेसर मंडल को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है। बिहार में शराबबंदी है व इसे सफल बनाने के लिए लगातार पुलिस के द्वारा कार्रवाई किया जा रहा। शराब कारोबार में संलिप्त लोगों पर लगातार कार्रवाई किया जा रहा। गिरफ्तार आरोपी के खिलाफ बिहार मद्य निषेध अधिनियम के तहत मामला दर्ज करते हुए न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

## रालोजपा के राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में 11सूत्री प्रस्ताव पारित

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक सोमवार को नई दिल्ली के कांस्टीट्यूशन क्लब के स्पीकर हाल में संपन्न हुआ। जिसमे राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री पशुपति कुमार पारस ने विभिन्न प्रदेशों से आए हुए प्रतिनिधियों को संबोधित किया। बैठक में मंच का संचालन विनोद नागर ने किया तथा पार्टी के द्वारा तैयार 11 सूत्री प्रस्तावना को विधान पार्षद भूषण कुमार ने पढ़ा जिसे सभी नेताओं ने तालियों के साथ स्वागत किया। श्री पारस ने अपने पार्टी पदाधिकरी को संबोधित करते हुए कहा कि 2024 में एक बार फिर से दो तिहाई बहुमत से केंद्र में एनडीए की सरकार बनेगी तथा देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में तिबारा एनडीए की सरकार सत्ता में आएगी। आगे श्री पारस ने कहा कि एनडीए से मेरा गठबंधन अटूट है तथा मैं बार-बार कहते आया हूं कि जब तक जीवित रहूंगा एनडीए के साथ मेरा गठबंधन जारी रहेगा। प्रदेश अध्यक्ष व सांसद प्रिंस राज पासवान ने कहा कि 2024 के लोकसभा के चुनाव की तैयारी में सभी लोग अभी से ही जुट जाएं पूरी संकल्प के साथ ईमानदारी के साथ जिला से लेकर प्रखंड पंचायत तथा अपने क्षेत्र के बूथ स्तर तक मजबूती से तैयारी में लग जाए। प्रदेश प्रवक्ता ललन कुमार चंद्रवंशी ने बताया कि बैठक में मुख्य रूप से बिहार प्रदेश अध्यक्ष समस्तीपुर सांसद प्रिंस राज सांसद चौधरी महबूब अली कैसर सांसद बिना देवी चंदन सिंह पूर्व सांसद सूरजभान सिंह, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष वीरेश्वर सिंह, राष्ट्रीय प्रवक्ता संजय सर्राफ, देवजानी मित्रा,राष्ट्रीय महासचिव रामजी सिंह, जियालाल, राष्ट्रीय सचिव मयंक मौली, प्रधान महासचिव केशव सिंह, दलित सेना के प्रधान महासचिव घनश्याम कुमार दाहा, प्रवक्ता मनीष आनंद, चंदन सिंह, छात्र के राष्ट्रीय अध्यक्ष आकाश यादव, युवा प्रदेश अध्यक्ष उपेंद्र यादव, महिला प्रदेश अध्यक्ष डॉ स्मिता शर्मा, मिंटू यादव, रंजीत पासवान, रंजीत कुमार, तकनीकी सेल के प्रदेश अध्यक्ष राजू राजवीर, सहित कई पदाधिकारी उपस्थित थे।

## हर हर महादेव पुस्तक का लोकार्पण समारोह आयोजित

सरायरंजन, प्रात : किरण संवाददाता

जो अमृत पीये वह देव, और जो संसार की रक्षा करने के लिए जहर पीये, वहीं महादेव होते हैं। उक्त उद्गार व्यक्त किया स्थानीय केएसआर कॉलेज सरायरंजन में, हर हर महादेव, पुस्तक लोकार्पण समारोह को संबोधित करते हुए ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय अन्तर्गत आरबीएस महाविद्यालय अंदौर के हिंदी विभाग के विश्वविद्यालय प्राध्यापक डॉ रवीन्द्र नाथ झा राकेश ने। केएसआर महाविद्यालय के हिंदी विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक प्रो० अवधेश कुमार झा द्वारा भगवान शिव की आराधना वंदना हेतु रचित पुस्तक हर हर महादेव, के लोकार्पण समारोह को संबोधित करते हुए डॉ० राकेश ने स्पष्ट किया कि भगवान शिव, संसार के अनादि महादेव हैं।

महादेव की कृपा से ही, संसार के जीवों को, मनोनुकूल सुख समृद्धि की प्राप्ति होती है। डॉ० रवीन्द्र नाथ झा राकेश, प्राचार्य डॉ० विपिन कुमार झा, प्रो० जनार्दन चौधरी, डॉ० गगन देव चौधरी, प्रो० अनिल कुमार झा, प्रो० मुन्नी कुमारी, डॉ० अनिल कुमार सिंह, प्रो० शेखर प्रसाद चौधरी, प्रो० पवन कुमार चौधरी, प्रो० संजय कुमार सिन्हा, प्रो० इन्दु शेखर पाठक आदि ने संयुक्त रूप से हरहर महादेव पुस्तक का लोकार्पण किया। मौके पर महाविद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षकेतर कर्मी मौजूद थे।

## संक्षिप्त खबरें

### यज्ञ देखने गया युवक हुआ गायब, प्राथमिकी दर्ज

गोपालगंज ।जिले के भोरे थाना क्षेत्र के हुस्सेपुर बाजार निवासी एक युवक बगल में ही हो रहे यज्ञ में शामिल होने गया, जहां से वह वापस घर नहीं लौटा।युवक के दादा रामलगन यादव ने स्थानीय थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई है। बताया जाता है कि थाना क्षेत्र के हुस्सेपुर बाजार निवासी जगन्नाथ यादव का पुत्र विशाल यादव पड़ोस में ही हो रहे यज्ञ में शामिल होने गया था, हालांकि फिर वापस घर नहीं आया।परिजनों द्वारा युवक की काफी खोजबीन की गई, लेकिन युवक का कहीं पता नहीं चला।मामले में पुलिस प्राथमिकी दर्ज कर युवक की खोजबीन कर रही है।

### साइबर अपराधियों ने खाते से निकाले 30 हजार, प्राथमिकी दर्ज

गोपालगंज ।जिले के भोरे थाना क्षेत्र के चकरवा खास गांव के एक युवक के खाते से 30854 की ठगी कर ली गई है। मामले में युवक ने स्थानीय थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई है। बताया जाता है कि थाना क्षेत्र के चकरवा खास गांव निवासी राहुल प्रजापति का खाता सेंट्रल बैंक खजुरहा की शाखा में है। साइबर अपराधियों ने खाते से 30854 की अवैध निकासी कर ली है।मामले में पुलिस प्राथमिकी दर्ज कर साइबर अपराधियों का पता लगाने में जुट गई है।

### महिला को मारपीट कर किया जख्मी

गोपालगंज। जिले के बरौली थाना क्षेत्र के सलोना गांव में एक महिला को आपसी विवाद में मारपीट कर जख्मी कर दिया गया।जख्मी महिला धुपति देवी बताई गई है। आसपास के लोगो की मदद से घायल महिला को इलाज के लिये बरौली पीएचसी में भर्ती कराया गया है।इस मामले को लेकर पीड़िता ने विजनन भगत सहित तीन लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई है।पुलिस प्राथमिकी दर्ज कर मामले की जांच पडताल करने में जुट गयी है।

### दरवाजे पर खडी बाइक उडा ले गये चोर

गोपालगंज ।जिले के बरौली थाना क्षेत्र वाहन चोर गिरोह काफी सक्रिय नजर आ रहा है। थाना क्षेत्र में आय दिन वाहनों की चोरी हो रही है।इसी क्रम में कहला गांव में दरवाजे पर खड़ी एक बाइक को चोर उडा ले गए है।इस मामले में पीड़ित मुन्ना यादव ने अज्ञात चोरों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई है पुलिस मामले की जांच कर रही है।

### बिजली करंट के चपेट में आने से बच्चा झुलसा

गोपालगंज ।जिले के बरौली थाना क्षेत्र के बतरदेह गांव में सोमवार को बिजली करंट के चपेट में आने से एक बच्चा झुलस गया।झुलसा हुआ बच्चा उक्त गांव का संजय भगत बताया गया है।परिजनों ने उसे आनन फानन में बरौली पीएचसी में भर्ती कराया जहां प्राथमिक उपचार के बाद डॉक्टर ने उसकी हालत नाजुक देख बेहतर इलाज के लिये सदर अस्पताल में रेफर कर दिया।जंहा उसकी हालत चिंताजनक बतायी गयी है।

### बैठक में बीईओ ने प्रधानाध्यापकों को दिए अहम निर्देश

गोपालगंज। जिले के भोरे प्रखंड मुख्यालय स्थित मनरेगा भवन के सभागार में प्रखंड के सभी प्रधानाध्यापकों की एक बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी लखेंद्र दास कर रहे थे। बैठक में विद्यालयों में चल रहे नये सत्र में नामांकन को लेकर आवश्यक निर्देश दिया गया। सरकार की ओर से जारी मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन को लेकर सुरक्षित शनिवार की वार्षिक सारणी के बैनर का प्रयोग करने का निर्देश दिया गया।साथ ही इस महीने की अनुपस्थिति विवरणी 24 घंटे के अंदर जमा करने सख्त हिदायत दी गई।बैठक में पूर्व बीआरपी हरिशंकर सिंह, एमडीएम बीआरपी मनोज सिंह, प्रधानाध्यापक अजय राय, ललन पांडेय, उमेश राम, अंजनी सिंह, राजीव मिश्र, दुर्गेश्वर नाथ तिवारी, अनुज कुमार पांडेय, सतीश सिंह, विजय शंकर पांडेय, नंदलाल यादव, शशि प्रकाश सिंह, अरविंद राय, आबिद अली, जयश्री प्रसाद आदि मौजूद रहे।

### शिक्षा के विकास में आमजन की भागीदारी विषयक संगोष्ठी आयोजित

छपरा ।इसुआपुर प्रखंड के सलेमपुर गांव में राज चतुर्गुण विनायक स्मृति दिवस के अवसर पर शिक्षा के विकास में आमजन की भागीदारी विषयक संगोष्ठी आयोजित हुई।जिसमें बच्चों को संस्कार के साथ शिक्षा देने पर बल दिया गया।वही दिवंगत शिक्षक राम विनायक सिंह की पुण्यतिथि पर उन्हें फूल माला चढ़ाकर श्रद्धांजलि दी गई।साथ ही उनके द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में समाज में किए गए योगदान को भी याद किया गया।वहीं दिवंगत शिक्षक के सम्मान में अवकाश प्राप्त शिक्षकों, शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान दे रहे वर्तमान शिक्षकों, सामाजिक कार्यकताओं तथा गणमान्य लोगों को शॉल, स्मृति फलक, तथा पर्यावरण के संरक्षण हेतु पौधे देकर सम्मानित किया गया।वही दिवंगत शिक्षक की याद में सामूहिक रूप से वृक्षारोपण भी किया गया।

# झलक दिखला जा.... हिमेश रेशमिया के गीतों पर झूमा गोपालगंज

## मशरूफ है दिल कितना.. के साथ दो दिवसीय थावे महोत्सव का हुआ समापन, जिला प्रशासन के द्वारा कलाकारों को किया गया सम्मानित

**गोपालगंज प्रात : किरण ब्यूरो**

थावे वाली मां की पावन भूमि पर दो दिवसीय थावे महोत्सव रंगारंग कार्यक्रम का रविवार की रात समापन हो गया। शनिवार को शुरू हुए कार्यक्रम के दूसरे दिन देर रात तक गीत-संगीत का दौर चला। थावे महोत्सव में आए नामचीन कलाकारों ने जिलेवासियों की शाम को गीत-संगीत से आनंदित कर दिया। मंच पर जब बॉलीवुड के जाने माने सिंगर हिमेश रेशमिया पहुंचे तो तालियों की गड़गड़ाहट से थावे का होमगार्ड मैदान गूंज उठा। मंच पर आते ही हिमेश ने गोपालगंज जिले के थावे की पावन भूमि को नमन किया। हिमेश रेशमिया ने झलक दिखला जा गीत से अपने कार्यक्रम की शुरूआत की। इसके बाद ओ हुजुर तेरा शुरूर, तु याद न आए ऐसा कोई दिन नही, आशिक बनाया आपने जैसे कई सुपरहिट गाने गाए तो उपस्थित लोग तालिया बजाते हुए झूम उठे। हिमेश रेशमिया के मसरूफ हूं मै गीत के साथ ही दो दिवसीय थावे महोत्सव का समापन हो गया। हिमेश रेशमिया पहली बार थावे महोत्सव में कार्यक्रम की प्रस्तुति देने पहुंचे थे। लिहाजा उनके फैंस उनकी एक झलक पाने के लिए बेताब दिख रहे थे। हिमेश रेशमिया को देखने व सुनने के लिए गोपालगंज के आसपास जिलो के के अलावे यूपी से भी बडी संख्या में लोग पंहुचे थे। भीड बेकाबू देख हिमेश रेशमिया बीच में ही मंच से उतरकर चले गए। थावे महोत्सव में भीड को देखते हुए सुरक्षा व्यवस्था

को लेकर करीब 350 पुलिस जवानों को कार्यक्रम स्थल पर तैनात किया गया था। इसके अलावा 50 मजिस्ट्रेट व पुलिस पदाधिकारी भी पल-पल की स्थिति पर नजर बनाये हुए थे।

**शिवम सिंह के गीतों पर झूमे श्रोता:** इंडियन आइडल के फाइनलिस्ट शिवम सिंह ने पारंपरिक और भक्ति गीतों की शानदार प्रस्तुति से महोत्सव में शामिल सभी श्रोताओं का दिल जीत लिया। ओ माई रे ...गीत से उन्होंने प्रस्तुति की शुरूआत की। इसके बाद एक से बढकर एक गीत गाकर लोगो का दिल जीत लिया। कार्यक्रम की समाप्ति के उपरांत शिवम सिंह को गोपालगंज जिला प्रशासन की ओर से सम्मानित किया गया।

**स्थानीय कलाकारों ने बिखेरा जलवा:** थावे महोत्सव के दुसरे दिन स्थानीय कलाकारों ने महोत्सव के महफिल में अपनी एक से बढकर एक प्रस्तुती पेश कर लोगो को झुमने पर मजबुर कर दिया।

धनजी कुमार यादव, प्रियांशु ब्याहुत, शुभम कुमार मिश्रा, कोवरी गोयल, आशीष कुमार, अली इमाम, मनीषा कुमारी, विप्रा चैबे, स्नेहा कुशवाहा, संजना गुप्ता लोक अदालत के अधिवक्ता बिपिन बिहारी श्रीवास्तव सहित अन्य स्थानीय कलाकारों के द्वारा एक से बढकर एक प्रस्तुति दी गयी।

**थावे महोत्सव में सुरक्षा के रहे कड़े प्रबंध:** थावे होमगार्ड मैदान में आयोजित थावे महोत्सव को लेकर सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए थे। एसपी स्वर्ण प्रभात के नेतृत्व में पुलिस अपनी पैनी नजर बनाये हुए थी। वही नवागत एसडीपीओ प्रांजल ने योगदान के साथ ही सुरक्षा व्यवस्था की कमान संभाल ली थी। थावे महोत्सव के दौरान पुलिस सुरक्षा के साथ-साथ लोगो की परेशानियों का भी ख्याल रखती नजर आ रही थी। एसपी स्वर्ण प्रभात के अलावा एसडीपीओ प्रांजल, डीएसपी मुख्यालय ज्योति कुमारी, प्रशिक्षु डीएसपी साक्षी राय, नगर इंस्पेक्टर प्रशांत कुमार, सदर इंस्पेक्टर हीरालाल प्रसाद, थावे थानाध्यक्ष शशिरंजन कुमार के अलावे अन्य पुलिस पदाधिकारी पूरी तरह मुस्तैद दिखे।

# जनगणना कार्य का बहिष्कार करने वाले शिक्षकों पर होगी कार्रवाई: डीएम

**गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता**

समाहरणालय के सभाकक्ष में डीएम डॉ. नवल किशोर चैधरी की अध्यक्षता में जिला स्तरीय सभी विभागीय पदाधिकारी की समीक्षा बैठक की गयी। बैठक में डीएम ने सिविल सर्जन एवं डीपीएम को जैपनीज ईंनसेफ्लाइटिस तथा एक्यूट सिंड्रोम के वैक्सीनेशन क्रमशः 97 एवं 95 प्रतिशत प्रखंड वार लक्ष्य प्राप्ति के विरुद्ध उपलब्धि हासिल करने का निर्देश दिया। इसके साथ ही रूबेला वैक्सीनेशन में लक्ष्य के विरुद्ध 97 प्रतिशत उपलब्धि प्राप्त करने का सख्त निर्देश दिया गया। वही आपदा प्रबंधन अंतर्गत बाढ़ एवं सूखा की विस्तृत तैयारी हेतु आवश्यक निर्देश दिया गया। साथ ही आपदा प्रबंधन में अन्य विभागों की महत्वपूर्ण भूमिका को चिन्हित करते हुए शिविर स्थलों, पशु दवा, मानव दवा, पशु चारा, चापाकलों का मरम्मत्ती, विद्युत आपूर्ति एवं विद्युत पोलों की उपलब्धता, पॉलीथिन शीट, नाविकों का निबंधन, नाव की

मरम्मत्ती, सामुदायिक रसोई संचालन इत्यादि के संबंध में पूर्व की भाँति इस बार भी आवश्यक तैयारी पूर्ण करने का निर्देश दिया गया। बैठक में लोक स्वास्थ्य एवं अभियंत्रण विभाग द्वारा स्थापित 26800 कार्यरत चापाकल की सूची प्रखंड विकास पदाधिकारी को भेजने एवं प्रखंड विकास पदाधिकारी द्वारा उसके सत्यापन का निर्देश दिया गया। बैठक के दौरान डीएम ने शिक्षकों को चेतावनी देते हुए कहा कि जिन शिक्षकों के द्वारा जाति जनगणना कार्यो का बहिष्कार किया जाएगा उनके उपर कड़ी कारवाई की जायेगी। इसके लिए जिला शिक्षा पदाधिकारी को निर्देश दिया गया कि विद्यालयों के प्रधानाध्यापक के माध्यम से प्रतिदिन दैनिक कार्य प्रगति का प्रतिवेदन उपलब्ध कराऐं कि किन किन शिक्षकों के द्वारा जाति जनगणना कार्य में अभिरुचि नहीं ली जा रही है। वही विद्यालय अवधि में चलाए जा रहे कोचिंग संस्थानों के विरुद्ध विधि सम्मत कार्रवाई हेतु सदर एसडीएम व हथुआ एसडीएम के साथ-साथ सभी बीडीओ को निर्देश दिया गया कि विद्यालय अवधि में चलाए जा रहे कोचिंग संस्थानों पर छापेमारी कर विधि सम्मत कार्रवाई किया जाए एवं कोचिंग संस्थान के निबंधन एवं उसमें सरकारी शिक्षक के द्वारा शिक्षण कार्य में भाग लेने की जाँच की जाए। इसके साथ ही सभी विभागों के कार्यो की विद्यिवत समीक्षा की गयी और कई निर्देश दिए गए। बैठक में डीडीसी अभिषेक रंजन, अपर समाहर्ता सुनील कुमार सहित सभी जिला स्तरीय पदाधिकारी मौजूद थे। साथ ही प्रखंड स्तरीय पदाधिकारी पदाधिकारी वीसी के माध्यम से उपस्थित रहे।

# अभियान में 181 वारंट के मामलों का किया गया निष्पादन

**प्रात : किरण ब्यूरो**

गोपालगंज। गोपालगंज पुलिस ने विशेष अभियान चलाकर हत्या के प्रयास के चार आरोपित समेत 50 अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार किए गए अभियुक्तों में हत्या के प्रयास के चार, 107 में तीन, 151 में पांच, शराब कांड के मामले में 24, अन्य मामले में नौ तथा 5 वारंटी शामिल है। इसके साथ ही पुलिस ने 293.2 लीटर देशी और 240.33 लीटर विदेशी शराब को जप्त किया है। इस दौरान पुलिस के द्वारा 181 वारंट के मामलो का निष्पादन भी किया गया है। अभियान के दौरान एक कुर्की के मामलों का निष्पादन किया गया। वही वाहन जांच के दौरान पुलिस ने पांच बाइक, एक बोलेरो, एक कार व करीब 764 ग्राम चरस को जप्त करते हुए 1500 रुपएं जुमार्ने के रूप में वसूल किया है। इसकी जानकारी एसपी स्वर्ण प्रभात ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर दी। उन्होने बताया कि पुलिस का यह अभियान आगे भी जारी रहेगा। पुलिस के द्वारा लगातार चलाये जा रहे अभियान से शराब तस्करों के बीच भय व्याप्त है। वही पुलिस वारंट के मामलों का भी तेजी से निष्पादन करने में जुटी हुयी है। पुलिस के इस अभियान की लोग जमकर सराहना कर रहे है।

# लोकतंत्र को नष्ट करने का प्रयास कर रही है केंद्र सरकार: गुंजन

**गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता**

जिला कांग्रेस कमिटी के तत्वाधान में एक दिवसीय जय भारत सत्याग्रह संपन्न हुआ। सत्याग्रह कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष इफ्तेखार हैदर ने की। सभा में मुख्य अतिथि बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी के सदस्य सह जिला प्रभारी गुंजन पटेल थे। मंच संचालन जिला उपाध्यक्ष ओम प्रकाश दुबे ने किया।

सभा को संबोधित करते हुए गुंजन पटेल ने कहा कि मोदी सरकार में देश का संविधान खतरे में है। इस सरकार लोकतंत्र को नष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है। विपक्ष की आवाज दबाने लिए ईडी, आईटी, सीबीआई का सरकारी मशीनरी की तरह इस्तेमाल किया जा रहा है। देश की मुख्य समस्या से ध्यान भटकाने

के लिए धार्मिक विद्वेष फैलाया जा रहा है। वही पूर्व एमएलसी प्रत्याशी ओमप्रकाश गर्ग ने कहा कि राहुल गांधी की सदस्यता समाप्त कर लोकतंत्र की हत्या का प्रयास किया गया है। जिसे जनता कभी सहन नही करेगी। सत्याग्रह में मुख्य रूप से रविंद्र नाथ सिंह, सेवादल के पूर्व अध्यक्ष प्रींतनस हक, हथुआ विधान सभा के पूर्व प्रत्याशी मोहन लाल सिंह, लोक सभा के पूर्व प्रत्याशी राम कुमार मांझी, ताहिर हुसैन, सुरेंद्र राम, उमा शंकर कुंवर, देवेंद्र पांडे, रेयाज अहमद, जटा शंकर सिंह, सुरेंद्र कुमार, दीपक शर्मा, रविशंकर चैबे, दिनेश मांझी, जुल्फिकार अली भुट्टो, सिकंदर अली, जाकिर हुसैन, अब्दुल कलाम, समीर आलम, जय प्रकाश सिंह, शकील अख्तर सहित अन्य शामिल थे।

### श्रीपुर में टेंपू से भारी मात्रा में विदेशी शराब जप्त, दो तस्कर गिरफ्तार

गोपालगंज। श्रीपुर ओपी पुलिस ने रविवार की देर शाम एक गुप्त सूचना के आधार पर क्षेत्र के भोरे-मीरगंज मुख्य पथ अंतर्गत बंशी बतरहाँ बाजार के समीप से होकर गुजरी हथुआ शाखा नहर पुल के पास वाहन जांच के क्रम में विदेशी शराब से भरी एक टेंपो को जप्त कर लिया। साथ ही पुलिस ने दो तस्करों को गिरफ्तार कर लिया। शराब से भरी टैंपू को पुलिस ओपी परिसर लायी। जहां टेंपू खोलकर विदेशी शराब की गिनती की गयी। जिसमे 788 बोतल अलग-अलग ब्रांड के विदेशी शराब पायी गयी। गिरफ्तार तस्करों में पटना जिला अंतर्गत दीघा थाना क्षेत्र के अखाड़ा रोड यदुवंशी नगर दीघा गांव के निवासी योद्धा पासवान का पुत्र उत्तम कुमार तथा सहवीर राय का पुत्र प्रभात कुमार के रूप में पहचान की गई है।

# चोरी की बाइक खरीद-बिक्री करने वाले तीन अपराधी गिरफ्तार

## शराब तस्करी के लिए करते थे चोरी की बाइक का इस्तेमाल

**गोपालगंज प्रात : किरण ब्यूरो**

एसपी स्वर्ण प्रभात के निर्देश पर नगर थाने की पुलिस ने शराब तस्करी के लिए चोरी की बाइक खरीद बिक्री कर रहे तीन अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार अपराधियों के पास से चोरी की तीन बाइक व तीन मोबाइल सहित अन्य सामान बरामद किया गया है।

गिरफ्तार अपराधियों में उचकागांव थाने के नवादा परसौनी गांव के अरमान अली, खास परसौनी गांव के दौलत अली और नगर थाने के एकडेरवा गांव के विपिन कुमार सिंह बताए गए है। प्रेस वार्ता के दौरान इसकी जानकारी देते हुए एसपी स्वर्ण प्रभात ने बताया कि पुलिस को गुप्त

सूचना मिली थी कि तुरकाहां बाईपास के समीप कुछ अपराधी शराब तस्करी के लिए चोरी की बाइक की खरीद बिक्री कर रहे है। सूचना के आधार पर नगर थाने में तैनात पुलिस अवर निरीक्षक आशुतोष रंजन, हृदयानंद राम और परिक्ष्यमान पुलिस अवर निरीक्षक आमिर हुसैन को तत्काल कारवाई का निर्देश दिया गया। पुलिस ने त्वरित कारवाई करते हुए तुरकाहां बाईपास के समीप छापेमारी कर चोरी की बाइक की खरीद बिक्री व शराब तस्करी की योजना बना रहे तीन अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ के दौरान अपराधियों ने शराब तस्करी के लिए चोरी की बाइक का इस्तेमाल व खरीद बिक्री किए जाने की बात स्वीकार की है। पुलिस अन्य बिन्दुओं पर भी जांच पडताल कर रही है। एसपी ने बताया कि गिरफ्तार अरमान अली और विपिन कुमार सिंह पर नगर थाने में पूर्व से मामला दर्ज है।

# अगलगी की घटना में पांच घर जलकर राख

**प्रात : किरण संवाददाता**

छपरा ।इसुआपुर अंचल क्षेत्र के चहपुरा गांव के यादव टोली में दोपहर में आग लग गई। जिसमें बस्ती के पांच फूसनुमा घर जलकर राख हो गए। गृह स्वामी अनिल राय,लालबाबू राय,शैलेश यादव,अमर राय,ओमप्रकाश यादव ने बताया कि वे लोग घर से बाहर थे। जहां गेहूं की दौनी के पश्चात गेहूं का बोरा घर में रखकर खलिहान में भूसा इकट्ठा कर रहे थे। तभी अचानक आग लग गई। जब तक लोग कुछ समझ पाते तब तक आग ने विकराल रूप धारण कर लिया। आनन-फानन में ग्रामीणों ने फायर ब्रिगेड को फोन किया। जिसके बाद फायर ब्रिगेड की दो गाड़ियां घटनास्थल पहुंची तथा घंटों मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। तब तक पूरा घर जलकर राख हो चुका था। घरों में रखे कपड़े, गहने, बर्तन, बिछावन, साइकिल सहित घर में रखे नगदी, आवश्यक कागजात तथा घर के अन्य

सामान सब कुछ जलकर राख हो गए।अब पीड़ित परिवारों के पास न खाने को अन्न है, ना सर छुपाने को घर। घटना की सूचना पर अंचलाधिकारी के प्रतिनिधि राजस्व कर्मचारी घटनास्थल पहुंचे तथा अपनी आग से हुई क्षति का मुआयना किया। घटना की सूचना मिलने पर पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि धनंजय कुमार, पैक्स अध्यक्ष राजेश राय, शिक्षक मनोज राय आदि में पीड़ित परिवारों की तत्काल मदद की तथा उन्हें सांत्वना दिया।

# गोपालगंज में कार सहित तीन शराब माफिया गिरफ्तार

**गोपालगंज प्रात : किरण ब्यूरो**

एसपी स्वर्ण प्रभात के निर्देश पर नगर थाने की पुलिस ने बंजारी चैक के समीप वाहन जांच के दौरान एक कार से तीन शराब माफियाओं को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार शराब माफियाओं के पास से एक फोर्ड फिएस्टा कार सहित अन्य सामान बरामद किया गया है। गिरफ्तार शराब तस्करों में नगर थाने के मैनपुर गांव के अंकित कुमार, एकडेरवा गांव के अवधेश कुमार यादव और दुधनाथ यादव बताए गए है। प्रेसवार्ता के दौरान एसपी स्वर्ण प्रभात ने बताया कि सूचना मिली थी

कि यूपी से कुछ शराब तस्कर शराब की बडी खेप लेकर गोपालगंज की तरफ आ रहे है। सूचना के आधार पर पुलिस ने बंजारी चैक के समीप वाहनों की सघन जांच शुरू कर दी। जांच के दौरान एक कार पर सवार तीन शराब माफियाओं को गिरफ्तार कर लिया गया। लेकिन शराब लदी कार को तस्कर पुलिस को चकमा देकर फरार हो गए। पूछताछ के दौरान तस्करों ने पुलिस को बताया कि यूपी से एक कार पर शराब की खेप लायी जा रही थी। जबकि एक कार से एस्कॉर्ट किया जा रहा था। जांच के दौरान पकडे जाने पर शराब लदी कार को लेकर तस्कर फरार हो गए। एसपी ने बताया कि पूछताछ के दौरान गिरफ्तार शराब माफियाओं ने कई अहम जानकारी दी है। जिसके बाद आगे की कारवाई की जा रही है। उन्होने बताया कि गिरफ्तार शराब माफिया अंकित कुमार पर विशंभरपुर थाने में उत्पाद अधिनियम के तहत मामला दर्ज है। वही अवधेश कुमार एवं दूधनाथ यादव पर नगर थाने, जादोपुर थाने में शराब तस्करी के कई मामले दर्ज है। पुलिस को इनकी तालाश काफी समय से थी।

# स्टेट कराटे चैम्पियनशिप में सारण ने 6 मेडल किया हासिल

छपरा। बांका के जिला खेल भवन में बीते 15-16 अप्रैल को आयोजित राज्य स्तरीय कराटे प्रतियोगिता के कुमिते में सारण के खिलाड़ियों का बेहतर प्रदर्शन रहा। छोटी टीम होने के बावजूद अलग-अलग भार वर्ग में सारण के खिलाड़ियों ने 3 गोल्ड, 1सिल्वर व 2 ब्रांज मेडल हासिल करने में सफल रहे। मेडल हासिल करने वालों में छपरा वारियर्स मार्शल आर्ट एंड स्पोर्ट्स एकेडमी की खिलाड़ी आकृति राज सिंह ने 10-12 वर्ष महिला वर्ग के 34.1-40 किग्रा भार वर्ग में मेजबान बांका, वैशाली आदि जिला के खिलाड़ी को हराकर गोल्ड पर कब्जा जमाया। वहीं 18 वर्ष से अधिक आयु महिला वर्ग के 40 किग्रा भार वर्ग में रीना कुमारी ने गोल्ड, अंडर 8-10 आयु बालक 34.1-40 किग्रा भार वर्ग में आर्यण राज सिंह ने गोल्ड सब जुनियर वर्ग के 4-6 आयु वर्ग के अंडर 18.1-23 किग्रा भार वर्ग में सुहानी कुमारी ने सिल्वर मेडल, अंडर 10-12आयु वर्ग के 34.1-40 किग्रा भार वर्ग में साहिल कुमार को ब्रांज मेडल तथा अंडर 12-14आयु वर्ग के पुरुष 50किग्रा से अधिक भार वर्ग में ब्रांज मेडल हासिल करने में सफल रहे।खेल भवन में आयोजित प्रतियोगिता में डेढ़ दर्जन से ज्यादा जिले के 150 प्रतिभागी पहुंचे थें। अपने प्रदर्शन की बदौलत सारण की ओवरऑल 5वें स्थान पर रही। सारण के खिलाड़ियों के लिए सबसे सुखद अनुभव यह रहा कि समापन समारोह में पहुंचे सारण जिले के निवासी व वर्तमान में बांका जेल अधीक्षक सुजीत कुमार रॉय ने सारण के खिलाड़ियों को मेडल देकर सम्मानित करने के साथ ही उन्हें और अच्छा प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करते हुए अपनी शुभकामना दी। बताते चलें कि सारण जिले की 6 सदस्यीय कराटे टीम कोच सेंसई अनिल कार्की व ऑफिशियल के रूप में बिट्टू शर्मा के नेतृत्व में टीम ने हिस्सा लिया। उधर स्टेट लेवल के कराटे प्रतियोगिता में सारण के खिलाड़ियों के बेहतर प्रदर्शन पर जिला संघ के पदाधिकारियों व सीनियर खिलाड़ियों ने शुभकामना दी है। इसके साथ ही एन एस एस के पूर्व विश्वविद्यालय समन्वयक प्रो.डा.वीवी त्रिपाठी,जिला शतरंज संघ के यशपाल सिंह,जिला शतरंज संघ के मनोज कुमार वर्मा संकल्प सहित जिला के अन्य खेल प्रेमियों ने हर्ष जताया है।

# गंडक में डूबे युवकों का दूसरे दिन भी नहीं मिला सुराग

**गोपालगंज प्रात : किरण ब्यूरो**

जिले के सिधवलिया थाने के सलेमपुर गांव के समीप गंडक नदी में डूबकर लापता दोनों युवकों की बरामदगी के लिए सर्च अभियान दुसरे दिन सोमवार को भी जारी रहा। रविवार की सुबह नहाने के दौरान धीरज कुमार व सूरज कुमार डूबकर लापता हो गए थे। जबकि साथ में नहा रहे पांच युवक नदी से सुरक्षित बाहर निकल आए थे। सतधन स्नान को लेकर डेढ़ दर्जन से अधिक श्रद्धालु गंडक नदी में गए थे। बरौली के अंचल पदाधिकारी वेद प्रकाश नारायण ने बताया कि नारायणी नदी के डुमरियाघाट तक एनडीआरएफ की टीम सर्च ऑपरेशन कर रही

है। लेकिन अब तक लापता दोनों युवकों को बरामद नहीं किया जा सका है। उधर दूसरे दिन भी युवक को की बरामदगी नहीं होने से परिजनों की उम्मीद टूटती नजर आ रही है। दोनों परिवारों में कोहराम मचा हुआ है। थानाध्यक्ष धनंजय कुमार ने बताया कि फिलहाल घटना को लेकर लापता युवकों के परिजनों की ओर से किसी तरह का आवेदन प्राप्त नहीं हुआ है। आवेदन मिलने के बाद मामला दर्ज किया जाएगा।

# चमकी बुखार से बचाव के प्रति समुदाय को जागरूक करेंगी जीविका दीदी

**प्रात : किरण संवाददाता**

छपरा। चमकी बुखार और जापानी इंसेफ्लाइटिस बीमारी से बचाव के लिए स्वास्थ्य विभाग प्रतिबद्ध है। चमकी बुखार की रोकथाम तथा इससे उत्पन्न चुनौतियों से निपटने को लेकर लगातार स्वास्थ्य विभाग के द्वारा तैयारी की जा रही है। जिले में चमकी बुखार से बचाव के प्रति विशेष जागरूकता अभियान चलाने का निर्णय लिया गया है। इसको लेकर स्वास्थ्य विभाग के सचिव संजय कुमार सिंह ने पत्र जारी कर आवश्यक दिशा निर्देश दिया है। जारी पत्र में कहा गया है कि चमकी बुखार से प्रभावित जिलों में जिला एवं प्रखंड स्तरीय पदाधिकारियों के सहयोग से जिला के शिक्षकों को

चमकी बुखार व जेई की रोकथाम के लिए प्रचार प्रसार अभियान में जोड़ा जाएगा। चमकी बुखार से प्रभावित बच्चों को स्कूल रेडीनेस प्रोग्राम व होम बेस्ड एजुकेशन के माध्यम से पुनर्वास किया जाएगा। इसके साथ ही चमकी बुखार और जेई की रोकथाम के लिए जीविका दीदी के माध्यम से जागरूकता अभियान चलाया जाएगा।

**पंचायत के मुखिया और जनप्रतिनिधि करेंगे जागरूकता अभियान में सहयोग:** जारी पत्र के माध्यम से निर्देश दिया गया है कि चमकी बुखार से प्रभावित जिलों में ग्राम पंचायतराज के मुखिया एवं अन्य पंचायतीराज संस्थान के प्रतिनिधियों को चमकी बुखार और जेई की रोकथाम, संवेदनशील एवं जागरूक बनाना एवं पंचायत स्तर पर गठित शिक्षा समितियों के माध्यम से अभियान के प्रति जागरूकता को बढ़ावा दिया जाएगा। चमकी बुखार और जेई प्रभावित जिलों में जन वितरण प्रणाली के माध्यम से ससमय खाद्य सामग्री का वितरण सुनिश्चित किया जाएगा। समाज कल्याण विभाग को आदेश दिया गया है कि आंगनबाड़ी सेविकाओं के द्वारा चमकी बुखार , संक्रमण एवं रोकथाम के संबंध में समुदायिक चेतना का प्रचार प्रसार किया जाएगा । आंगनबाड़ी केंद्रों पर ओआरएस सिरप एवं पैरासिटामोल की उपलब्धता भी सुनिश्चित की जाएगी। कुपोषित बच्चों को एनआरसी तक लाना उनके बीच संध्या भोजन का वितरण, टेक होम राशन की व्यवस्था भी सुनिश्चित की जाएगी। आंगनबाड़ी सेविकाओं के द्वारा ग्रामीण स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं पोषण समिति की बैठकों में भाग लेकर अभियान में तेजी लाया जाएगा। पत्र के माध्यम से निर्देश दिया गया है कि प्रभावित जिलों के पंचायतों में विशेषकर महादलित टोला में विकास मित्र की सहभागिता चमकी बुखार और जेई संक्रमण की रोकथाम के संबंध में प्रचार प्रसार किया जाएगा।

### चार बदमाशों को पुलिस ने पकड़ कर भेजा जेल

छपरा ।इसुआपुर पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए रोड में लूट करने वाले 4 बदमाशों को पकड़ कर जेल भेजा दिया। इस बाबत थानाध्यक्ष मिहिर कुमार ने बताया की अमन कुमार सिंह पिता मधुसूदन सिंह ग्राम सिकटी थाना मशरक नयन कुमार ओझा पिता राजू ओझा , आशुतोष कुमार ओझा पिता बीरेंद्र ओझा दोनों ग्राम अटौली थाना इसुआपुर, अमरीश कुमार ओझा पिता मुना ओझा ग्राम गोहां थाना इसुआपुर को 15 अप्रैल की रात्रि 2 बजे इसुआपुर गम्हरियां नाहर के बगल में श्यामपुर गैस गोदाम के पास चारों को संदिग्ध अवस्था में पकड़ा गया।इनके साथ खड़े दो अन्य अपराधी भागने में सफल रहे। पूछताछ पर इन्होंने कई लूट कांड में अपनी संलिप्तता स्वीकार की।

### अरुण कुमार सिंह का हुआ विदाई नए एसडीएम ने किया पदभार ग्रहण

छपरा ।विदाई चाहें जैसा हो क्षण काफी भावुक ही हो जाता अपने स्नेही स्वभाव से सबका दिल जीतने वाले एसडीएम अरुण कुमार सिंह के तबादले के बाद छपरा सदर अनुमंडल कार्यालय में विदाई दी गई और नए एसडीएम के रूप में संजय कुमार राय ने अपना योगदान दिया वही इस कार्यक्रम में मौजूद सदर डीसीएलआर पुष्पेश कुमार एवं कार्यालय के सभी कर्मियो ने इनके कार्यकाल को काफी सराहा ।वही सदर अनुमंडल में अनुमंडल पदाधिकारी संजय कुमार राय ने पदभार ग्रहण किया।

सम्पादकीय

# अतीक का हत्यावादी अंत

माफिया अतीक अहमद की जिंदगी का यह सबसे नाटकीय घटनाक्रम रहा। पुलिस के सख्त पहरे और चौतरफा घेरेबंदी के बावजूद, किसी ने मीडिया का मुखौटा धारण कर, अतीक और उसके छोटे भाई अशरफ पर गोलियां चला दीं और कुछ ही सेकंड में जिंदगियां निष्प्राण हो गईं। माफिया के रूपक बने दोनों भाई मारे गए। गोलीबारी करने वाले जय श्रीराम का उद्घोष करते रहे, जाहिर है कि वे किसी हिंदूवादी संगठन के सदस्य होंगे! यह हत्यावादी हमला भी किसी साजिशाना रणनीति का हिस्सा हो सकता है! अतीक और अशरफ को लाश बनाने वालों ने आत्म-समर्पण भी कर दिया। उन पर हत्या का मुकदमा चल सकता है। साक्ष्य बिल्कुल स्पष्ट और सार्वजनिक हैं। उप्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने न्यायिक आयोग से जांच के आदेश दिए हैं। बेशक अतीक की माफियागीरी का फिलहाल अंत को चुका है, लेकिन उसके चार बेटे (दो बालिग, दो नाबालिग) पुलिस की गिरफ्त में हैं। जब भी वे जेल से मुक्त होंगे, क्या वे भी माफियागीरी का रास्ता अख्तियार करेंगे? क्या इस तरह अतीक और अशरफ की मौत भी एक सांप्रदायिक मुद्दा बन सकती है? क्या सपा, बसपा और ओवैसी इस मौतकांड को मुस्लिमवाद के तौर पर प्रचारित करेंगे? अतीक को मुलायम सिंह यादव और मायावती सरीखे नेताओं का संरक्षण हासिल था, जिसकी छाया में वह माफिया बनता चला गया।

अतीक के खिलाफ 100 से अधिक आपराधिक केस बताए जा रहे हैं। करीब दर्जन भर राज्यों में अतीक की ठेकेदारी भी माफियागीरी की तर्ज पर चलती रही। उसने अपराध और कारोबार से करोड़ों रुपए अर्जित किए। उप्र सरकार का दावा है कि वह 400 करोड़ रुपए से ज्यादा की अतीक की संपत्ति को जब्त कर चुकी है। बुलडोजर से न जाने कितना नुकसान किया होगा, लेकिन इस माफिया कांड का सबसे महत्त्वपूर्ण सवाल यह है कि क्या किसी अपराधी की आपराधिक और दंडनीय नियति पुलिस और सरकार ही तय कर सकती है? दरअसल भारत के दंड-विधान और संविधान में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है, जो मुठभेड़ और मानवीय हत्या की इजाजत देता हो। हम मुठभेड़ या फांसी पर लटकाने की प्रक्रियाओं के खिलाफ हैं। हालांकि कानून में पुलिस को कुछ विशेषाधिकार दिए गए हैं, जो आत्मरक्षा या अपराधी के भाग जाने अथवा किसी अन्य अपरिहार्य स्थितियों में इस्तेमाल किए जा सकते हैं। हम हरेक मुठभेड़ या इस तरह की हत्या को फर्जी या सांप्रदायिक करार देने के भी पक्ष में नहीं हैं। हालांकि अतीक और उसके बेटे असद की हत्याओं के संदर्भों में सर्वोच्च अदालत के दिशा-निर्देश गौरतलब हैं।

मुठभेड़ और हत्या होने के बाद धारा 176 के तहत, मामले की, अनिवार्य रूप से न्यायिक जांच की जानी चाहिए। क्या मुख्यमंत्री का आदेश पर्याप्त है? मुठभेड़ हो, तो उसकी रपट धारा 190 के तहत अधिकार-क्षेत्र वाले न्यायिक मजिस्ट्रेट को भेजी जानी चाहिए। राष्ट्रीय और राज्य मानवाधिकार आयोगों को भी इसकी रपट भेजी जानी चाहिए। मुठभेड़ के बाद प्राथमिकी तुरंत दर्ज की जानी चाहिए और उसे धारा 157 के तहत, बिना किसी देरी के, अदालत को भेजनी चाहिए। बुनियादी तौर पर यह मामला मुठभेड़ का है, क्योंकि 24 फरवरी के उमेश पाल हत्याकांड से जुड़े सभी 6-8 आरोपितों को मुठभेड़ के जरिए या हत्या कर समाप्त किया गया है। केंद्रीय गृह राज्यमंत्री नित्यानंद राय ने 23 मार्च, 2022 को राज्यसभा को अवगत कराया था कि देश भर में बीते छह सालों के दौरान मुठभेड़ के 813 केस दर्ज कराए गए हैं। ऐसे मामले बीते दो साल में करीब 70 फीसदी बढ़े हैं। अप्रैल, 2016 के बाद से हर तीसरे दिन औसतन एक मुठभेड़ जरूर हो रही है। कोरोना महामारी के चरम के दौरान मुठभेड़ें और हत्याएं कम हुई थीं, लेकिन औसतन मुठभेड़ें-हत्याएं अब फिर बढ़ रही हैं। अतीक का विषय इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है, लेकिन इससे कानून और संविधान के सरोकार जुड़े हैं।

# एनकाउंटर पर सवाल उठते आए है?

विनीत नारायण

जिस तरह हर सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी तरह कुछ एनकाउंटर स्पेशलिस्ट के घमंड और कभी-कभी उसके भ्रष्टाचार के चलते हर पुलिस एनकाउंटर को शक की निगाह से ही देखा जाता है। खासकर जब राजनीतिक प्रतिद्वंदियों के पाले हुए गुंडों का एंकाउंटर होता है तब तो जनता के मन में ऐसे ही सवाल उठते हैं कि ऐसे सभी एनकाउंटर फजी होते हैं। परंतु सच्चाई तो जाँच के बाद ही सामने आती है।

उत्तर प्रदेश के व्यापारी आजकल कहते हैं कि योगी राज में मुसलमानों का आतंक खत्म हो गया है। इसलिए माफिया डॉन अतीक अहमद के बेटे असद अहमद की एनकाउंटर में मौत का समाचार उन लोगों को सही लगा। मैं एनकाउंटर के विषय में कुछ तथ्य और कानूनी पेचीदगियों का ज़िक्र इस लेख में आगे करूँगा। पर यहाँ एक सवाल जो समाजवादी पार्टी ने उठाया है वह भी महत्वपूर्ण है। वो यह कि स्थानिय चुनावों के पहले ही इस एनकाउंटर का क्या अर्थ निकला है? सिवाय इसके कि इस एनकाउंटर की खबर को दिन-रात टीवी चैनलों पर चलवाकर इसका फायदा योगी सरकार को अगले महीने होने वाले निकायों के चुनावों में मिले। इसलिये सरकार की नीयत पर शक होता है। कानून की नजर में सब बराबर होने चाहिए। किसी अपराधी का कोई जाति या धर्म नहीं होता। इसलिए बिना भय और पक्षपात के अगर प्रदेश के माफि याओं के विरुद्ध योगी सरकार कड़े कदम उठाती है तो उसका स्वागत ही होगा। पर ऐसे कदम सब अपराधियों पर एक समान उठाए जाने चाहिए, जो आज नहीं हो रहा है। हत्या, बलात्कार और पुलिस उत्पीड़न के शिकार कितने ही लोगों को न्याय नहीं मिल रहा। फरियादी हताश होकर आत्महत्या तक कर रहे हैं ऐसी खबरें अक्सर सामने आती रहती है।

उत्तर प्रदेश के एक विशेष जाति के माफि याओं की सूची आज कल सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है जिसमें योगी सरकार से पूछा जा रहा है कि इन माफि याओं के विरुद्ध आजतक बुलडोजरनुमा कार्यवाही क्यों नहीं हुई? उनमें से किसी का एनकाउंटर क्यों नहीं होता? उत्तर प्रदेश सरकार की इस नीति के विरुद्ध भी बहुत लोगों को आक्रोश है।

एनकाउंटर उमेश पाल की हत्या के आरोपियों का हो या किसी अन्य का जब भी उस पर सवाल उठते हैं तो मामला जाँच कमेटी के पास पहुँचता है। आपको याद होगा कि कुछ ही समय पहले नवंबर 2019 में तेलंगाना राज्य के हैदराबाद में हुए गैंगरेप और हत्या के चार अभियुक्तों के संदिग्ध एनकाउंटर को सर्वोच्च न्यायालय की जाँच समिति ने फजी पाया। जाँच समिति द्वारा इन पुलिसवालों पर हत्या का मुकद्दमा चलाने की सिफारिश भी की गई।

पाठकों को याद होगा कि जब यह एनकाउंटर हुआ था, तब लोगों ने पुलिस का समर्थन करते हुए भारी जश्न मनाया था। जैसा असद व अन्य आरोपियों के एनकाउंटर पर भी हो रहा है। वहीं दूसरी ओर हमेशा की तरह पुलिस एनकाउंटर पर तमाम सवाल भी खड़े हो रहे हैं। प्रायः ऐसा मान लिया जाता है कि पुलिस द्वारा किए गए एनकाउंटर फजी ही होते हैं। एनकाउंटर कब और कैसे होते हैं इस बात पर कोई विशेष ध्यान नहीं देता। कानून की बात करें तो देश में मौजूद भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) और दण्ड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) दोनों में ही एनकाउंटर का कोई भी ज़िक्र नहीं है। तो फिर सवाल उठता है कि पुलिस एनकाउंटर आखिर है क्या? यदि कोई भी पुलिसकर्मी आत्मरक्षा में सामने वाले पर गोली चलाता है तो उसे सामान्य भाषा में एनकाउंटर माना जाता है। तो क्या पुलिस किसी भी अपराधी पर आत्मरक्षा में गोली चला सकती है? नहीं ऐसा नहीं है।

जब कभी भी पुलिस को किसी अपराधी के बारे में सूचना मिलती है और वह उसे गिरफ़्तार करने जाती है, तो अगर वो अपराधी आत्मसमर्पण कर देता है तब पुलिस उस पर बल प्रयोग नहीं कर सकती। यदि कोई कुख्यात अपराधी, जिसे उम्र कैद या उससे ज्यादा सजा हो सकती है और वो गिरफ़्तारी से बचने के लिए भागने का प्रयास करता है और पुलिस उसे पकड़ नहीं पाती, तो उस सूरत में पुलिस उसे जख़्मी करने की नियत से उसके शरीर के किसी भी हिस्से में गोली मार सकती है। प्रायः ये गोली उसकी टांगों में मारी जाती है। जिससे वह ज्यादा दूर न भाग सके और उसे गिरफ़्तार कर लिया जाए। यदि ऐसे किसी अपराधी के पास कोई जान लेवा हथियार होता है और वो पुलिस पर वार करता है, तो केवल उस सूरत में पुलिस उस पर आत्मरक्षा में गोली चला सकती है। मुंबई पुलिस के बहुचर्चित एनकाउंटर स्पेशलिस्ट दया नायक और प्रदीप शर्मा से जब किसी पत्रकार ने पूछा कि मुंबई में अपराधियों की सफाई के लिए आप दोनो को ही श्रेय दिया जाता है तो, उनका कहना था कि, हम तो अपराधियों को पकड़ने के लिए ही जाते हैं, लेकिन वो जब हम पर वार करते हैं तो हमें भी पलटवार करना पड़ता है। अपराधियों को भी पता है कि यदि वो पुलिस के हत्थे चढ़े तो कई सालों तक जेल के बाहर नहीं आएँगे। इसलिए इन सब से बच कर भागने के प्रयास में वे पुलिस की गोली का शिकार हो जाते हैं। उनके अनुसार 97-98 में जब मुंबई में गैंगस्टरों का आतंक चरम पर था तब सरकार कड़े कानून ले कर आई। अपराधी इन्हीं कड़े कानूनों से बचने की पुरजोर कोशिश में मारा जाता है। इसी के बाद से मुंबई के अंडरवर्ल्ड में एनकाउंटर का भय बढ़ने लगा।

# उत्तर प्रदेश में अतीक की हत्या पर उठते सवाल?

**झाँसी में बेटे असद के एनकाउंटर के बाद उसका डर और गहरा हो गया था। इस घटना के बाद उत्तर प्रदेश पुलिस और राज्य की कानून व्यवस्था सवालों के घेरे में है। सवाल उठता है कि इतनी कड़ी सुरक्षा व्यवस्था में अतीक और असरफ की हत्या कैसे हुई। विपक्ष का सवाल उठाना लाजमी है कि फिर कानून व्यवस्था का क्या मतलब है? क्योंकि अतीक माफिया भले था लेकिन उसी प्रयागराज से पांच बार विधायक और एक बार सांसद रह चुका था। जिस तरह पुलिस अभिरक्षा में घूस कर तीन युवकों ने गोली मार कर हत्या कि वह अपने आप में बड़ा सवाल है। पूर्व मुख्यमंत्री मायावती, अखिलेश यादव और ओवैसी ने इस हत्या की तीखी आलोचना की है। उधर सपा के महासचिव रामगोल यादव ने अतीक के बाकि बचे बेटों के हत्या की भी आशंका जतायी है।**

प्रभुनाथ शुक्ल
स्वतंत्र पत्रकार एवं स्तम्भकार

माफिया अतीक अहमद और उसके भाई असरफ के आतंक का अंत इस तरीके से होगा इसकी उत्तर प्रदेश पुलिस और खुद अतीक और उसके परिवार को इसकी कल्पना नहीं रहीं होगी। लेकिन यह सच था कि पुलिस की कार्रवाई को लेकर वह सहमा था। उसके भीतर कहीं न कहीं यह भय था कि उसकी भी हत्या कि जा सकती है। झाँसी में बेटे असद के एनकाउंटर के बाद उसका डर और गहरा हो गया था। इस घटना के बाद उत्तर प्रदेश पुलिस और राज्य की कानून व्यवस्था सवालों के घेरे में है। सवाल उठता है कि इतनी कड़ी सुरक्षा व्यवस्था में अतीक और असरफ की हत्या कैसे हुई।

विपक्ष का सवाल उठाना लाजमी है कि फिर कानून व्यवस्था का क्या मतलब है? क्योंकि अतीक माफिया भले था लेकिन उसी प्रयागराज से पांच बार विधायक और एक बार सांसद रह चुका था। जिस तरह पुलिस अभिरक्षा में घूस कर तीन युवकों ने गोली मार कर हत्या कि वह अपने आप में बड़ा सवाल है। पूर्व मुख्यमंत्री मायावती, अखिलेश यादव और ओवैसी ने इस हत्या की तीखी आलोचना की है। उधर सपा के महासचिव रामगोल यादव ने अतीक के बाकि बचे बेटों के हत्या की भी आशंका जतायी है। उन्होंने इसे सुनियोजित हत्या बताया है। योगी सरकार ने इस घटना की रिपोर्ट केंद्रीय गृहमंत्रालय को भी भेजा है।

पुलिस अभिरक्षा में अतीक और असरफ की हत्या की घटना को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गंभीरता से लिया है। राज्य में कानून व्यवस्था की स्थिति बिगड़े न इसके लिए राज्य पुलिस को कड़े निर्देश दिए गए हैं। प्रयागराज में जहाँ इंटरनेट बंद कर दिया गया है। वहीं पूरे प्रदेश में धारा 144 लागू कर दी गयीं है। घटना के सम्बन्ध में 17 पुलिस कर्मियों को निलंबित कर दिया गया है। राज्य पुलिस मुख्यालय से पांच आईपीस अफसरों को कानून-व्यवस्था निगरानी और समीक्षा के लिए भेजा गया है।

अब अतीक की हत्या को मजहबी रंग भी दिया जाने लगा है। लेकिन कानून-व्यवस्था पर तो सवाल तो उठेगा ही। निश्चित रुप से अतीक और उसके गुर्गो को उसके गुनाहों की सजा मिलनी चाहिए थी। इसके लिए संवैधानिक गतिविधियां अपनायी गयीं थीं। प्रयागराज की एमपी-एमएलए कोर्ट ने उमेशपाल हत्याकाण्ड में अतीक के खिलाफ सजा भी सुनायी थी। साबरती से उसे दूसरी बार पुलिस रिमांड पर प्रयागराज ले आया गया था। माफिया डॉन अबू सलेम और पाकिस्तान कनेक्शन पर भी धूमनगंज थाने में पूछताछ हो रहीं थी। लेकिन जिस तरह अतीक की हत्या को अंजाम दिया गया वह किसी बड़ी साजिश की तरफ इशारा करती है।

प्रयाराज में मेडिकल परिक्षण के दौरान अतीक और उसके भाई की हत्या को लेकर उसकी अभिरक्षा में लगी पुलिस भी सवालों को घेरे में हैं। सवाल उठता है कि रात में जिस समय अतीक पर हमलावर ताबड़तोड़ गोलियां बरसा रहे थे उस दौरान पुलिस क्या कर रहीं थी। पुलिस ने काउंटर फायरिंग क्यों नहीं किया। अतीक कोई मामूली कैदी नहीं था वह पांच बार का विधायक और सांसद रह चुका था। वह बेहद हाईप्रोफाइल व्यक्ति था उसकी हत्या कोई सामान्य बात नहीं है।

जब आरोपित गोलियां बरसा रहे थे तो पुलिस को उन पर कवर फायरिंग करना था। लेकिन पुलिस ने ऐसा क्यों नहीं किया। इस मीडिया रिपोर्ट में अतीक का जो वीडियो आया है उसमें साफ दिख रहा है कि उसे एकदम सटाकर गोली मारी गयीं। आरोपित ताबड़तोड़ गोली मारते रहे और पुलिस मौन ही। इस घटना में एक पुलिस वाले और पत्रकार के घायल होने की खबर है। लेकिन पुलिस ने ऐसा नहीं किया, हमलावर आराम से हत्या कर हथियार डाल कर पुलिस के सामने आत्मसमर्पण करते हैं। अगर पुलिस की कवर फायरिंग में तीन में किसी भी बदमाश को गोली लगती तो पुलिस की भूमिका पर सवाल न उठते।

प्रयागराज में अतीक की हत्या किसी बड़े इशारे की ओर इंगित करती है। हत्या के आरोपित जिन तीन युवकों का नाम आ रहा है उसमें लवलेश तिवारी बांदा, अरुण मौर्या कासगंज और सनीसिंह हमीरपुर शामिल हैं। यह तीनों बड़े अपराधी हैं। लेकिन अतीक की हत्या के लिए तीनों का एक साथ आना बड़े सवाल खड़े करता है। कहीं तीनों अतीक के गैंग से ही नहीं जुड़े थे। अतीक से हुई पुलिस पूछताछ में इनका नाम भी तो नहीं आ रहा था। दूसरी बात जांच के दायरे में कोई बड़ा आदमी तो नहीं फंस रहा था। जिसने अपनी गर्दन बचाने के लिए ऐसी साजिश रची।

मीडिया रिपोर्ट में बताया गया है कि तीनों एक लाज में रुके थे। लेकिन उन्हें कैसे पता था कि अतीक को इसी अस्पताल में मेडिकल परीक्षण के लिए लाया जाएगा। घटना को अंजाम देने से पूर्व रेकी की भी बात आयी है। निश्चित रुप से यह एक सुनियोजित प्लानिंग थी। जिसकी वजह से आरोपित मीडियाकर्मी बनकर घटना को अंजाम दिया। इस घटना का सच सामने आना चाहिए। निश्चित रुप से इसमें कोई बड़ा नाम भी हो सकता है। लेकिन राज्य की कानून-व्यवस्था पर अतीक और असरफ की हत्या बड़ा सवाल छोड़ गयीं है। इस घटना का पदार्फांस हर स्थिति में होना चाहिए। इस तरह अतीक की हत्या क्यों की गयीं। यह सिर्फ अतीक की हत्या ही नहीं राज्य की कानून व्यवस्था और उसकी पुलिस से भी जुड़ा बड़ा सवाल है। इस घटना की जमीनी सच्चाई सामने आनी चाहिए।

# शिक्षा में सृजनात्मकता को अवसर दिया जाए

**शिक्षा में सृजनात्मकता कितनी बची रहेगी और समाहित होगी इस बात पर देश का ही नहीं बल्कि सारी मनुष्यता का भविष्य निर्भर करता है। शिक्षा सृजनात्मकता के साथ शब्द और अर्थ की ही तरह आपस में जुड़ी हुई है। जैसे शब्द और अर्थ एक दूसरे से संपृक्त होते हैं, एक के बिना दूसरे का कोई मूल्य या उपयोगिता नहीं होती, ठीक वैसी ही शिक्षा और सृजनात्मकता भी एक दूसरे से जुड़े और अन्योन्याश्रित होते हैं। बगैर सृजनात्मकता के शिक्षा अर्थहीन होगी और सृजनात्मकता के विकास के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण का अवसर भी जरूरी होता है। इसलिए शिक्षा की सार्थकता के लिए उसका रचनात्मक और सृजनात्मकता होना ही चाहिए। किंतु जब हम शिक्षा–व्यवस्था में सृजनात्मकता की जगह तलाशते हैं तो विफलता ही हाथ लगती है। रटना और उसे परीक्षा में पुनरुत्पादित कर देना ही शिक्षा का परम लक्ष्य बन चुका है।**

गिरीश्वर मिश्र
लेखक, अंतरराष्ट्रीय महात्मा गांधी हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के पूर्व कुलपति हैं।

औपचारिक शिक्षा और सृजनात्मकता के आपसी सम्बन्ध समाज के वर्तमान और भविष्य के निर्माण के साथ गहनता से जुड़े हुए हैं। शिक्षा में सृजनात्मकता कितनी बची रहेगी और समाहित होगी इस बात पर देश का ही नहीं बल्कि सारी मनुष्यता का भविष्य निर्भर करता है। शिक्षा सृजनात्मकता के साथ शब्द और अर्थ की ही तरह आपस में जुड़ी हुई है। जैसे शब्द और अर्थ एक दूसरे से संपृक्त होते हैं, एक के बिना दूसरे का कोई मूल्य या उपयोगिता नहीं होती, ठीक वैसी ही शिक्षा और सृजनात्मकता भी एक दूसरे से जुड़े और अन्योन्याश्रित होते हैं। बगैर सृजनात्मकता के शिक्षा अर्थहीन होगी और सृजनात्मकता के विकास के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण का अवसर भी जरूरी होता है। इसलिए शिक्षा की सार्थकता के लिए उसका रचनात्मक और सृजनात्मकता होना ही चाहिए। किंतु जब हम शिक्षा-व्यवस्था में सृजनात्मकता की जगह तलाशते हैं तो विफलता ही हाथ लगती है। रटना और उसे परीक्षा में पुनरुत्पादित कर देना ही शिक्षा का परम लक्ष्य बन चुका है।

इस दृष्टि से सोचने पर आज की औपचारिक शिक्षा की वास्तविकता पर विचार चिंता पैदा करने वाला होता जा रहा है। तथ्य यही है कि शिक्षा और सृजनात्मकता के बीच की कड़ी सामान्य शिक्षा केंद्रों में बहुत क्षीण अथवा कमजोर होती जा रही है। हम जो शिक्षा व्यवस्था देख रहे हैं, जिसमें जी रहे हैं उसमें ज्यादातर जगहों पर सृजनात्मकता का कोई अंश ढूँढे नहीं मिल रहा है। यह अलग बात है और जिस पर गौर किया जाना चाहिए कि तो भारत और अन्यत्र भी रचनाशील लोगों को औपचारिक शिक्षा कोअक्सर रास नहीं आती है। ऐसे लोगों ने बीच में ही छोड़ दिया जिनके भीतर तीव्र रचनात्मकता थी। उनको स्कूली व्यवस्था रास नहीं आयी। ऐसा इसलिए था क्योंकि औपचारिक शिक्षा व्यवस्था एक औपनिवेशिक दृष्टि की उपज थी। इस तथ्य से भी कोई इनकार नहीं कर सकता कि इस शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य अंग्रेजी राज के लिए बाबू यानी क्लर्क तैयार करना था। इसलिए सबसे पहले आत्मबोध को खंडित किया गया और धीरे-धीरे उसे विस्मृति के अंधे कुएं में डाल दिया गया। जिसका परिणाम है कि किसी चीज अथवा प्रत्यय का भारतीय होना हीन माना जाने लगा। यहां तक कि जब तक विदेश की मुहर न लग जाए तबतक उसे स्वीकार न करने का ही चलन बन गया। हमारे मन में ह्यभारतीयह्ल के लिए व्यर्थता बोध भरता चला गया।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि शिक्षा का अर्थ परिष्कार और शुद्धि भी है। इसलिए हमारे मस्तिष्क में जो यह भ्रम बैठ गया है उसका निवारण भी शिक्षा के माध्यम से होना चाहिए। हमारे यहां ज्ञान का दायरा, उसकी व्याप्ति बहुत बड़ी है। विद्या भी परा और अपरा दो प्रकार है। इस दृष्टि से भी उसपर विचार होना चाहिए। यदि आप वेदों और उपनिषदों को रचनात्मकता का प्रमाण नहीं मानेंगे, कालिदास को नहीं स्वीकार करेंगे तो किसे स्वीकार करेंगे। कादंबरी जैसी रचना यदि आपके चिंतन का हिस्सा नहीं है तो चिंतन करेंगे किसपर? हम यह न भूले की सृजनात्मकता का एक अर्थ मौलिकता भी है। इस अर्थ में महाकाव्य सृजनात्मकता के प्रतिमान हैं। जिस प्रकार की औपचारिक शिक्षा आजकल मिल रही है वह हमारे सोच-विचार का दायरा संकीर्ण करती जा रही है। हमारे विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय आदि शिक्षण संस्थान नये प्रश्न, नये विचार, सृजनात्मकता का परिवेश नहीं बना पा रहे। वे एक ही ढर्रे पर वर्षों से चल रहे हैं और चाहते हैं कि उनके यहाँ से शिक्षित व्यक्ति भी उसी दायरे के भीतर रहे।

सृजनात्मकता के विषय में थोड़ा विचार करें तो इसके तीन पक्ष हमारे सामने आते हैं। एक तो व्यक्ति की नैसर्गिक प्रतिभा होती है जिसके कारण वह जीवन में अन्य के मुकाबले अधिक सृजनात्मक है। दूसरा, सृजनात्मकता एक प्रक्रिया भी है और बच्चों को सृजनशील बनने की ओर उन्मुख किया जा सकता है। इसका प्रयास करना चाहिए। तीसरा और बहुत महत्वपूर्ण पक्ष है सृजनात्मकता का अवसर देने वाला परिवेश। बगैर इस परिवेश के बच्चों की सृजनात्मकता उसे प्रकार दम तोड़ देती है जिस प्रकार ऊसर भूमि में पड़ा बीज नष्ट हो जाता है। बीज में विशाल वृक्ष बनने की संभावना रहती है लेकिन उपयुक्त परिवेश न मिलने से वह अंकुरित ही न हो सकेगा। यही स्थिति हमारे विद्यार्थियों के साथ भी है। अत्यधिक नियम-कानून और बंधे बंधाए सांचे में ढली शिक्षा बच्चों को रुचिकर नहीं लगती। इसलिए शिक्षा को उन्मुक्त करने वाला होना चाहिए।

नई शिक्षा नीति से कुछ आशा अवश्य बंधी है। इसका कारण यह है कि संभवतः पहली बार सृजनात्मकता को शिक्षा नीति का केंद्रीय विषय बनाया गया है। प्रतिभा का प्रस्फुटन किस प्रकार हो इस विषय में यह शिक्षा नीति सोच रही है। उसके विविध अवसर किस प्रकार सृजित हों, इस दिशा में कदम बढ़ते दिख रहे हैं। हमको यह करना ही होगा। शिक्षा-व्यवस्था को आमूलचूल बदलकर उसके द्वारा नये ढंग से सोचने की, जिज्ञासा की, प्रयोग की भूमि तैयार करनी होगी। एक ऐसा वातावरण बनाने की महती आवश्यकता है जिसमें विद्यार्थी उन्मुक्त मन से प्रश्न कर सकें और प्रश्नों के समाधान को तलाने में उद्यत हों। केवल कुछ बने-बनाये रास्तों तक उनको महदूद न रखा जाए। सच यही है कि जब शिक्षा-व्यवस्था स्वयं इस जकड़बन्दियों से मुक्त होगी तभी वह सा विद्या या विमुक्तये के लक्ष्य की ओर आगे बढ़ सकेगी।

# विश्वसनीयता की कसौटी पर भारतीय मीडिया

प्रो. सुरेश शर्मा

भारतवर्ष दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। इस देश को संवैधानिक तथा लोकतांत्रिक व्यवस्था से चलाने के लिए चार मुख्य एवं महत्त्वपूर्ण स्तम्भों विधानपालिका कार्यपालिका, न्यायपालिका तथा प्रेस यानी मीडिया का निर्माण किया गया। संविधान में इन सभी के कार्य स्पष्ट रूप से परिभाषित हैं तथा ये चारों एक-दूसरे के बीच हस्तक्षेप नहीं करते। विधानपालिका देश के संचालन के लिए कानून का निर्माण करती है। कार्यपालिका के माध्यम से बनाए गए नियम या कानून सभी के लिए समान रूप से क्रियान्वित एवं लागू होते हैं। यह कानूनों को जनता में पहुंचाने, पालन करवाने तथा समान रूप से लागू करने का कार्य करती है। न्यायपालिका बनाए गए कानूनों की व्याख्या तथा कानूनी प्रावधानों के उल्लंघन होने पर सजा का प्रावधान करती है। इससे कोई भी व्यक्ति शक्ति, प्रभाव या धन बल के आधार पर कानून का उल्लघंन नहीं कर सकता। प्रेस यानी पत्रकारिता या मीडिया को लोकतन्त्र के चौथे स्तम्भ के रूप में मान्यता मिली है। यह लिखित एवं दृष्य एवं श्रव्य संसाधनों के माध्यम से स्वतन्त्र रूप से विधानपालिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका पर नजर रखता है। मीडिया की नजर तीनों स्तम्भों के जिम्मेवारी, निष्ठा तथा पक्षपात रहित कार्य करने पर रहती है। मीडिया द्वारा प्रदत जानकारी तथा जागरूकता के पश्चात निर्णय लेने की शक्ति जनता के विवेक तथा निर्णय पर निर्भर करती है। मीडिया जनता, चुने हुए प्रतिनिधियों, प्रशासन तथा न्यायिक व्यवस्था पर अपनी पैनी नजर रखते हुए सभी के बीच एक सेतु का कार्य करता है। लोकतन्त्र का घेरा लोगों द्वारा बनाई गई विधायिका से चलकर कार्यपालिका, न्यायपालिका व मीडिया से होते हुए पुनः लोगों के पास ही आ जाता है।

भारत में इन सभी को मिलाकर एक मजबूत एवं सशक्त लोकतंत्र का निर्माण होता है। प्रेस, पत्रकारिता या मीडिया संविधान के अनुच्छेद 19 (1) (ए) में अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता और अभिव्यक्ति के तहत भारत के संविधान द्वारा दिए गए मूल अधिकारों को संदर्भित करते हुए स्वतन्त्र पत्रकारिता को प्रोत्साहित करती है और लोगों को सरकार या उसके विरुद्ध अपनी राय देने की अनुमति प्रदान कर लोकतन्त्र को मजबूत करती है। भारत में प्रेस और मीडिया की स्वतंत्रता को व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है। देश के लोगों की सुरक्षा, राष्ट्रीय एकता, संप्रभुता और देश की अखंडता को सुनिश्चित करने के लिए इसमें अनुच्छेद 19 (2) के तहत कुछ उचित प्रतिबंध भी लगाए गए हैं। अनुच्छेद 19 में घोषणा के केंद्र में कहा गया है, हर किसी को राय और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार है। इस अधिकार में हस्तक्षेप के बिना राय रखने और किसी भी मीडिया माध्यम से और सीमाओं की परवाह किए बिना सूचना और विचारों को प्राप्त करने और प्रदान करने की स्वतंत्रता शामिल है। मीडिया के अधिकार फ्रीडम ऑफ स्पीच एंड एक्सप्रेशन के अन्तर्गत आते हैं। अभी हाल ही में माननीय उच्चतम न्यायालय ने अपने एक ऐतिहासिक फैसले में मीडिया वन मलयालम चैनल के प्रसारण पर केंद्र सरकार द्वारा लगाए प्रतिबंध को हटाते हुए कहा कि मजबूत लोकतंत्र के लिए प्रेस की आजादी जरूरी है। देश के सामने सच बोलना प्रेस का कर्तव्य है तथा इससे राष्ट्र को कोई खतरा नहीं है। माननीय उच्चतम न्यायालय ने कहा कि सरकार की नीतियों की आलोचना करना कोई सत्ता का विरोध नहीं है। प्रेस की स्वतन्त्रता को बल देता हुआ यह फैसला ऐतिहासिक तो है लेकिन इसके साथ ही प्रेस को अपनी सीमाओं, मयार्दाओं तथा अधिकार क्षेत्र में रह कर अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना भी उतना ही आवश्यक है।

यह सही है कि मीडिया विचारों के आदान-प्रदान का एक सशक्त माध्यम है। यह व्यक्ति एवं निकायों को उनके कार्यों और हकों के लिए आवाज देता रहता है। मीडिया आम आदमी की आवाज है जो सामान्य व्यक्ति को सूचनाओं तथा समाचारों के साथ अभिव्यक्ति का एक सहासिक एक मंच प्रदान करता है। मीडिया संवैधानिक व्यवस्था पर नजर रख कर प्रहरी का कार्य करता है लेकिन राष्ट्रीय चरित्र तथा नैतिकता की दृष्टि से वर्तमान में मीडिया को भी अपना आत्म अवलोकन तथा आत्म विश्लेषण कर स्वयं में कुछ प्रश्नों का उत्तर ढूंढने का प्रयास करना चाहिए ताकि उसका सम्मान, गरिमा तथा विश्वसनीयता बनी रहे। वर्तमान में क्या यह सत्य नहीं है कि आज देश की जनता हर रोज फेक न्यूज का शिकार होकर गुमराह होती है। क्या यह सत्य नहीं है कि मीडिया का भी राजनीतिकरण हो गया है? क्या यह भी सत्य नहीं है कि टीवी चैनल एवं समाचार पत्र राजनैतिक विचारधाराओं से प्रभावित हैं? क्या यह भी सत्य नहीं है कि आज मीडिया को गोदी मीडिया पुकार कर मीडिया का उपहास उड़ाया जाता है? क्या यह सत्य नहीं है कि सुनियोजित तरीके से राष्ट्रीय, सामाजिक तथा विकासात्मक मुद्दों से हटकर जनता का ध्यान भटकाया जाता है? क्या यह भी खुला सत्य नहीं है कि बड़े से बड़े राजनैतिक, सुरक्षा, राष्ट्रीय तथा संगीन मामलों का कानून के दायरे तथा न्यायालय में जाने से पहले ही मीडिया ट्रायल हो जाता है? मीडिया हाउस बड़े-बड़े धन्ना सेठ चलाते हैं। उनकी तथा राजनैतिक दलों की अनुमति के बिना कुछ भी नहीं छप सकता। पेड न्यूज का बोलबाला हो गया है। र्तमान में घृणा, अपराध, झूठे आरोप, गलत चित्रण, चरित्र हनन तथा फर्जी समाचार आदि के कारण बहुत से मुकद्दमे न्यायालयों के सामने आए हैं। मीडिया को राष्ट्र तथा समाज के सामने बिना पक्षपात तथा भेदभाव से सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करनी चाहिए, नहीं तो जनता गुमराह ही होती है। इससे मीडिया की गरिमा एवं विश्वसनीयता कम होती है। इसमें कोई संदेह नहीं कि देश में लोकतंत्र के चौथे स्तंभ मीडिया की स्वतंत्रता के बिना मजबूत एवं स्वस्थ लोकतंत्र का चलना संभव नहीं है

## संक्षिप्त खबरें

### मारपीट में फरार अभियुक्त को किया गया गिरफ्तार

मधुबनी/रहिका जिले के रहिका थाना अंतर्गत सुगौना गांव में लगभग तीन वर्ष पूर्व हुए मारपीट मामले में फरार चल रहे एक अभियुक्त को सप्ता स्थित पोल स्टार स्कूल के पास से गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तार अभियुक्त बद्दुजामा उर्फ संटू पिता स्व0 अब्दुल हमीद सकिन सुगौना थाना रहिका जिला मधुबनी को रहिका पुलिस को वर्षों से गिरफ्तारी को तलाश थी। अभियुक्त को कांड के अनुसंधान कर्ता मोहम्मद मोइन एवं चौकीदार सहित अन्य सशस्त्र बल के सहयोग से गिरफ्तार कर लिया गया। उक्त जानकारी थाना अध्यक्ष राजकिशोर कुमार ने दी।

### जीनियस स्टडी प्वाइंट में मनाया गया पांचवां वार्षिक उत्सव सह दीक्षांत समारोह

मंसूरचक, बेगूसराय। प्रखंड के समसा एक पंचायत के वार्ड संख्या 12 स्थित जीनियस स्टडी पॉइंट का सोमवार को वार्षिकोत्सव सह सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि एएसआई अशोक कुमार, पत्रकार संघ के अनुमंडल सचिव आशीष भूषण दत्त झा, शिक्षाविद् नंदकिशोर सिंह, मध्य विद्यालय समसा के सहायक शिक्षक धीरज कुमार झा ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर केक काटकर किया। बच्चों ने स्वागत गान, स्वागत भाषण, शिक्षा से बच्चों को जोड़ने पर लोगों का ध्यान आकर्षित किया गया। शिक्षाविद् नंदकिशोर सिंह ने कहा कि छात्र-छात्राओं को पढ़ाई के साथ अपनी संस्कृति को भी नहीं भूलना चाहिए। बड़ों का आदर व छोटों से प्यार करना चाहिए। शिक्षक धीरज कुमार झा ने कहा कि आज के बच्चे कल के देश का भविष्य हैं। बच्चों को मेहनत कर देश का भविष्य संवारने में अपना योगदान देना चाहिए। संस्था के डायरेक्टर राजन कुमार ने अतिथियों का स्वागत किया। मंच संचालन मो. एकलाख ने किया। अतिथियों ने मैट्रिक परीक्षा और प्लस टू में प्रथम स्थान आने वाली खुशी कुमारी सहित अन्य छात्र-छात्राओं को मैडल और बैग देकर सम्मानित किया। उच्च स्तरीय अंक प्राप्त करने वाले दस छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। जो अबतक के लिए अतुलनीय कार्यक्रम बच्चों के बीच आयोजित की गई है। डाक्टर सुमन कुमार गुप्ता ने कहा कि बच्चे अच्छा करते हैं तो हम लोगों का नैतिक कर्तव्य है। परीक्षा देने के बाद बच्चों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के बाद उन्हें सम्मानित करना चाहिए। ताकि और बच्चों पर प्रभाव हो। पत्रकार संघ के अनुमंडल सचिव आशीष भूषण दत झा ने कहा कि इस संस्था में पांच पाण्डव की तरह राजन, कन्हैया, प्रभाष, निवास झा, विजय शिक्षा अलख जगाने का काम कर रहे हैं। जिनका मंच के माध्यम से सम्मान करता हूं। हम सबों की पहचान पढ़ाई है। शिक्षा, संस्कृति की पहचान है। यहां के बच्चे पढ़ाई के साथ खेलों में भी नाम रोशन कर रहे हैं। समसा में स्थापित यह संस्था जिला और राज्य में आने वाले समय में पहचान रखने का काम करेगा। अभय मिश्रा ने कहा कि यह संस्था इस क्षेत्र के लिए किसी गौरव से कम नहीं है। उन्होंने मैट्रिक परीक्षा और प्लस टू में छात्राओं के द्वारा बाजी मारी जाने पर भी छात्रों की बेहतर की प्रशंसा की। मौके पर नंदन कुमार, विजय, कुमार रामप्रवेश समेत अन्य उपस्थित थे।

# पुलिस का काम आज के परिपेक्ष में बहुत ही चुनौतीपूर्ण : डीआईजी

प्रात : किरण संवाददाता

बेगूसराय। आज के परिपेक्ष में पुलिस का जो काम है, वह बहुत ही चुनौतीपूर्ण है। लोगों को पुलिस से बहुत अपेक्षाएं और उम्मीदें बढ़ रही है। इसके लिए पुलिस को लगातार प्रोफेशनल अपने काम करने की शैली, अपनी शरीर के फिटनेस, मानसिक फिटनेस लगातार उन्नत करने की जरूरत है। यह बातें बेगूसराय के डीआईजी बाबूराम ने सोमवार को बीएमपी 8 के 59वें स्थापना दिवस समारोह पर बीएमपी 8 व 19 वाहिनी के पुलिसकर्मियों को संबोधित करते हुए कही।डीआईजी ने कहा कि पहली बार उन्हें बीएमपी 8 में आने का मौका मिला तो देख रहा हूं कि इस वाहिनी में इंफ्रास्ट्रक्चर बहुत ही बढ़िया है। उन्होंने कहा कि जवान तमाम पदाधिकारी के लिए एक अच्छा अवसर भी है कि यहां पर आधारभूत संरचना का उपयोग करते हुए खुद को फिटनेस रख सकें। शारीरिक, मानसिक रूप से एक्सरसाइज करने के लिए खेलकूद में भाग लेते हैं।डीआईजी ने बीएमपी 8 के जवानों को उम्दा परेड का प्रदर्शन करने को लेकर बधाई दी और कहा कि आज ही के दिन वर्ष 1964 ई. में इस वाहिनी की स्थापना पटना में की गई थी। तब से लेकर आज तक इस वाहिनी ने बहुत ही चुनौतीपूर्ण अवसरों पर अच्छी ड्यूटी का निर्वहन किया है। उन्होंने कहा कि ना केवल राज्य में ड्यूटी लगाई गई, बल्कि राज्य से बाहर जम्मू, कश्मीर में भी ड्यूटी दी गई। बीएमपी आठ के समादेष्टा हृदय कांत ने कहा कि इस वाहिनी के जवान को जम्मू कश्मीर के अलावे भारत पाकिस्तान के युद्ध के समय में भी ड्यूटी लगाई गई थी। उस समय इस वाहिनी के जवान ने जो एक अनूठा उदाहरण पेश किया, वह अमूल्य है। डीआईजी बाबूराम और समादेष्टा हृदयकांत के द्वारा वरीय अधिकारियों का आज्ञा का पालन कर अनुशासित रहकर अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने को कहा। समारोह में अनिस जनार्दन मांझी, हवलदार अस्फाक खां, सिपाही 150 मुकेश कुमार, सिपाही 288 सृष्टि सुमन, लिपिक नमिता कुमारी, सिपाही 364 पारस कुमार मिश्रा, सिपाही 373 अभिषेक कुमार, सिपाही 180 बृजेश कुमार, सिपाही 164 राजीव कुमार, सिपाही 447 अनुज ठाकुर, सिपाही 175 चंदन कुमार, सिपाही 366 मुन्ना कुमार और सिपाही 659 विभा कुमारी को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम के पूर्व मुख्य अतिथि डीआईजी बाबूराम व समादेष्टा हृदय कांत और प्रथम परेड कमांडर इंस्पेक्टर संजय कुमार तीनों ने खुली जीप पर सवार होकर मैदान में परेड का निरीक्षण किया। उसके बाद मुख्य अतिथि ने झंडोत्तोलन कर झंडे को सलामी दी। इसके पूर्व डीआईजी ने बीएमपी शहीद स्थल पर पुष्पांजलि कर अमर शहीद जवानों को सलामी दी तथा पौधारोपण किया। इस स्थापना दिवस पर डीआईजी ने मैदान में आकाश में बलून का झूठे छोडा तथा पुलिसकर्मियों ने जमकर मैदान में पटाखे भी छोड़े। कार्यक्रम के अंत में बीएमपी 8 के डीएसपी निशु मल्लिक ने धन्यवाद ज्ञापन किया तथा मंच का संचालन गोपनीय शाखा के प्रवाचक राधेश्याम झा ने किया। मौके पर बीएमपी 8 की डीएसपी वंदना, बीएमपी 19 के डीएसपी संजय कुमार सुमन के अलावे पुलिसमेंस एसोसिएशन के अध्यक्ष मुकेश यादव, मंत्री धर्मेंद्र कुमार मेहता, कोषाध्यक्ष धनंजय कुमार, जीपी प्रभारी नरेंद्र प्रसाद, अनिल सिंह, हवलदार डीके सिंह, मंटून सिंह, संजय कुमार समेत कई अन्य पुलिसकर्मी भी मौजूद थे।

# निजी नर्सिंग होम संचालक गिरफ्तार : मामला गलत आपरेशन का

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जिले के सकरा थानान्तर्गत बरियारपुर ओपी क्षेत्र में बीते दिनों एक महिला का गर्भाशय के आपरेशन मामले में पुलिस ने निजी नर्सिंग होम संचालक को गिरफ्तार कर लिया है। पिछले दिन पिंकी कुमारी को इसी नर्सिंग होम में गर्भाशय के आपरेशन के दौरान डाक्टर ने उसकी पेशाब की नली काट दी थी।इसके बाद वह महिला जिंदगी और मौत के बीच झूल रही है। आपरेशन के बाद जब महिला की स्थिति बिगड़ने लगी तो आनन-फानन में उक्त निजी नर्सिंग होम संचालक द्वारा महिला को दूसरे जिले के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया था। इसके बाद मामला बिगड़ता हुआ देख निजी नर्सिंग होम संचालक और आपरेशन करनूल वाला डॉक्टर दोनो नौ दो ग्यारह हो गए। : इसके बाद मीडिया में घटना की खबर आने के बाद स्वास्थ्य विभाग भी हरकत में आया और जांच-पड़ताल कर मामला दर्ज करवाया। जांच पड़ताल के क्रम में स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने पाया कि उक्त श्री नर्सिंग होम न तो रजिस्टर्ड है और न ही उसमें काम करने वाले डॉक्टर रजिस्टर्ड हैं। कुल मिलाकर झोला छाप डॉक्टरों की पूरी कहानी पर स्वास्थ्य विभाग ने मुहर लगा दी थी। बरियारपुर ऐपी में मामला दर्ज हुआ। जांच के दौरान निजी नर्सिंग होम संचालक राकेश कुमार रोशन और एक झोलाछाप डॉक्टर का नाम सामने आया। मामले में कार्रवाई करते हुए इस कांड के नामजद अभियुक्त निजी नर्सिंग होम संचालक को बरियारपुर ओपी पुलिस ने धर दबोचा है। पूरे मामले पर पूछे जाने पर डीएसपी पूर्वी मनोज पांडे ने कहा कि बीते दिनों एक महिला का ऑपरेशन के दौरान यूरिन नली काट ली गई थी। इस मामले में पीड़ित परिवार द्वारा निजी नर्सिंग होम संचालक और एक डॉक्टर के खिलाफ केस दर्ज कराया गया था। इस केस का मुख्य अभियुक्त निजी नर्सिंग होम संचालक की गिरफ्तारी हुई है। आपरेशन के बाद पिंकी आज भी पटना के अस्पताल में इलाजरत है और उसके परिवार वाले भगवान से प्रार्थना कर रहे हैं कि जल्द व स्वस्थ होकर घर लौट जाए। लेकिन इसी बीच निजी नर्सिंग होम के संचालक की गिरफ्तारी ने परिवार वालों को थोड़ी राहत दे दी है। साथ ही एक उम्मीद जगी है कि कुछ मुआवजा की राशि मिल सके।

# मक्के की बालियों में दाना नहीं आने से किसान हताश

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जिले के गायघाट प्रखंड के कई गांव के किसान मक्के की बीज खरीद करने में ठगी का शिकार हो गए हैं ।किसानों ने खेत में कड़ी मिहनत कर मक्के की खेती की थी लेकिन बालियां देखने के बाद किसान मायूस हो गये। लक्ष्मण नगर के किसान अरुण सिंह ने बताया की उन्होने नवम्बर माह में ढाई एकड़ खेत में मक्के की बुआई किया था।

अब पौधा से मात्र तीन से चार इंच की बालियां निकल रही है। और दाना भी बहुत छोटा है। बताया कि नवम्बर माह में एक कार से सिडकिंग ऑस्कर 9 कंपनी का कुछ लोग मक्के की बीज बेचने आए थे। और जगह जगह किसानों की नुक्कड़ सभा आयोजित कर ऑस्कर 9 मक्के की बीज की विशेषता बताई।

इसके बाद कई किसानों ने मक्के की बीज खरीद कर खेतों में बुआई किया। लेकीन पौधा से निकले बालियां को देखकर किसानों की पैर तले से मानो जमीन खिसक रही है।

अब क्षति पूर्ति के लिए फकीरा डीह गांव के किसान श्री राम सहनी, लक्ष्मण नगर के अशोक सिंह, कमलेश प्रसाद सिंह, मुन्ना सिंह, विक्रम सिंह, जारंग मलहटोली के विमल किशोर सिंह, जारंग डीह गांव के इंद्रजीत सिंह, मकरंदपुर के संतोष पंडित समेत दर्जनों किसान मक्के की फसल देखकर आहत हैं। पीड़ीत किसानों ने बताया कि मक्के की खेती करने में प्रति एकड़ 18 से 25 हजार रूपए की लागत आई है।

# राज कुमार की पुण्यतिथि आयोजित तुझ-सा लहरों में बह लेता तो मैं भी सत्ता गह लेता

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। तुझ सा लहरों में बह लेता,तो मैं भी सत्ता गह लेता..ईमान बेचता चलता तो मैं भी महलों में रह लेता। बदनाम रहे बटमार मगर,घर तो रखवालों ने लूटा..। गोपाल सिंह नेपाली की इन्ही चर्चित कविताओं के बीच साहित्य भवन कांटी में आज गीतों के राज कुमार गोपाल सिंह नेपाली की पुण्यतिथि मनाई गई।अपने अध्यक्षीय संबोधन में चंद्रभूषण सिंह चंद्र ने कहा कि नेपाली जी कलम की स्वाधीनता के लिए आजीवन संघर्षरत रहे। उन्होंने धारा के प्रतिकूल चल कर साहित्य ,पत्रकारिता और फिल्म उद्योग में उच्च मुकाम हासिल किया। वे छायावादोत्तर काल के विशिष्ट कवि और गीतकार थे। एक ऐसे कवि पर लिखना हमेशा से ही कठिन रहा है जो केवल लिखने में डूबा हो,अपनी उपलब्धियों की कोई चिंता न करता हो कि साहित्यिक दुनिया उसके बारे में क्या सोचती है ? गीतों के राजकुमार नेपाली कलम की स्वाधीनता के लिए आजीवन संघर्षरत रहे। उनकी कविताओं में राष्ट्रवादी चेतना कूट-कूट कर भरी है। पश्चिम चंपारण के बेतिया में जन्मे गोपाल सिंह नेपाली जिनके बचपन का नाम गोपाल बहादुर सिंह था। उत्तर छायावाद के जिन कवियों ने अपनी कविताओं व गीतों की ओर सबका ध्यान आकर्षित किया,उनमें नेपाली का नाम अगली पंक्ति में शामिल है। नूतन साहित्यकार परिषद की ओर से आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि हिंदी व नेपाली भाषा साहित्य में कवि नेपाली ने देश प्रेम,प्रकृति प्रेम व मानवीय भावनाओं का सुंदर वर्णन किया है।

उनकी रचनाओं में समर्पण की भावना भी है व मिलन की कामना भी, रूप का आकर्षण भी है,मन की विह्वलता भी,प्रतीक्षा की पीड़ा भी है व स्मृतियों का दर्द भी है। चंद्रकिशोर चौबे ने कहा कि गोपाल सिंह नेपाली ने कई पत्रिकाओं का संपादन किया। कुछ पत्रिकाओं का संपादन तो उन्होंने सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के साथ भी किया। जिसमें सुधा मासिक पत्र भी शामिल है। मुंबई प्रवास के दौरान उन्होंने करीब चार दर्जन फिल्मों के लिए 400 से अधिक गीत लिखें। ज्योति नारायण सिंह ने कहा कि नेपाली सफल संपादक होने के साथ सफल गीतकार भी थे। उनके रहते वह सम्मान नही मिल सका जिसके वे हकदार थे। नेपाली शोषण मुक्त समाज की स्थापना के पक्षधर थे। राकेश कुमार राय ने कहा कि नेपाली की रचनाओं में समता मूलक समाज के निर्माण को लेकर आशावादिता है। राष्ट्रकवि दिनकर ने भी नेपाली की कविताओं की तारीफ की थी। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों ने नेपाली की तस्वीर पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम में उमेश्वर ठाकुर, नंदकिशोर ठाकुर,अनिल कुमार झा, मनोज मिश्र,रजनीश कुमार, वसंत शांडिल्य,दिलजीत गुप्ता, प्रकाश कुमार आदि उपस्थित थे।

# जयनगर के नए एसडीएम ने संभाला पदभार

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी/जयनगर अनुमंडल पदाधिकारी के रूप में बीरेन्द्र कुमार ने सोमवार को पदभार संभाल लिया। उन्हे बेबी कुमारी ने पदभार सौंपा जबकि बेबी कुमारी का तबादला पश्चिमी चम्पारण बेतिया में वरीय उप समाहर्ता के पद पर हुआ है। पदभार ग्रहण करने के बाद एस डीएम बीरेन्द्र कुमार ने मीडिया से बातचीत करते हुए बताया कि उनकी पहली प्राथमिकता जयनगर की विधि व्यवस्था को कायम रखना होगा। चूंकि यह उनकी पहली पोस्टिंग है। इस नाते बेबी कुमारी ने यहां जो अच्छे कार्य किए है। वे उन्हें आगे बढ़ाएंगे और अनुमंडल से संबंधित सभी मामलों का तत्परता से निपटारा करेंगे।

# मां शीतला की पूजा अर्चना में श्रद्धालुओं की जुटी भीड़

## मेला में मीना बाजार आकर्षण का केंद्र बना

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जिला मुख्यालय से सटे भौआरा हवाई अड्डा में श्री श्री 108 शीतला पूजा समिति हर साल की भाती इस साल भी बड़ी ही धूम धाम पूजा अर्चना साथ में मेला लगाया है पूजा कमिटी अध्यक्ष इंद्रदेव ठाकुर,ने बताया कि भौआरा हवाई अड्डा में हर साल की भाती इस साल भी बड़ी ही धूम धाम से विधि विधान पूर्वक पूजा पाठ किया जाता है। इस पूजा के सचिव शंभू ठाकुर कोषाध्यक्ष माधव कुमार है। यहां पर पूजा में मेले का आयोजन किया गया मेले में जुड़ शीतल के दिन माता शीतला का पूजा किया जाता है दूर दराज से आए लोगों ने हवाई अड्डे मे पतंग उड़ाकर मनोरंजन करते दिखे साथ ही मेले में विभिन्न प्रकार के झूले ब्रेक डांस मौत कुआ मीना बाजार खिलौने आदि खाने पीने का सामान के साथ अन्य प्रकार की सामग्री उपलब्ध है दूर दराज से आए लोग मेले का आनंद उठाते हैं। संध्या में भजन सकीर्तन का आयोजन किया जाता वहीं रात्रि में संस्कृति कार्यक्रम के साथ रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाता है।

# भकुआ पंचायत को स्वच्छ बनाने को ग्रामीणों ने लिया संकल्प

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी/खजौली प्रखंड़ क्षेत्र के कि भकुआ पंचायत सरकार भवन पर सोमवार को पंचायत के मुखिया बिनीता कुमारी के अध्यक्षता में लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान फेज-2 के तहत ठोस एव तरल अवशिष्ट प्रबंधन सह कूड़ादान वितरण समरोह का आयोजन किया गया. मंच संचालन केडी सिंह ने किया. कार्यक्रम का उद्घाटन प्रमुख कुमारी उषा बीडीओ मनीष कुमार मुखिया बिनीता कुमारी जिप सदस्य दीपक कुमार सिंह बीसी राजीव रंजन सरपंच कागती देवी ने संयुक्त रूप से दी प्रज्वलित कर किया. पंचायत प्रशासन की ओर से सभी अतिथियों को मुखिया बिनीता कुमारी के द्वारा पाग दोपता एवं पुष्पमाला से सम्मानित किया गया. इस कार्यक्रम के दौरान प्रमुख कुमारी उषा ने कहा कि लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान का फेज-2 के तहत चतरा गोबरौड़ा पंचायत को स्वच्छ बनाने के लिए चयन किया गया है. जिसमें पंचायत के सभी परिवारों को दो-दो डस्टबीन दिया गया है. सभी लोगों से पंचायत को स्वच्छ बनाने के लिए कूडादान का उपयोग करने की अपील किया गया. पंचायत में एक ई-रिक्सा एवं सभी वार्डो में पैडल रिक्शा दिया गया है. स्वच्छता का कार्य करने के लिए प्रत्येक वार्ड में दो दो स्वच्छता कर्मी एवं पंचायत स्तर पर स्वच्छता पर्यवेक्षक की बहाली हुई है. बीडीओ मनीष कुमार ने कहा कि पंचायत के सभी वार्ड में सभी परिवार को अलग अलग दो डिब्बे में कचरा रखने का निर्देश दिया. उन्होंने कहा कि सुवह में स्वच्छता मित्रों द्वारा कूड़ेदान में रखे कचरा को उठाकर जाएगा. स्वच्छता कर्मी प्रत्येक परिवार से कूड़ा उठाने के लिए 30 रूपया प्रति माह एवं व्यावसायिक प्रतिष्ठानों से 60 से 90 रूपया प्रति माह वसूलेंगे. जीप सदस्य दीपक कुमार सिंह ने कहा कि इस लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान के तहत पंचायत के सभी लोगो को सहयोग करने जरूरी है. पंचायत के मुखिया बिनीता कुमार ने कहा कि पंचायत के 14 वार्ड में अब गंदगी नही फैल कर स्वच्छ रखने को लेकर सरकार द्वारा यह कदम उठाया है. मौके पर मुखिया पति संजय ठाकुर शिक्षक उपेंद्र कुमार सिंह अमरेंद्र कुमार सिंह सुधीर कुमार सिंह, कृष्ण देव यादव रामप्रीत सिंह चंद्र नारायण सिंह चंद्रदेव महतो दीपक कुमार सिंह अमरेश कुमार सिंह सुमित्रा देवी धर्मेंद्र कुमार सिंह संगीता देवी सुनीता कुमारी रीता देवी रीना गुप्ता खुशबू कुमारी गायत्री देवी एवं सभी जनप्रतिनिधि और वार्ड सदस्य मौजूद।

# युवक का संदेहास्पद स्थिति में शव मिलने से मचा कोहराम

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी/खजौली थानाक्षेत्र के मैनापट्टी से महराजपुर जाने वाले मुख्य सड़क पर एक पेड़ के नीचे एक युवक का संदेहास्पद स्थिति में शव मिलने का सनसनीखेज मामला प्रकाश में आया है. घटना रविवार रात की है मृत युवक की पहचान थानाक्षेत्र के कन्हौली गांव के वार्ड 10 निवासी व पेशे से बिजली मिस्त्री वीरेंद्र कुमार सिंह 21 के रूप में हुई है. सोमवार की सुबह जब ग्रामीणों ने शौच को बाहर निकाला ने युवक का शव देख अचंभित रह गया. घटना की सूचना खजौली पुलिस को दी गई. सूचना पर पहुंचे थानाध्यक्ष अजीत प्रसाद सिंह एवं पुलिस अधिकारियों की टीम ने शव को अपने कब्जा में कर लिया. पुलिस ने घटना स्थल ने युवक का शव एवं क्षतिग्रस्त बाइक बरामद किया है. शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल मधुबनी भेजा गया एवं पोस्टमार्टम के बाद शव परिजन को सौंप दिया. मृतक के भाई सत्येद्र कुमार सिंह का कहना है कि वह रविवार की रात करीब 11 बजे बाइक से निकला था. देर रात घर वापस नहीं आया. सोमवार की सुबह उसकी लाश एक पेड़ के नीचे मिलने की सूचना मिली. उन्होंने इस मामले को हत्या बता रहे है. किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा हत्या कर फेक देने का संदेह व्यक्त किया जा रहा है. मृतक के कमर के नीचे काफी जख्म है. वैसे कुछ लोग इसे पेड़ से बाइक टकराने से मौत होने की आशंका व्यक्त कर रहे है. वैसे हत्या है या दुर्घटना इसकी खुलासा पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही पता चल पायेंगा. इस दंदनाक घटना के परिवार सहित पूरे गांव में मातमी सन्नाट पसरा हुआ है. युवक बहुत ही लोकप्रिय व सीधा-साधा युवक था. थानाध्यक्ष अजीत प्रसाद सिंह ने बताया कि इस संबंध में अबतक परिजनों के द्वारा आवेदन नहीं दिया गया है. आवेदन प्राप्त होते ही एफआईआर दर्जकर अग्रेत्तर कार्रवाई।

# शिक्षक सुधीर कुमार वर्मा को पटना में किया गया सम्मानित

प्रात : किरण संवाददाता

बेगूसराय, गढहारा । बिहार सरकार के शिक्षा विभाग की ओर से सोमवार को राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, पटना (एससीइआरटी) में राजकीय सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। इस दौरान शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारी पद्धति की प्रस्तुति करने वाले बेगूसराय जिले के बरौनी टाटा गोडान निवासी शिक्षक सुधीर कुमार वर्मा को सम्मानित किया गया। वही बरौनी प्रखंड के मध्य विद्यालय गढहारा में कार्यरत शिक्षक ने शिक्षक पर्व विद्या अमृत महोत्सव 2022-23 अंतर्गत शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाली दीक्षा एप पर इनोवेटिव पेडागोजी पर माइक्रो इम्प्रोवमेंट प्रोजेक्ट के तहत राज्य स्तर पर सर्व श्रेष्ठ 15 नवाचारी शिक्षकों में अपना स्थान बनाकर पूरे बेगूसराय जिला का नाम रौशन किया था। बेगूसराय जिला से एक मात्र शिक्षक सुधीर कुमार वर्मा का चयन हुआ। यह जिला के लिए अत्यंत ही गौरव की बात है। एससीईआरटी के निदेशक सज्जन आर, संयुक्त निदेशक डॉ रश्मि प्रभा, विभागाध्यक्ष डॉ स्नेहाशीष दास के द्वारा प्रस्तुति पत्र प्राप्त हुआ। मालूम हो कि बिहार से 77 हजार शिक्षकों ने वीडियो अपलोर्ड किया था। जिसमें 38 जिलों से पांच-पांच वीडियो चयन कर राज्य भेजा गया। जहां 15 वीडियो का चयन हुआ। छोटे प्रयास से बड़े बदलाव की आशा को लेकर सुधीर कुमार वर्मा ने बेहतर प्रयास किया। शिक्षक श्री वर्मा ने कहा कि गणित का विषय आम बच्चों को कठिन लगता है। इसे रोचक बनाने के लिए गतिविधि के माध्यम से सिखाया जाय तो बच्चे मन लगाकर सीखेंगे। साथ ही कहा कि कोविड-19 के बाद बच्चों में पढ़ाई के प्रति रुचि बनाये रखने के लिए गणित विषय आधारित नवाचारी पद्धति अपनाया गया। इधर उनके भाई अनिल कुमार वर्मा, प्रो रमेश प्रसाद सिंह, एचएम दिलीप कुमार सिन्हा, विजय कुमार सिंह, शिवशंकर प्रसाद, राकेश रजक, डॉ मुस्तफीज, अंकिता मिश्रा आदि ने हर्ष व्यक्त करते हुए बधाई दी।

# बढ़ती गर्मी और चमकी बुखार से निपटने को लेकर डीएम ने किया बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा ने अपने कार्यालय कक्ष में सभी संबधित विभाग के अधिकारियों एवं स्वास्थ्य विभाग के वरीय अधिकारियों के साथ बैठक कर बढ़ती गर्मी को देखते हुए अभी से ही एईएस/जेई चमकी बुखार से निपटने को लेकर बैठक किया। जिलाधिकारी ने कहा कि स्वास्थ्य विभाग सहित सभी संबधित विभाग अभी से ही सभी तैयारियां पूर्ण कर ले। उन्होंने कहा कि पंचायतवार इसकी सघन मॉनिटरिंग की जायेगी।एम्बुलेंस के अतिरिक्त मुख्यमंत्री ग्राम परिवहन योजना के वाहनों को भी टैग किया जाएगा। जिलाधिकारी ने जिला परिवहन पदाधिकारी को निर्देश दिया कि मुख्यमंत्री ग्राम परिवहन योजना अंतर्गत दिए गए वाहनों एवम उसकी संपर्क नंबर की पंचायतवार सूची उपलब्ध करवाना सुनिश्चित करे ताकि उसे टैग किया जा सके एवम सुदूर गाँव के मरीजों को ससमय आवश्यक उपचार हेतु अस्पताल पहुचाया जा सके। उन्होंने कहा की आशा आंगनबाड़ी सेविका सहायिकाजीविका विकास मित्र आदि के द्वारा घर-घर दस्तक के तहत व्यापक जागरूकता कार्यक्रम चलाया जाएगा। जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि एईएस जेई के सभी आवश्यक दवा एवं उपकरण की उपलब्धता सभी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर हर हाल में सुनिश्चित करा लें। उन्होंने कहा प्राथमिक एवम मध्य विद्यालयो में मध्याह्न भोजन में प्रोटीनयुक्त भोजन की मात्रा बढ़ाई जाएगी। उन्होंने कहा कि किसी भी हाल में कोई भी स्कूल में मध्याह्न भोजन बंद नही होनी चाहिये मध्याह्न भोजन बंद पाए जाने पर संबधित स्कूल के प्रधानाध्यापक पर करवाई की जाएगी। उन्होंने सिविलसर्जन को निर्देश दिया कि एईएस जेई के लिए प्रखंड स्तर पर सुरक्षित बेड की सभी व्यवस्थाओं का जायजा लेकर रिपोर्ट करे। चिकित्सा पदाधिकारी एवं एएनएम की रोस्टर बना लें जो 247 क्रियाशील रहेंगे। उन्होंने कहा की सभी संबधित विभाग आपस मे पूरी तरह से समन्वय बनाकर कार्य करेगे। जिलाधिकारी ने कहा कि मस्तिष्क ज्वर अथवा चमकी बुखार एक गंभीर बीमारी है जिसका अगर समय पर इलाज हो तो मरीज निश्चित रूप से ठीक हो जाता है। उन्होंने कहा कि अत्याधिक गर्मी एवं नमी के मौसम में यह बीमारी फैलती है। 1 से 15 वर्ष के बच्चे इस बीमारी से ज्यादा प्रभावित होते हैं। तेज बुखार आना चमकी आना, दांत लगना ,बच्चे का सुस्त होना, आदि इसके लक्षण हैं। उन्होंने कहा कि सामान्य उपचार एवं सावधानियां से हम चमकी रोग का बचाव कर सकते हैं। अपने बच्चे को धूप से बचाएं गर्मी के दिनों में बच्चों को ओआरएस का घोल अथवा नींबू चीनी पानी का गोल पिलाएं रात में बच्चे को भर पेट खाना खिला कर ही सुलाये। उन्होंने कहा कि यह दैविक प्रकोप नहीं है बल्कि अत्याधिक गर्मी एवं नमी के कारण होने वाली बीमारी है।अतःबच्चे के इलाज में अंधविश्वास या ओझा गुनी का सहारा नहीं ले। तेज बुखार होने पर पूरे शरीर को ताजे पानी से पोछे एवं पंखा से हवा करें ताकि बुखार 100 डिग्री फारेनहाइट से कम हो सके। तुरंत अपने नजदीक के स्वास्थ्य केंद्र से संपर्क करें। डीएम ने कहा कि लोगों में जागरूकता लाकर हम चमकी बुखार के प्रभाव को काफी कम कर सकते हैं इसमें हमारी मुखिया गणों एवं स्थानीय जनप्रतिनिधियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। उक्त बैठक में डीडीसी विशाल राज,सिविल सर्जन मधुबनी,डीपीआर ओ परिमल कुमार,जिला पंचायती राज पदधिकारी शैलेन्द्र कुमार,डीपीएम जीविका सहित सभी संबधित अधिकारी उपस्थित थे।

# सोमवार का दिन रहा सप्ताह का सबसे गर्म दिन,पारा हुआ 40 डिग्री पार

प्रात : किरण संवाददाता

डॉ० राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा से मिली जानकारी के अनुसार आज का दिन अप्रैल महीने में अबतक सबसे गर्म दिन रहा।आज अधिकतम तापमान 40.5 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया।9 बजे दिन से ही लोगों का घरों से निकलना मुश्किल हो गया। 7.4किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने से गर्मी लोगों का शरीर झुलसा रही थी। बीते एक सप्ताह के दौरान प्रतिदिन अधिकतम और न्यूनतम तापमान में लगातार वृद्धि देखी जा रही है।12 अप्रैल को तापमान अधिकतम 37.3,न्यूनतम14.5,13अप्रैल को अधिकतम 38.5,न्यूनतभ17.7,14अप्रैल को अधिकतम 38.5न्यूनतम19 ,15अप्रैल को अधिकतम 38.9 न्यूनतम 18.8 ,16 अप्रैल को अधिकतम 39.5 न्यूनतम 19.7 और आज 17 अप्रैल को अधिकतम 40.5 तथा न्यूनतम 19.8डिग्री सेल्सियस रहा।

## संक्षिप्त खबरें

### तीन कोरोना पॉजिटिव के मिलने से मचा हड़कंप

हवेली खड़गपुर ( मुंगेर)। करोना अनुमंडल क्षेत्र में दस्तक देना शुरू कर दिया है। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के चिकित्सा पदाधिकारी डॉ अखिलेश कुमार ने बताया कि अनुमंडल क्षेत्र के ग्रामीण रोगी का जांच कराया गया था। जांच के दौरान तीन कोरोना पॉजिटिव मिला है कोरोना के तीन पॉजिटिव पाए जाने से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी सहित स्वास्थ्य विभाग में हड़कंप मच गया है। इधर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र हवेली खड़गपुर के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ अखिलेश कुमार ने बताया कि कोरोना के रोगियों के लिए इस सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में 15 बेड की व्यवस्था किया गया है कोरोना रोगी के कमरे में एसी भी लगा दिए गए हैं सभी आशा और सभी अतिरिक्त स्वास्थ्य केंद्र और सभी स्वास्थ्य केंद्रों को अलर्ट पर रखा गया है मोबाइल टीम का गठन भी किया जा रहा है।

### डस्टिन बीन का किया गया वितरण

हवेली खड़गपुर। मुंगेर जिला अधिकारी के निर्देश में अनुमंडल के खड़कपुर प्रखंड के 1 पंचायत तेलियाडीह और टेटिया बंबर प्रखंड के पूर्व पंचायत में डस्टबिन का घर-घर वितरण किया गया।

### पेय जल का घोर संकट ,जल नल योजना नगर परिषद श्रेत्र में टांय -टांय फिस्स

हवेली खड़गपुर। खड़कपुर अनुमंडल क्षेत्र में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में इन दिनों पेयजल का घोर संकट उत्पन्न हो गया है। संबंधित पदाधिकारी शिकवे शिकायत के बावजूद भी जा पागल और जल नल योजना के कनेक्शन को दुरुस्त नहीं करवा पा रहे हैं। खड़कपुर क्षेत्र के सभी सरकारी चापाकल मृत प्रायः हो चुका है। जबकि जल नल योजना सिर्फ शोभा की वस्तु बनकर रह गई है। जल नल योजना पर सरकार की करोड़ों रुपया खर्च के बावजूद भी योजना अधर में अब तक लटका हुआ है। ग्रामीण जनता को शुद्ध पेयजल नसीब नहीं हो पा रहा है कहीं पाइप बिखरा हुआ है तो कहीं पानी सड़क पर बह रहा है नगर परिषद हवेली खड़कपुर वार्ड संख्या 16 कासगंज में जल नल योजना में संवेदक के द्वारा सिर्फ 5 बिछाकर छोड़ दिया गया है गांव के गरीबों को पीने के पानी के लिए मशक्कत करना पड़ता है।

### ट्रक दस फीट गड्ढे में पलटा बाल बाल बचे चालक और उपचालक

संग्रामपुर (मुंगेर)। हिंदी की कई कहावतें सुनी होगी जो जीवन के कुछ अनसुलझे रहस्यों को भी बताती हैं. ऐसी ही एक कहावत है जाको राखे साइयां मार सके न कोय इसका अर्थ यह है कि जिस पर ईश्वर की कृपा दृष्टि होती हैं उसका कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता हैं,ऐसा ही घटना रविवार को देवघर सुलतानगंज मुख्य मार्ग नवगाई- धनकुण्डा के समीप देखने को मिला जब एक ट्रक सुरक्षा दीवार को तोड़ते हुए 10 फीट गड्ढे में जा गिरा,जिसमें सवार चालक और खलासी बाल-बाल बच गये।प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि ऐसा प्रतित होता है कि चालक को अचानक नींद आ गयी होगी जिस कारण से ट्रक 10 फीट गड्ढे में जा गिरा।और चालक खलासी बाल-बाल बच गया।

### भारतीय रेलवे माल गोदाम श्रमिक संघ से जुड़े श्रमिकों का भाग्य होगा उज्जवल

तारापुर ( मुंगेर)। भारतीय रेलवे माल गोदाम श्रमिक संघ की राष्ट्रीय परिषद की बैठक कन्वेंशन हॉल राजगीर में श्रमिकों की विभिन्न मांगों को लेकर हुई चर्चा से लौटकर तारापुर पहुंची भारतीय रेलवे माल गोदाम श्रमिक संघ की महिला कर्मचारी मेधा श्री ने सोमवार को बताया कि भारतीय रेलवे माल गोदाम श्रमिक संघ के राष्ट्रीय महामंत्री अरुण पासवान ने उत्तरप्रदेश ,बंगाल ,झारखंड, हरियाणा ,महाराष्ट्र ,बिहार जैसे राज्यों से आए संघ के सभी सदस्यों से अपील कर कहा कि श्रमिक संघ अपने आप में सरकार है। इसके विस्तार बाद से ही अलग-अलग क्षेत्र में लोगों को नए नए दायित्व के साथ संघ की मजबूती को लेकर नई कार्यकारिणी का गठन होगा । आगे बताया कि भारतीय रेलवे माल गोदाम श्रमिक संघ को सरकारी सेवक घोषित होने को लेकर दो बार रेल मंत्री अश्वनी वैष्णव से संघ के राष्ट्रीय महामंत्री से सकारात्मक बातचीत हुई है। इस मौके पर अन्य कई लोग मौजूद थे

### बीसीए के छात्र परीक्षा फॉर्म भरने को लेकर छात्र धरना पर बैठे

भागलपुर। तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय बीसीए के छात्र परीक्षा फॉर्म भरने को लेकर धरना पर बैठ गये। बीसीए छः सेमेस्टर के छात्रों का आरोप है कि तिलकामांझी विश्वविद्यालय वन, टू, थ्री, फोर का परीक्षा परिणाम घोषित नहीं किया है, और परीक्षा फार्म आवेदन भरने को लेकर तिथि घोषित कर दिया गया है। वहीं सेमेस्टर छः वाले बीसीए के छात्रों को विश्वविद्यालय प्रशासन रेगुलेशन कहकर परीक्षा फार्म भरने नहीं दिया जा रहा है, जबकि पिछले साल परमोटेड छात्रों को भी परीक्षा फार्म भरने का अनुमति मिला हुआ था।

# पुलिस परिवार परामर्श केंद्र में कुल 35 मामले की हुई सुनवाई, 10 का किया गया निष्पादन

## बिछड़े परिवारों को मिलाने की दिशा में बेहतर कार्य कर रहे हैं परामर्श केंद्र

प्रात : किरण संवाददाता

पूर्णिया । पूर्णिया पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर आयोजित होने वाले पुलिस परिवार परामर्श केंद्र में 6 उजड़े हुए घरों को समझा-बुझाकर फिर से बसा दिया गया। प्रत्येक सप्ताह आयोजित होने वाले पुलिस परिवार परामर्श केन्द्र में कुल 35 मामले सुनवाई हुई जिसमें से 10 मामलों को निष्पादित किया गया। डगरूआ थाना क्षेत्र से आयी एक महिला ने शिकायत की कि उसके पति ने दूसरी शादी कर ली है। पति ने बताया कि उसकी बीबी बार-बार मायके चली जाती थी। इससे तंग आकर उसने दूसरी शादी कर ली है। फिर भी पहली पत्नी अपने पति के साथ रहना चाहती है, लेकिन सौतन के साथ नहीं रहना चाहती है। इस पर पति ने तीन महीने का समय मांगते हुए कहा कि नया घर बनाने के बाद

वह पहली पत्नी को अपने साथ लेकर जाएगा। तब तक 3 हजार रूपए प्रति महीना गुजारा भत्ता के रूप में दूंगा। इसका बाउंड बनाया गया। वहीं मरंगा थाना क्षेत्र के हरदा बस्ती से आयी एक महिला ने केन्द्र के सदस्यों को बताया कि उसके पति हमेशा गाली गलौज व मारपीट करता रहता है। इसको लेकर पंचायत भी बैठी फिर भी कोई फैसला नहीं हो सका। केन्द्र के सदस्यों के समझाने बुझाने के बाद दोनों एक साथ रहने को राजी हो गए। बंध पत्र बनाकर खुशी-खुशी अपने घर को विदा हुए। कसबा थानाक्षेत्र के मजगामा बस्ती से आयी एक पति की दो बीबीयां का मामला भी केन्द्र के सदस्यों ने सुनकर निदान किया। केन्द्र के सदस्यों के समझाने के बाद छोटी बीवी ने केंद्र को विश्वास दिलाया की वह अपनी बड़ी सौतन को बड़ी दीदी की तरह मानेगी और कभी कोई शिकायत का मौका नहीं देगी। इसके बाद पति ने दोनों बीबी को रखने को तैयार हो गया। इस मौके पर पुलिस परिवार परामर्श केन्द्र की संयोजिका सह महिला थानाध्यक्ष किरण बाला, सदस्य दिलीप कुमार दीपक, स्वाती वैश्यंत्री, प्रमोद कुमार जायसवाल, रविन्द्र साह आदि उपस्थित थे।

# दुर्गा मंदिर के नवनिर्माण के उपलक्ष्य में भव्य भक्ति जागरण कार्यक्रम आयोजित

## हनुमान जयंती पर शांतिपूर्ण तरीके से निकाली गयी शोभायात्रा हेतु जताया आभार

प्रात : किरण संवाददाता

पूर्णिया/बड़हरा कोठी । प्रखंड मुख्यालय के दुर्गा स्थान चौक पर दुर्गा मंदिर नवनिर्माण के उपलक्ष्य में मध्य रात्रि भव्य भक्ति जागरण कार्यक्रम का आयोजन दुर्गा मंदिर निर्माण समिति व स्थानीय लोगों द्वारा किया गया। कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन अनुमंडल पदाधिकारी धमदाहा राजीव कुमार एवं अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी रमेश कुमार द्वारा बड़हरा थानाध्यक्ष विकास कुमार आजाद, एसआई विष्णुकांत सहित अन्य गण्यमानो की उपस्थिति में फीता काटकर किया गया। उद्घाटन के बाद कार्यक्रम के प्रारंभ में हनुमान जयंती के अवसर पर आयोजित शोभायात्रा के दौरान स्थानीय प्रशासन द्वारा बेहतरीन व व्यापक सुरक्षा इंतजाम के लिए स्थानीय ख्यातिप्राप्त समाजसेवी सह वरिष्ठ कांग्रेस नेता रामानंद

तिवारी उर्फ कल्लू तिवारी द्वारा अनुमंडल पदाधिकारी राजीव कुमार, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी रमेश कुमार, थानाध्यक्ष विकास कुमार आजाद एवं एसआई विष्णुकांत को चुनरी एवं पुष्पगुच्छ प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अनुमंडल पदाधिकारी राजीव कुमार ने हनुमान जयंती के अवसर पर शांति पूर्ण व सुव्यवस्थित शोभायात्रा के आयोजन के लिए बड़हरा वासियों को साधुवाद दिया और आशा व्यक्त किया कि आगे भी सभी धार्मिक आयोजनों को धूमवाम से मनाएं। उन्होंने भक्ति जागरण के आयोजन के लिए आयोजन समिति को धन्यवाद देते हुए कहा कि इससे समाज मे सकारात्मक संदेश जाएगा और धार्मिक आयोजन से जन जन में भक्ति एवं उत्साह का संचार होगा। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए एसडीपीओ रमेश कुमार ने कहा कि यहां सभी धार्मिक आयोजन अच्छे ढंग से सम्पन्न हुआ है और आशा व्यक्त किया कि आगे भी सबकुछ अच्छा ही रहेगा। उन्होंने युवाओं को आगाह करते हुए कहा कि आज कर विभिन्न माध्यमो से धर्म के नाम या किसी अन्य चीज के नाम पर हिंसा फैलाने वाली, उकसाने वाली सामग्रियां परोसी जा रही है। उन्होंने सलाह दिया कि आप सभी इससे बचें। क्योकि उकसाने वाला आपका भला नही चाहता है। उन्होंने युवाओं को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि आप सभी समाज मे शांति स्थापित करने में भागीदार बने। शांति के भागीदार बनें अहिंसा के भागीदार बनें। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बड़हरा थानाध्यक्ष विकास कुमार आजाद ने शांतिपूर्ण रामनवमी एवं हनुमान जयंती स्थानीय ग्रामीणों एवं युवाओं को धन्यवाद देते हुए कहा कि शांतिपूर्ण एवं व्यवस्थित ढंग से किये जानेवाले सभी आयोजनों में प्रशासन का सदा सहयोग मिलता रहेगा। मंदिर नवनिर्माण के उपलक्ष्य में आयोजित भक्ति जागरण में सैकड़ों श्रद्धालुगण रात भर भक्ति संगीत में गोता लगाते रहे। कार्यक्रम के सफल आयोजन में मंदिर निर्माण समिति के सभी सदस्य, कांग्रेस सेवा दल के प्रदेश अध्यक्ष अमित कुमार, रामानंद तिवारी उर्फ कल्लू तिवारी, अवधेश पोद्दार, धनंजय कुमार, बाबुल तिवारी सहित अन्य का काफी योगदान सराहनीय रहा।

# अग्निपीड़ित परिवारों के बीच पूर्व विधायक ने राहत सामग्री का किया वितरण

प्रात : किरण संवाददाता

रूपौली (पूर्णिया) । रूपौली विधानसभा के पूर्व लोजपा विधायक शंकर सिंह ने अपनी उदारता और मानवता का परिचय देते हुए अग्निपीड़ितों के बीच राहत सामग्री का वितरण किया। राहत सामग्री में सूखा राशन के साथ साथ पीड़ित सभी परिवार के सदस्यों को पांच साड़ी, लूंगी, धोती आदि वस्तुओं का लाभ अपने निजी कोष से प्रदान किया गया। मौके पर पूर्व रूपौली प्रमुख संजय सिंह, बसन्तपुर पंचायत के उप मुखिया मुन्ना झा, गोड़ियर पट्टी श्रीमाता पंचायत के उपमुखिया सह वार्ड सदस्य संघ के जिलाध्यक्ष सुमन कुमार, समाजसेवियों में जय

नारायण मंडल, सोनू सिंह आदि सहित अग्नि पीड़ित परिवार के सदस्य और बसन्तपुर पंचायत के ग्रामीण बुद्धिजीवी उपस्थित थे। अग्नि पीड़ित परिवार के लोगों ने अपनी आपबीती बयां करते हुए पूर्व लोजपा विधायक शंकर सिंह को अवगत कराया कि हम सभी महादलित परिवार को अभी तक मूलभूत सुविधाओं से सरकारी मुलाजिम द्वारा कोसों दूर रखा गया है। जिस राज्य सरकार की जमीन पर हमलोगों का आशियाना अग्नि देवता के भेंट बीते दिनों चढ़ा उसका बासगीत पर्चा तक अंचल कार्यालय रूपौली से नसीब नहीं हुआ है जिसके परिणामस्वरूप सरकार द्वारा द्वारा दी जानेवाली सभी सुविधाओं से आज तक वंचित रहना पड़ा है।

बता दें कि बीते बुधवार के दिन बसन्तपुर पंचायत के वार्ड 10 और 11 पंचायत सरकार भवन के समीप खाना बनाने के दौरान अचानक आग लग गई थी। जिसमें देखते ही देखते 24 परिवारों का कच्चा बना आशियाना जलकर राख हो गया था। सभी अग्नि पीड़ित महादलित परिवार के बताए गये थे। घटना के तत्काल बाद ही अंचलाधिकारी रूपौली राजेश कुमार अधिनस्थ हल्का कर्मचारी सह अंचल निरीक्षक संजीव कुमार सिंह के साथ पहुंच स्थिति का जायजा लेते हुए पीड़ित परिवार के क्षति का आकलन कर पीड़ितों की सूची बनाई। जिस सूची में 24 परिवार को शामिल किया गया। जबकि शुक्रवार को आपदा राहत कोष कि अनुग्रह राशि से 13000 रुपए का चेक मात्र 21 परिवारों के बीच पूर्णिया सांसद संतोष कुमार के हाथों वितरण करवाया गया। अनुग्रह राशि वितरण कार्यक्रम के दौरान अनुमंडल पदाधिकारी धमदाहा राजीव कुमार, प्रखंड विकास पदाधिकारी रूपौली परशुराम सिंह मौजूद थे।

# दो मुख्य सड़क जर्जर, पैदल चलने में भी लोगों को हो रही परेशानी

प्रात : किरण संवाददाता

पूर्णिया/ कसबा । दो एनएच को जोड़ने वाली मुख्य सड़क एनएच 57 और सबदलपुर कोपाकट्टी से डगरुआ तक एनएच 31 सड़क काफी जर्जर हो चुकी है। इस सड़क से आवागमन के लिए राहगीर पैदल चलना भी पहाड़ चढ़ने के बराबर सा लग रहा है।

चार चक्के व दो चक्के वाहन का क्या कहना जब जर्जर सड़क से आवागमन करते वाहन पर बैठे लोगों को हिचकोले से पेट समेत शरीर अन्य अंग दर्द से कहरा हो उठते है। राहगीर को इस जर्जर सड़क से गुजरना मोत का दावत देने जैसा लगता है। हालांकि यहां के ग्रामीण पंचायत समिति सदस्य दिलीप प्रसाद साह, पैक्स अध्यक्ष प्रदीप महलदार, नाथु साह, संजीव प्रसाद बिहारी, पूर्व समिति हरिलाल यादव, राजेंद्र प्रसाद यादव, महावीर साह आदि ने बताया सड़क की गड्ढेनुमा व जर्जर सड़क पर जब आवागमन करते है तो रूह कांप जाते हैं। यह मुख्य सड़क है। यह कसबा, बायसी, पूर्णिया तथा अमौर विधानसभा को जोड़ती है।

इस सड़क का निर्माण सांसद के ओर से की गई थी। इस सड़क का मरम्मती हुई लेकिन मरम्मती के नाम से खानापूर्ति की गई जिस वजह से सड़क जल्द ही जर्जर व गड्ढेनुमा हो गई। अब यह सड़क चलने का लायक नहीं है।

जबकि इस सड़क के बारे में स्थानीय प्रतिनिधि समेत विधायक व सांसद से कई दफा मांग की लेकिन सड़क की मरम्मती मे ग्रहण सा लग गया।सड़क मरम्मती तो दूर की बात सड़क को देखना मुनासिब नहीं समझे। ग्रामीणों ने कहा है कि अगर सड़क मरम्मती कार्य एक माह के भीतर नहीं हुई तो धरना स्थल पर बैठकर प्रदर्शन करते हुए मुख्य मार्ग आवागमन बाधित कर देंगे। इसके लिए स्थानीय जनप्रतिनिधि व प्रशासन जवाब होंगे।

# डा. लक्ष्मीनारायण सुधांशु की मनायी गई 49वीं पुण्यतिथि

प्रात : किरण संवाददाता

पूर्णिया । शहर के कला भवन परिसर में कला भवन के संस्थापक और बिहार विधानसभा के अध्यक्ष रहे डॉ लक्ष्मीनारायण सुधांशु की 49 वी पुण्यतिथि मनाई गई। सर्वप्रथम उनके तैलचित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। इस मौके पर वक्ताओं ने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा की सुधांशु जी एक स्वतंत्रता सेनानी के रूप में भी अपनी अग्रणी भूमिका निभाई थी और आजादी के बाद भारत के नवनिर्माण में भी उनका बड़ा योगदान था।

कला, साहित्य और संस्कृति के प्रति उनकी रुचि इतनी अधिक थी कि उन्होंने कला भवन के निर्माण में अपनी भूमिका का निर्वहन किया था। एक विधानसभा अध्यक्ष के रूप में अपनी कर्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी की जो मिसाल छोड़ी उसे आज भी याद किया जाता है। वक्ताओं ने कहा कि कला के प्रति प्रेम रखने वाले एक साहित्यकार के रूप में भी अपने को स्थापित

करने का कार्य किए थे। समतामूलक समाज की स्थापना की दिशा में हमेशा प्रयासरत रहते थे। आज के दिन उनके बताए हुए मार्ग पर चलने की शपथ लेने की आवश्यकता है। पूर्णिया कॉलेज के स्थापना में भी उनका बहुमूल्य योगदान था। ऐसे महामानव को याद कर आज हर व्यक्ति अपने को गौरवान्वित महसूस करता है।

इस मौके पर डॉ देवी राम, रामनारायण सिंह, रंजन सिंह, अधिवक्ता गौतम वर्मा, प्रियव्रत नारायण सिंह, प्रमोद नारायण सिंह, जयवर्धन सिंह, दीनानाथ सिंह, सत्यभामा सिंह, स्नेहा सिंह, प्रतिमा सिंह, मीनाक्षी सिंह, शालिनी सिंह, राजवर्धन सिंह, यशवर्धन सिंह आदि ने पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें याद किया।

# राजद जिलाध्यक्ष ने मेयर को सौंपा ज्ञापन

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर । कुछ दिन पूर्व नगर निगम मुंगेर द्वारा होल्डिंग टैक्स में बेतहाशा वृद्धि को शिघ्र वापस लेने की मांग को लेकर जिला राजद मुंगेर का एक प्रतिनिधिमंडल जिला राजद मुंगेर के अध्यक्ष देवकीनंदन सिंह के नेतृत्व में मुंगेर नगर निगम के मेयर श्रीमती कुमकुम देवी एवं डिप्टी मेयर मोहम्मद खालिद हुसैन से मिलकर उन्हें मांग पत्र देकर बढ़े टैक्स को शीघ्र वापस लेने की मांग किया है प्रतिनिधिमंडल ने मेयर एवं डिप्टी मेयर से कहा कि पूर्व में ही नगर निगम का टैक्स बढ़ा हुआ था जिससे खास के साथ-साथ आम नागरिक भी परेशान था और अब जब नगर निगम द्वारा 2022 एवं 2023 के घाटा की पूर्ति हेतु एकाएक होल्डिंग टैक्स में बेतहाशा वृद्धि करना उचित नहीं है इन नेताओं ने कहा कि

निगम का काम वहां के कर्मचारियों के माध्यम नहीं करा कर बिचौलियों के माध्यम से ठेका पर काम कराने के कारण फिजूल खर्चा में बेतहाशा वृद्धि हुआ है जिसका भार सीधे जनता पर होल्डिंग टैक्स में वृद्धि कर देना उचित नहीं है। इन नेताओं ने सरकारी बस स्टैंड का भवन जो काफी जर्जर हो चुका है वह कभी भी ध्वस्त हो सकता है जिससे जाल माल का भारी नुकसान हो सकता है, अतः जीर्ण शीर्ण भवन को शीघ्र ध्वस्त कर उसके जगह नया भवन बनाया जाए जिससे बस यात्रियों के साथ-साथ वहां के कर्मचारियों की भी सुरक्षा हो सके। प्रतिनिधिमंडल ने शहरी क्षेत्र में महिलाओं की शौचालय की असुविधा को देखते हुए शहरी क्षेत्र में शीघ्र ही महिला शौचालय निर्माण कराने की मांग नगर निगम प्रशासन से किया है। प्रतिनिधिमंडल में जिला राजद मुंगेर के अध्यक्ष देवकीनंदन सिंह के आलावे, राजद नेता नरेश सिंह यादव जिला राजद मुंगेर के उपाध्यक्ष प्रोफेसर विनय कुमार सुमन एससी एसटी प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष अशोक रजक, अधिवक्ता अनिल कुमार भूषण, जमालपुर राजद प्रखंड अध्यक्ष मोहम्मद कौसर फैयाज शामिल थे।

मेयर एवं डिप्टी मेयर ने प्रतिनिधि मंडल को यह आश्वासन दिया की बोर्ड की शीघ्र बैठक बुलाकर इन समस्याओं को दूर कर मुंगेर नगर निगम की जनता को टैक्स वृद्धि से निजात दिलाया जाएगा।

### समन्वय समिति के सदस्यों व विभागीय पदाधिकारियों के साथ जिलाधिकारी की बैठक

भागलपुर। समाहरणालय स्थित समीक्षा भवन में जिलाधिकारी सुब्रत सेन की अध्यक्षता में समन्वय समिति की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में जिले के सभी विभागों के पदाधिकारी व कर्मी मौजूद थे। बैठक के दौरान धान अधिप्राप्ति, बाढ़ व स्मार्ट सिटी के अंतर्गत चल रही योजना और गर्मी के दौरान लू से बीमार होने वाले मरीजों के लिए अस्पतालों में किस तरह की व्यवस्था की गई है, उक्त बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा की, साथ ही गर्मी के समय में भूजल स्तर में लगातार गिरावट होने से आम लोगों को होने वाली पानी की समस्या से कैसे निपटा जाए। वही जिलाधिकारी ने जिले में लगातार बढ़ रही अगलगी घटना को लेकर पीड़ित परिवार के लोगों के बीच हो रही परेशानियों से किस तरह की मदद पहुंचाई जानी है।

# ग्रामीण क्षेत्रों में खिलाड़ियों में प्रतिभा की कोई कमी नहीं, सरकार कर रही अनदेखी : पप्पू यादव

प्रात : किरण संवाददाता

पूर्णिया/ केनगर । चम्पानगर नगर पंचायत के फुटबॉल मैदान में युवा संघ चम्पानगर द्वारा आयोजित राजा कृत्यानंद सिंह टी- 20 क्रिकेट टूनार्मेंट का फाइनल मैच अररिया जिले के रानीगंज प्रखंड के कालाबलुआ तथा चम्पानगर के बीच खेला गया जिसमें चम्मानगर टीम विजयी हुए। फाइनल मैच में मुख्य अतिथि जाप सुप्रीमो सह पूर्व सांसद राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव ने विजेता तथा उपविजेता टीम को ट्राफी देकर सम्मानित किया। मौके पर जाप सुप्रीमो ने खेल की महत्ता को बताते हुए इसे योग से जोड़ा। उन्होंने कहा खेल योग हीं है। खेल से शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है। परन्तु

खेल के क्षेत्र में सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयास पर अपनी नाराजगी जताई। उन्होंने कहा ग्रामीण क्षेत्रों में भी प्रतिभावान खिलाड़ी हैं लेकिन सरकार इनकी अनदेखी कर रही है। उन्होंने केन्द्र सरकार की निति एवं नियति पर जमकर हमला बोला। पूर्व सांसद ने कहा केन्द्र सरकार बावा साहब भीमराव अम्बेडकर के संविधान को बदलने का प्रयास कर रही है। उन्होंने बिहार सरकार द्वारा लागू शराबबंदी कानून को विफल बताया। इधर फाइनल मैच में कालाबलुआ की टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। कालाबलुआ की टीम ने निर्धारित 20 ओवर में सात विकेट गंवाकर 181 रन बनाए जबकि विजयी चम्पानगर की टीम ने 17 ओवर में छः विकेट गंवाकर 185 रन बनाए। मैच में कॉमेन्टेटर की भूमिका बमबम मिश्रा एवं बिट्टू कुमार निभा रहे थे। वहीं मनोवर अली एवं दिलीप श्रीवास्तव अम्पायरिंग कर रहे थे। विजेता तथा उपविजेता टीम को नगर पंचायत चम्पानगर के मुख्य पार्षद प्रतिनिधि निर्भय कुमार सिंह के द्वारा 21 हजार तथा 11 हजार रुपए नगद पुरस्कार दिया गया। मौके पर बनेली राज परिवार के प्रेमानंद सिंह, कान्तानंद सिंह, मृदुला सिन्हा उपस्थित थे।

### निकटवर्ती ग्रामीण विद्यालयों में सीलिंग फैन, ब्लैक बोर्ड, स्कूल बैग व पठन-पाठन सामग्री का किया वितरण

भागलपुर। एनटीपीसी कहलगाँव की स्वंयसेवी संस्था सृष्टि समाज द्वारा संस्था की अध्यक्षा रूपाली सिन्हा के नेतृत्व में सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत भीषण गर्मी को देखते हुए स्कूली बच्चों एवं शिक्षकों के सुविधा हेतु प्राथमिक विद्यालय जगरनाथपुर मिलकी, एवं प्राथमिक विद्यालय जहानाटीकर स्कूल प्रबंधन को सीलिंग फैन, स्टैंड फैन, पढ़ाई हेतु ब्लैक बोर्ड, एवं बच्चों के बीच स्कूल बैग व पठन पाठन सामग्री का वितरण किया। इस मौके पर अपने संबोधन में सृष्टि समाज संस्था की अध्यक्षा रूपाली सिन्हा ने कहा कि शिक्षा का अवसर हर बच्चों को बराबर मिले, इसके लिये एनटीपीसी संवेदनशील है, तथा इसके लिये यथासंभव प्रयासरत भी है। नैगम सामाजिक दायित्व के तहत जितने भी कार्यक्रम होते हैं, उसमें शैक्षिक संस्थानों के विकास को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। उन्होंने कहा कि बच्चों के विकास से ही समाज का सर्वांगीण विकास संभव है। इस दौरान सृष्टि समाज की वरिष्ठ सदस्या बिन्दु शाहर, चित्रलेखा साहा एवं निशा सिन्हा ने स्कूली बच्चों को अपनी पढाई के साथ-साथ योग व खेल-कूद की गतिविधियों में भी बढ़-चढ़ कर भाग लेने हेतु प्रोत्साहित किया।

# ईद को लेकर शांति समिति की बैठक आयोजित, इफ्तार पार्टी आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

पूर्णिया/केनगर । चम्पानगर ओपी परिसर में आगामी ईद पर्व को लेकर शांति समिति की बैठक एवं इफ्तार पार्टी का आयोजन किया गया। अध्यक्षता ओपी अध्यक्ष ओमप्रकाश ने की। बैठक में चम्पानगर ओपी क्षेत्र के विभिन्न पंचायत से जनप्रतिनिधि व बुद्धिजीवियों ने भाग लिया। बैठक में ओपी अध्यक्ष ओमप्रकाश ने कहा की ईद का पर्व सिर्फ मुस्लिम भाई का ही नहीं बल्कि हम सभी क्षेत्र वासियों का है। जिस तरह से पूर्व में चाहे हिदू का पर्व हो या मुस्लिम का पर्व हो सभी लोग एकजुट होकर एक दूसरे को सहयोग करते आए हैं उसी तरह से हम आपलोगों से उम्मीद करते हैं कि सहयोग करते रहेंगे। उन्होंने कहा कि अफवाह फैलाने वालों की सूचना दीजिए उसपर कार्रवाई की जाएगी। इस दौरान जनप्रतिनिधियों व बुद्धिजीवियों ने ओपी अध्यक्ष को आश्वस्त करते हुए कहा कि इस ओपी क्षेत्र में किसी भी समुदाय का पर्व होता है तो पूर्व से ही हमलोग सहयोग करते आए हैं। हमलोग एकजुट होकर एक दूसरे को सहयोग करते आए हैं और

करते रहेंगे। ओपी अध्यक्ष ने कहा कि पर्व के दौरान उपद्रवियों को बख्शा नहीं जाएगा। इसके लिए अगर किसी भी प्रकार की सूचना मिलती है तो तुरंत कार्रवाई किया जाएगा। वहीं दूसरी ओर ओपी पुलिस द्वारा आयोजित इफ्तार पार्टी में सौ से अधिक रोजेदारों के अलावा हिन्दू समुदाय के लोगों ने एक साथ विभिन्न खाद्य व्यंजनों को ग्रहण कर इफ्तार पार्टी के आयोजन को लेकर ओपी अध्यक्ष की भूरी भूरी प्रसंसा की। उपरांत मुस्लिम समुदाय के रोजेदारों ने एक साथ नवाज अदा कर अपने पैगम्बर से क्षेत्र की सलामती की दुआ की। इस मौके पर पूर्व जिला परिषद सदस्य शुनील मेहता, पूर्व मुखिया विजय प्रकाश गौतम, नगर पंचायत चम्पानगर के मुख्य पार्षद प्रतिनिधि निर्भय कुमार सिंह, समाजसेवी रामकुमार सिंह, पैक्स अध्यक्ष बीरबल कुमार मंडल, रशीद आलम मौजूद थे।

# ईद एवं परशुराम जयंती पर विधि व्यवस्था में खलल पैदा करने वालों पर होगी कड़ी कार्रवाई : डीएम

प्रात : किरण संवाददाता

पूर्णिया । जिला पदाधिकारी ने आगामी पर्व ईद एवं परशुराम जयंती त्योहारों के अवसर पर विधिव्यवस्था के संधारण एवं शांतिपूर्ण एवं सौहाद्रपूर्ण वातावरण में पर्व को संपन्न कराने को लेकर बैठक किया। यात्रा एवं जुलूस के दौरान ऊंचे छातों से पुलिस एवं वीडियोग्राफी द्वारा असामाजिक तत्वों पर रहेगी कड़ी नजर रखने का आदेश जिला पदाधिकारी ने बैठक में दिया। वही उन्होंने कहा की शांति व्यवस्था बनाए रखना प्रशासन का मुख्य उद्देश्य है। प्राप्त जानकारी के अनुसार कुन्दन कुमार जिला पदाधिकारी पूर्णिया की अध्यक्षता में समाहरणालय स्थित सभाकक्ष मेंआगामी ईद एवं परशुराम जयंती को लेकर विधि व्यवस्था संधारण एवं शांति तथा सौहाद्रपूर्ण वातावरण में पर्व संपन्न कराने को लेकर बैठक आहूत की गई। बैठक में सभी अनुमंडल पदाधिकारी ,सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी, थानाध्यक्ष, को निर्देश किया गया कि अपने -अपने क्षेत्र अंतर्गत महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील स्थानों को चिन्हित करते हुए दंडाधिकारी एवं पुलिस पदाधिकारी एवं सशस्त्र बल की प्रतिनियुक्ति करेंगे। सभी अनुमंडल पदाधिकारी, दंडाधिकारी अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी को निर्देश दिया गया कि स्वंय क्षेत्र भ्रमण करते रहेंगे तथा सुनिश्चित करेंगे कि सुरक्षा व्यवस्था एवं करर्वाई के साथ-साथ विधि व्यवस्था कायम रहे। भीड़-भाड़ वाले क्षेत्रों में संबंधित यथा

परशुराम जयंती को लेकर शोभा यात्रा के रूट चार्ट का स्वयं सत्यापन कर रिपोर्ट करेंगे। सभी प्रखंडों में शांति समिति की बैठक करना सुनिश्चित करेंगे। डीजे पूर्ण रूप से प्रतिबंध रहेगा। उन्होंने आगामी पर्व के अवसर पर विधि व्यवस्था को लेकर अब तक के कृत करवाई का भी विस्तृत समीक्षा किया। डीएम ने थानावार समीक्षा के दौरान विधि व्यवस्था के आलोक में अब तक उठाये गए कदमों के सम्बंध में जानकारी प्राप्त किया गया। डीएम द्वारा निर्देश दिया कि धारा 107 के तहत प्राप्त प्रस्तावों पर अधिक से अधिक बॉन्ड डाउन करे ताकि उसका सकारात्मक परिणाम नजर आए। उन्होंने कहा कि सभी अपने-अपने सूचना तंत्र को अधिक से अधिक सक्रिय कर प्राप्त सूचनाओं के आलोक में त्वरित करवाई करें। उन्होंने कहा कि छोटी-छोटी घटनाओं पर भी कड़ी नजर रखे, साथ ही साथ आवश्यकता महसूस हो तो अपने वरीय पदाधिकारियों को शीघ्र सूचित करें। थाना स्तर पर अधिक से अधिक शांति समिति कि बैठक कर जिला मुख्यालय में उसका प्रतिवे

## संक्षिप्त खबरें

### कुलपति ने पदाधिकारियों के साथ किया बैठक, दिये कई निर्देश

छपरा ।जय प्रकाश विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर फारूक अली ने कहा कि आप अपने स्टेट आफ माइंड को बदलिए। जहां के कार्यक्रम पदाधिकारी काम नहीं करेंगे,वहां की यूनिट को दूसरी जगह स्थानांतरित किया जायेगा। उन्होंने कहा कि यदि 100 बच्चे 1 घंटा काम करेंगे तो 100 घंटा काम होगा ।कुलपति ने रिवैम्प के लिए यह मीटिंग बुलाया था ।एन एस एस को लेकर कुलपति बहुत गंभीर दिखे ।कुलपति ने कहा कि प्राचार्य एवं कार्यक्रम पदाधिकारी मिलकर एन एस एस को जितना अच्छा हो बनायें। मंच संचालन प्रोफेसर हरिश्चंद्र समन्वयक राष्ट्रीय सेवा योजना ने किया और धन्यवाद ज्ञापन डॉक्टर शची मिश्रा कार्यक्रम पदाधिकारी ने किया।

### सीएम ने चिराग पासवान की मांगो को माना : राजेश्वर पासवान

आरा। बिहार में हो रही जहरीली शराब से मौत पर लोजपा रामविलास के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान ने पीड़ित परिवार से मिलकर बिहार सरकार से मांग किया था उनके आश्रित परिजनों को मुवाजा दिया जाय ताकि मरने वालो के परिवार को कुछ दिनों के लिए सहारा हो मिल सके, क्योंकि मरने वालो ने तो गलती की जहरीली शराब पीकर ,वे दोषी है लेकिन उन पर आश्रित छोटे छोटे बच्चो का क्या दोष था ? उनके सजा क्यों ? चिराग पासवान ने विगत दिन बक्सर,सिवान सहित पूरे बिहार में शराब से मरने वालो के परिजनों से मिलकर बिहार सरकार से मुआवजा के लिए मांग किया ,था तब सरकार ने सोचने पर मजबूर हो गई तथा बिहार के मुखिया नीतीश कुमार को मुआवजा के लिए घोषणा करना पड़ा। चिराग पासवान ' हमेशा गरीबों की हितों की मुद्दा उठाते है।

### राइस मिल में काम कर रहे एक मजदूर की मौत

बेगूसराय। बलिया थाना क्षेत्र के भवानंदपुर पंचायत अंतर्गत शाहपुर दियारा के 20 वर्षीय युवक की संदिग्ध अवस्था में मौत हो गई। सोमवार की सुबह मजदूर का शव उसके घर पहुंचा। युवक औरंगाबाद के एक राइस मिल में काम करता था। मृतक की पहचान शाहपुर निवासी सुभंकर झा का 20 वर्षीय पुत्र सोहन झा के रूप में की गयी है। घटना के संबंध में बताया जाता है कि सोहन विगत 2 माह पूर्व सरस्वती पूजा के बाद मजदूरी करने औरंगाबाद के एक राइस मिल में गया था। परिजनों ने बताया कि सोहन मिर्गी के बीमारी से ग्रसित था। समय-समय पर उसे झटके भी आ जाते थे। जिसका इलाज चल रहा था। उन्होंने बताया कि रविवार की शाम राइस मिल के मालिक द्वारा फोन पर बताया गया कि सोहन की तबीयत खराब हो गयी है। जिसपर उसे घर पहुंचा देने को कहा गया। जब रविवार की सुबह एक बोलोरो गाड़ी पर लाद कर युवक को उसके घर लाया गया तब युवक को मृत पाया गया। बोलेरो लेकर आये लोग कुछ भी कहने से इंकार कर रहे थे। उन्हें यहां तक भी पता नहीं था कि लड़के की मौत कब और कहां किस हालात में हुई। जबकि शव देख उसकी मां सहित परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल था। शव पहुंचते ही खबर आग की तरह पूरे क्षेत्र में फैल गयी। शव को देखने एवं पीड़ित परिजनों को ढाढस बधाने के लिये आसपास के गांवों के लोग सहित कई जनप्रतिनिधि उसके घर पहुंच सांत्वना दी।

### 47वीं दीक्षांत समारोह आयोजन को लेकर टीएमबीयू की प्रशासनिक तैयारी जोरों पर

भागलपुर। टीएमबीयू में 47वीं दीक्षांत समारोह कार्यक्रम के आयोजन को लेकर व्यापक तैयारी जोरों से चल रही है। कार्यक्रम को लेकर बताया जा रहा है कि टीएनबी कॉलेज स्टेडियम परिसर में आगामी 26 अप्रैल को होने वाले 47वीं दीक्षांत समारोह में बिहार के महामहिम राज्यपाल राजेंन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर शिरकत करेंगे। टीएमबीयू के टीएनबी कॉलेज परिसर स्थित खेल स्टेडियम में करीब 19 सौ डिग्रीधारी छात्रों को राज्यपाल के हाथों डिग्रीयां दी जायेगी, जबकि करीब दो सौ छात्रों को गोल्ड मेडल दिया जाना है। जिसके लिए व्यापक तैयारी चल रही है।

### अंडरपास सड़क, ओवरब्रिज की मांग को लेकर ग्रामीणों ने किया सड़क जाम

नाथनगर (भागलपुर)। मधुसुदनपुर थाना अंतर्गत किशनपुर इलाका स्थित नेशनल हाईवे के तहत फोरलेन निर्माण कार्य जोरों से चल रहा है। उक्त सड़क निर्माण कार्य को लेकर स्थानीय लोगो ने निर्माण कार्य को बाधित कर मुख्य मार्ग के आवाजाही को करीब आधा घंटा तक जाम लगा कर हंगामा खड़ा कर दिया। इस दौरान स्थानीय लोगों ने जमकर स्थानीय प्रशासन के विरुद्ध जमकर नारेबाजी करते हुए हंगामा भी किया। उक्त मार्ग पर सड़क हादसों का शिकार न हो साथ ही सड़क दुर्घटना पर रोक लगे इसके लिए ग्रामीणों की भीड़ अंदर बायपास या ओवरब्रिज सड़क निर्माण किये जाने की मांग कर रहे है।

# सरकार के हर महत्वकांक्षी योजनाओं को आम जनों तक पहुंचाने में कोताही बर्दाश्त नहीं : डीएम

प्रात : किरण संवाददाता

अरवल। जिला पदाधिकारी वर्षा सिंह के द्वारा समाहरणालय सभाकक्ष में जिला स्तरीय पदाधिकारियों के साथ कई योजनाओं को लेकर बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिले के सभी जिला स्तरीय पदाधिकारी प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, अचलाधिकारी, प्रखण्ड पंचायत राज पदाधिकारी एवं कार्यक्रम पदाधिकारी मनरेगा मौजूद थे जिला पदाधिकारी के द्वारा बैठक में सर्वप्रथम माननीय उच्च न्यायालय पटना में एन जे सी एवं सी डब्बलू जे सी वादों की विभाग वार समीक्षा की गई तथा सभी संबंधित पदाधिकारियों को ससमय प्रति शपथ पत्र दायर करने हेतु निदेशित किया गया।

और जिला समन्वयक, लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान अरवल के द्वारा बताया गया कि वित्तीय वर्ष 2022-23 में विभाग द्वारा 39 वेस्ट प्रोसेसिंग यूनिट (हढव) निमार्ण करने हेतु निदेशित किये गये है। जिसमें 22 में अनापति प्रमाण-पत्र अप्राप्त है। इस संबंध में जिला पदाधिकारी द्वारा सभी अंचलाधिकारी को विभागीय निदेशानुसार अनापति प्रमाण-पत्र प्रदान करने हेतु निदेशित किया गया। और दाखिल-खारिज का प्रतिशत कम होने के कारण अंचलाधिकारी कलेर एवं कुर्था को एक पक्ष के अन्दर टारगेट प्राप्त करने हेतु निदेशित किया। सभी अंचलाधिकारी अपने लॉगईन में पेंडिंग केसेस को कम करें साथ ही कर्मचारी लॉगईन में पेंडिंग केसेस की समीक्षा कर निष्पादन करें। जिला मत्स्य पदाधिकारी द्वारा बताया गया कि विभागीय निदेशानुसार 'फिस मार्केट' का निर्माण किया जाना है, जिससे हाईजिनिक कंडिसन में मछली मिले, लेकिन अंचलाधिकारी से अनापति प्रमाण पत्र अप्राप्त है। जिला पदाधिकारी द्वारा सी ओ को विभागीय एन ओ सी देने हेतु निदेशित किया गया।

सहायक निदेशक जिला बाल संरक्षण ईकाई अरवल द्वारा बताया गया कि मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के अबतक 1600 आवेदन लंबित है। इस संबंध में जिला पदाधिकारी महोदया द्वारा सभी प्रखण्ड विकास पदाधिकारी में प्रखण्ड लेवल पर पेंडिंग केसेस में विशेष रूची लेकर पेंडेंसिंग क्लीयर करने हेतु निर्देशित किया गया, ताकि मुख्यमंत्री की महत्वकांक्षी योजना का लाभ आम जनों तक पहुँच सके। आवास योजना के समीक्षा के क्रम में सभी प्रखण्ड विकास पदाधिकारी को आवास योजना में पेंडिंग केसेस को पर्यवेक्षक के माध्यम से ससमय टारगेट अचिभ करने हेतु निदेशित किया गया। कार्यपालक अभियंता पी एच ई डी को एक सप्ताह के अन्दर सभी चापाकल के सर्वे करने हेतु निर्देशित किया। इस संबंध में जिला पदाधिकारी द्वारा निर्देशित किया गया कि सरकार के महत्वाकांक्षी योजनाओं को आमजनों तक पहुँचाना है। किसी भी परिस्थिति में कोताही बर्दाश्त नहीं की जायेगी।

## प्रकोष्ठ में पारा विधिक स्वयंसेवक का समीक्षात्मक बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। जिला विधिक सेवा प्राधिकार भोजपुर के तत्वाधान में अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकार, मिथिलेश कुमार के अध्यक्षता एवं उनके प्रकोष्ठ में पारा विधिक स्वयंसेवक का समीक्षात्मक बैठक किया गया जिसमें आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत दिनांक 13 मई 2023 को लेकर विशेष रूप से चर्चा किया गया तथा पारा विधिक स्वयंसेवक को यह निर्देश दिया गया की विभिन्न न्यायालय में जाकर सुलहनिये बाद में पक्षकार गण को नोटिस तैयार करे। साथ ही यह भी निर्देश दिया गया की भोजपुर जिले के प्रत्येक क्षेत्र में जाकर आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत को लेकर विशेष रुप से प्रचार प्रसार करें तथा जागरूकता शिविर करे,। साथ ही आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत को लेकर मीडिया कर्मी के साथ बैठक किया गया जिसमें मीडिया कर्मी को भी कहा गया कि आप अपने माध्यम से प्रचार प्रसार करें ताकि अधिक से अधिक वाद का निष्पादन हो सके।

## तीन दिवसीय 'आवासीय राजनीतिक प्रशिक्षण' शिविर का आयोजन पर गया जिला की बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

गया। शहर के माड़नपुर बाईपास स्थित आकाश टेक्निकल क्लासेस के बिंदेश्वरी प्रसाद सभागार में राष्ट्रीय लोक जनता दल गया इकाई की एक बैठक रालोजद के वरिष्ठ नेता गोपाल प्रसाद दांगी की अध्यक्षता में की गई हैइस बैठक का संचालन राष्ट्रीय लोक जनता दल के युवा नेता डी. के."डाडेल" ने किया है!

इस बैठक का शुभारंभ बाबा साहब भीम राव अंबेडकर साहब के तैल चित्र पर पुष्पांजलि से की गई है। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य भारत सरकार के पूर्व केंद्रीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री सह रालोजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय उपेंद्र कुशवाहा के आवाहन पर दिनांक 28, 29, एवं 30अप्रैल2023 को बिहार के राजगीर में कार्यकताओं के प्रशिक्षण हेतु तीन दिवसीय "आवासीय राजनीतिक प्रशिक्षण" शिविर का आयोजन किया गया है! जिसकी तैयारी हेतु गया जिला के प्रभारी रणधीर सिंह ने इस बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि चयनित सभी कार्यकताओं का राजगीर में विशेष प्रशिक्षण की तैयारी की गई है। जिसमें राजनीतिक ,सामाजिक बौद्धिक विषय पर भिन्न-भिन्न सत्र में कार्यकताओं को प्रशिक्षण दिया जाएगा साथ ही साथ पार्टी का विस्तार व धारदार एवं मजबूत करने एवं आगामी चुनाव के मद्देनजर विशेष तैयारी पर बल दिया जाएगा !इसमें गया जिला से सैकड़ों कार्यकर्ता विभिन्न प्रखंडों से युवा वर्ग,महिला,अल्पसंख्यक, दलित,महादलित,अति पिछड़ा, एवं सभी धर्म संप्रदाय के लोग राजगीर शिविर में शामिल होंगे उन सभी कार्यकताओं के लिए खाने पीने ठहरने की पूर्ण व्यवस्था की गई है ।इस तैयारी बैठक में रालोजद के वरिष्ठ नेता राम कुमार मेहता ,इमामगंज विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी जितेंद्र पासवान, युवा नेता आकाश दयाल, युवा नेता डी के डाडेल,नगर के पूर्व अध्यक्ष पीयूष गुप्ता, यमुना कुशवाहा,रफीक खान,मो. शाहिद खान,युवा नेता रवि मेहता, सुनील दांगी,दिनेश कुमार,संजय कुमार, योगेंद्र वर्मा,नवल कुमार,प्रो अमित कुमार,नीरज कुमार दांगी, कृष्णा बाबू,विक्रमादित्य कुशवाहा,अनिल मेहता ,बब्बन सिंह, डॉ. अजयंत कुमार अरुण प्रसाद,राहुल कुमार,रजनीकांत, सत्यनारायण ठाकुर सहित पांच दर्जन कार्यकताओं ने बैठक में हिस्सा लिया है।

## फख्र-ए-गजलगोई खिताब से नवाजे गए हिमांशु चक्रपाणि

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। जिले के नवोदित साहित्यकार हिमांशु चक्रपाणि आजकल साहित्य जगत में धूम मचाए हुए हैं. इनके द्वारा रचित उर्दू और फारसी की कुछ गजलें अंतर्राष्ट्रीय स्तर की पुस्तक फख्र-ए- गजलगोई में स्थान पाई हैं। उक्त पुस्तक में दुनिया के दस देशों- अमेरिका, पाकिस्तान, दुबई, जर्मनी, मेलबर्न, बेल्जियम, ऑस्ट्रेलिया, नेपाल एवं हिंदुस्तान के कुछ चुनिंदा गजलकारों की गजलें शामिल की गई हैं। पुस्तक में शामिल सबसे कम उम्र के गजलकार हिमांशु चक्रपाणि को अंजुमन पासबान-ए-हिंदुस्तान नामक संस्था द्वारा फख्र-ए-गजलगोई के खिताब से नवाजा गया। माननीय नितिन गडकरी (केंद्रीय मंत्री, भारत सरकार) ने उक्त पुस्तक के संपादक को सम्मान पत्र प्रदान किया है। महज 20 साल का हिमांशु चक्रपाणि अब तक लगभग 50 गजलों की रचना कर चुके हैं जिनकी रचनाएं बड़े ही आदर के साथ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं एवं पुस्तकों में स्थान पा रही है। चक्रपाणि राष्ट्रीय स्तर की पंजीकृत साहित्यिक संस्था 'शब्दाक्षर' के पूर्व ज़िला अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

वे बतलाते हैं कि यह उपलब्धि उनके पूर्वजों का दिया हुआ उपहार है। अपनी खुशी का इजहार करते हुए चक्रपाणि ने कहा कि साहित्य में इनकी रुचि बचपन से ही थी परंतु मंच नहीं मिलने के कारण अपनी रचनाओं को प्रसारित नहीं कर पाते थे। इन्होंने बताया कि मैं अपने काव्यगुरु शहर के चर्चित साहित्यकार धनंजय जयपुरी जी का शुक्रगुजार हूं जिन्होंने मुझे छंदों की बारीकियां सिखाई एवं विभिन्न मंचों पर काव्य पाठ करने का अवसर प्रदान किया।

## सड़क दुर्घटना में एक व्यक्ति की मौत

प्रात : किरण संवाददाता

करपी (अरवल )सड़क दुर्घटना में एक की मौत ।करपी। निज संवादाता ।करपी इमामगंज पथ पर गुलजारबाग मोड़ के निकट सड़क दुर्घटना में बेलखरी गांव निवासी 40 वर्षीय बृजेश कुमार की दर्दनाक मौत हो गई ।मृतक अपनी लूना गाड़ी से दूध बेचने का कारोबार करते थे। सोमवार को सुबह 7:30 गाड़ी से दूध लेकर करपी जा रहे थे ।इसी बीच विपरीत दिशा से आ रही ट्रैक्टर ने जोरदार ठोकर मारी। जिसके फलस्वरूप यह गंभीर रूप से जख्मी हो गए। हालांकि इस गाड़ी पर पीछे बैठे युवक बेल खरी गांव का सुनील कुमार पूरी तरह सुरक्षित बच गया ।जख्मी स्थिति में घटनास्थल पर उपस्थित लोगों ने इन्हें सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र करपी पहुंचाया जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। इस घटना से आक्रोशित परिजनों एवं अन्य लोगों ने शव को लाकर घटनास्थल पर रख दिया तथा इमामगंज करपी पथ को जाम कर दिया। 3 घंटे तक सड़क जाम रही। जिला परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि सुधीर शर्मा तथा थाना अध्यक्ष दिनेश बहादुर सिंह ने परिजनों एवं अन्य ग्रामीणों से बात कर सड़क जाम समाप्त करवाई। दुर्घटना होते ही ट्रैक्टर चालक गाड़ी छोड़कर घटनास्थल पर ही फरार हो गया। पुलिस के द्वारा ट्रेक्टर को थाने में लगाया गया है। मृतक के शव को अंत्य परीक्षण के लिए सदर अस्पताल अरवल भेजा गया है। मृतक की पत्नी सावित्री देवी के बयान पर इस संबंध में करपी थाने में प्राथमिकी दर्ज करवाई है। जिसमें उन्होंने बताया है कि स्वराज ट्रैक्टर पर ईट लदी हुई थी। ब्लू रंग की ट्रैक्टर को चालक पूरी लापरवाही के साथ चला रहा था। इस क्रम में यह घटना घटी है। पुलिस के द्वारा मामले को दर्ज कर इस संबंध में जांच पड़ताल शुरू कर दी गई है।

# समन्वय सह फॉलो अप बैठक का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। जिला पदाधिकारी सुहर्ष भगत की अध्यक्षता में समाहरणालय सभागार में सभी विभागों का समन्वय सह फॉलो अप बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी, अंचलाधिकारी एवं अन्य प्रखण्ड स्तरीय पदाधिकारी भी उपस्थित रहे। समन्वय बैठक में सभी नगर कार्यपालक पदाधिकारी एवं प्रखंड विकास पदाधिकारियों को जाति आधारित गणना का हाउसहोल्ड सर्वे रिपोर्ट जिला सांख्यिकी कार्यालय में उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया है। जिला सामान्य शाखा प्रभारी को चौकीदार का लंबित एसीपी व एमएसीपी के भुगतान हेतु बैठक की तिथि निर्धारित करने का निर्देश दिया गया। अवर निबंधक, औरंगाबाद एवं दाउद नगर को शत प्रतिशत से ज्यादा राजस्व संग्रहण करने के लिए बधाई दी गई एवं इसके लिए उन्हें पुरस्कृत किए जाने तथा उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की गई। प्रखंड पंचायत राज पदाधिकारी, औरंगाबाद, नबीनगर एवं गोह को शेष बचे वार्ड क्रियान्वयन समिति को गठित करने का निर्देश दिया गया ।इसके अतिरिक्त सभी विभागाध्यक्षों को कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीडन (निवारण) अधिनियम, 2013 के प्रभावी क्रियान्वयन के संबंध में अग्रतर कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया।

डीपीओ आईसीडीएस द्वारा बताया गया कि शून्य से 5 वर्ष तक के बच्चों का आधार पंजीकरण का कार्य करवाया जा रहा है। डीपीओ आईसीडीएस को इसकी पूर्ण विवरणी उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया। इसके अलावा महिला पर्यवेक्षिका के पदों पर अनुबंध पर नियुक्ति के लिए अग्रेतर कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया। जिला पदाधिकारी द्वारा सभी चार्ज पदाधिकारियों को व्यक्तिगत तौर पर 1 से 2 घरों का प्रतिदिन भ्रमण कर जाति आधारित गणना कार्य का पर्यवेक्षण करने का निर्देश दिया गया।

साथ ही जिला सूचना एवं विज्ञान पदाधिकारी एवं आईटी मैनेजर को शत प्रतिशत लॉगिन सुनिश्चित करने एवं डाटा वेरिफाई करने का निर्देश दिया गया। जिला पदाधिकारी द्वारा कार्यपालक अभियंता, लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग को सभी प्रखंडों में चापाकलो को कार्यरत करने हेतु चापाकल मरम्मती दल का रोजाना पर्यवेक्षण करने का निर्देश दिया गया। इस कार्य में सहायक अभियंता एवं सभी कनीय अभियंताओं की भागीदारी सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया। इसके अतिरिक्त जिला पदाधिकारी द्वारा सभी विभागों से उनके विभागीय पत्रों एवं लंबित कार्यों के आलोक में चर्चा की गई एवं लंबित कार्यों को यथाशीघ्र निष्पादित करने का निर्देश दिया गया। इस अवसर पर अपर समाहर्ता आशीष कुमार सिन्हा, सहायक समाहर्ता शुभम कुमार, उप विकास आयुक्त अभ्येंद्र मोहन सिंह, जिला पंचायती राज पदाधिकारी मंजू प्रसाद, डीसीएलआर सच्चिदानंद सुमन, वरीय उप समाहर्ता डा फतेह फैयाज, वरीय उप समाहर्ता कृष्णा कुमार, वरीय उप समाहर्ता अमित कुमार सिंह, जिला कृषि पदाधिकारी रणवीर सिंह, जिला शिक्षा पदाधिकारी संग्राम सिंह, उप निर्वाचन पदाधिकारी मोहम्मद गजाली, जिला सांख्यिकी पदाधिकारी सतीश कुमार, एडीसीपी अनिता कुमारी, श्रम अधीक्षक, कार्यपालक अभियंता भवन निर्माण विभाग एवं वीसी के माध्यम से अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

## छापेमारी अभियान में 2 बाल श्रमिकों को कराया गया मुक्त

प्रात : किरण संवाददाता

अरवल :नियोजन अमित स्वीट्स एंड चार्ट मेन रोड वालिदाद थाना मेहंदिया प्रखंड कलेर जिला अरवल के नियोजन श्री कृष्ण प्रसाद मेन रोड कलेर अरवल में श्रम अधीक्षक अरवल के नेतृत्व श्रम संसाधन विभाग के धावादल द्वारा दुकान होटल गैरेज सहित अन्य संस्थानों से बालश्रम से कार्य कर रहे नियोजन के खिलाफ कार्रवाई करते हुए छापेमारी अभियान चलाया गया, धावादल द्वारा 02 बाल श्रमिकों कार्य करते हुए विमुक्त कराया गया।

साथी बाल श्रम प्रतिषेध एवं विनियम अधिनियम 1986 के अंतर्गत प्रतिष्ठान नियोजन श्री कृष्ण प्रसाद मेन रोड कलेर अरवल में नियोजित अमिता स्वीट्स एंड चार्ट मेन रोड वालिदाद थाना मेहंदिया प्रखंड कलेर जिला अरवल को नियोजित के विरुद्ध एफआइआर दर्ज किया गया जिसमें दोषी पाए जाने पर नियोजन से 20 हजार से 50 हजार तक की राशि जुमार्ना के रूप में वसूल की जाएगी, श्रम अधीक्षक अरवल द्वारा बताया गया एम. सी मेहता बनाम तमिलनाडु सरकार में सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिए गए निर्देश के अनुपालन में दोषी नियोजन से 20000 की राशि वसूल कर बाल श्रमिक पुर्नवास सह कल्याण कोष अरवल में जमा की जाएगी, इसके अलावा विमुक्त किए गए बाल श्रमिक को प्राथमिकी पूनवास राशि के रूप में 3000 प्रदान किया जाएगा एवं मुख्यमंत्री राहत कोष से 25000 की राशि दी जाएगी जो वमुक्त बाल श्रमिक 18 वर्ष की उम्र होने तक बैंक मे डिपॉजिट के रूप में जमा कराई जाएगी, धावादल में धीरज कुमार श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी कलेर, रेनू कुमारी श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी अरवल सदर, लालसा हरज्ञान सिंह श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी करपी एवं पुलिस बल के लोग शामिल रहे हैं।

# हीट स्ट्रोक को लेकर सदर अस्पताल की व्यवस्था सुधारने को ले सल्लू खान ने डीएम को कराया अवगत

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद : अस्पताल में मरीजों के लिए दवाइयों की पूरी तरीके से रखी जाए। चिलचिलाती धूप के साथ भीषण गर्मी का प्रकोप जारी है। गर्मी इतनी बढ़ गई है कि सड़क सन्नाटा हो जा रही है। धूप से घर से बाहर निकलने के लिए लोग परहेज कर रहे हैं। गर्मी और लू का असर सदर अस्पताल में इलाज कराने के लिए मरीज पहुंच रहे हैं जिसको लेकर सोमवार की सुबह से ही समाजसेवी वा कांग्रेस नेता मो. शाहनवाज रहमान उर्फ सल्लू खान ने सदर अस्पताल में भर्ती मरीज के बीच ओआरएस का पाउडर, इलेक्ट्राल पाउडर के साथ मीरनल वाटर का एक लीटर पानी, नीबू पानी, लूज मौसम की विटामिन दवाइयां, मरीजों के साथ साथ उनके साथ आने वाले स्वजनों को भी दिया गया। जिले में मौसम में बदलाव के साथ ही लोग बीमारियों की गिरफ्त में आने लगे हैं। गर्मी, दूषित खानपान, पेय पदार्थों, पानी के असर से उल्टी-दस्त, बुखार, टायफाईड, सर्दी-जुकाम से परेशान मरीज अस्पताल पहुंचने शुरू हो गए हैं। गर्मी में तेजी आने के साथ ही अस्पताल का आउटडोर 400 को पार कर गया है।

दिन-रात के तापमान में दोगुना अंतर, मौसम में उतार-चढ़ाव अगले पांच दिनों तक जारी रहेगा। इस दौरान दिन और रात के तापमान में दोगुना अंतर दिखेगा। इसका प्रभाव लोगों के स्वास्थ्य पर भी पड़ेगा। कांग्रेसी नेता सल्लू खान ने डीएम सोहर्ष भगत को सदर अस्पताल की व्यवस्था को पूरी तरीके से अवगत कराया है। डीएम से मांग किया कि सदर अस्पताल का हिट स्टोक को लेकर स्वयं अपने स्तर से देख लिया जाए। डीएम से मांग करते हुए कहा कि सदर अस्पताल में ओपीडी में आने वाले मरीजों के लू के लक्षण कि जांच करने का निर्देश दिया जाए। वही ओपीडी में मरीजों के बैठने की उचित प्रबंध के साथ ठंडे पेयजल की व्यवस्था, वार्ड में वाटर कूलर, सदर अस्पताल में बेड की संख्या के साथ-साथ आने वाले अस्पताल परिसर में ठंडा पानी की व्यवस्था, लो हिट स्टॉक्स से संबंधित दवाएं एवं व्यवस्था करने मांग की। समाजसेवी संतोष कुमार सिंह, मो. अफरोज, उपेंद्र कुमार, मो. आबिद, प्रकाश कुमार सहित शामिल रहे।

### मानदेय बढाने को ले आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का जंतर-मंतर पर धरना प्रदर्शन

औरंगाबाद/नई दिल्ली। छत्तीसगढ़ राज्य में आंगनबाड़ी कार्यकताओं की मानदेय में बढ़ोतरी कराने के लिए आंगनवाड़ी कार्यकर्ता सहायिका संयुक्त मोर्चा छत्तीसगढ़ द्वारा सोमवार को जंतर-मंतर पर विशाल धरना-प्रदर्शन किया गया ।संगठन के प्रांतीय संयोजक देवेन्द्र पटेल ने आंगनवाड़ी कार्यकताओं एवं सहायिकाओं की न्यूनतम मानदेय बढाकर 21000 प्रतिमाह करने,सरकारी वेतनमान की घोषणा करने,समाजिक सुरक्षा के तहत पेंशन की व्यवस्था करने की मांग किया ।कार्यकम में नेशनल सीनियर सिटीजन एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजकुमार शर्मा,राष्ट्रीय कार्यवाहक अध्यक्ष विद्यानंद चौधरी,महिला कोषांग सचिव अमला कुमारी ने संगठन की मांगों को जायज बताते हुए इसे पुरा कराने में समर्थन एवं सहयोग देने की बातें कही।

## निकटवर्ती ग्रामीण विद्यालयों में पठन-पाठन सामग्री का किया वितरण

प्रात : किरण ब्यूरो।

भागलपुर। एनटीपीसी कहलगाँव की स्वंयसेवी संस्था सृष्टि समाज द्वारा संस्था की अध्यक्षा रूपाली सिन्हा के नेतृत्व में सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत भीषण गर्मी को देखते हुए स्कूली बच्चों एवं शिक्षकों के सुविधा हेतु प्राथमिक विद्यालय जगरनाथपुर मिलकी, एवं प्राथमिक विद्यालय जहानाटीकर स्कूल प्रबंधन को सीलिंग फैन, स्टैंड फैन, पढ़ाई हेतु ब्लैक बोर्ड, एवं बच्चों के बीच स्कूल बैग व पठन पाठन सामग्री का वितरण किया। इस मौके पर अपने संबोधन में सृष्टि समाज संस्था की अध्यक्षा रूपाली सिन्हा ने कहा कि शिक्षा का अवसर हर बच्चों को बराबर मिले, इसके लिये एनटीपीसी संवेदनशील है, तथा इसके लिये यथासंभव प्रयासरत भी है। नैगम सामाजिक दायित्व के तहत जितने भी कार्यक्रम होते हैं, उसमें शैक्षिक संस्थानों के विकास को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। उन्होंने कहा कि बच्चों के विकास से ही समाज का सर्वांगीण विकास संभव है। इस दौरान सृष्टि समाज की वरिष्ठ सदस्या बिन्दु शाहर, चित्रलेखा साहा एवं निशा सिन्हा ने स्कूली बच्चों को अपनी पढाई के साथ-साथ योग व खेल-कूद की गतिविधियों में भी बढ़-चढ़ कर भाग लेने हेतु प्रोत्साहित किया। इस मौके पर प्राथमिक विद्यालय जगरनाथपुर मिलकी स्कूल के प्रधानाचार्य राज रंजन एवं प्राथमिक विद्यालय जहानाटीकर के प्रधानाचार्य कपिलदेव सिंह ने एनटीपीसी कहलगाँव की सृष्टि समाज का धन्यवाद ज्ञापन किया।

## वित्त संबंधी एक-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

पटना। सोमवार को पटना के आर. ब्लॉक स्थित होटल चाणक्या में राज्य स्वास्थ्य समिति, बिहार द्वारा वित्त संबंधी एक-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ 11 बजे राज्य स्वास्थ्य समिति, बिहार के कार्यपालक निदेशक संजय कुमार सिंह द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। उक्त कार्यशाला में वित्तीय प्रबंधन, भुगतान प्रक्रिया, प्रशासन की भूमिका, वैधानिक अनुपालन, वर्तमान वित्तीय वर्ष के बजट आवंटन आदि पर विस्तृत रूप से चर्चा का गई। कार्यपालक निदेशक महोदय द्वारा कार्यशाला में भाग ले रहे क्षेत्रीय लेखा प्रबंधक एवं सभी जिलों के जिला लेखा प्रबंधक को संबोधित करते हुए कहा गया कि नए वित्तीय वर्ष में अपने कार्यक्षेत्र में नई ऊर्जा का संचार करते हुए बेहतर योगदान देने की कोशिश करें साथ ही तय समय सीमा में लक्ष्यों को हासिल करने की भी कोशिश करें।

## भीमराव अंबेडकर जयंती समारोह में जीतन राम मांझी हुए शमिल

प्रात : किरण संवाददाता

करपी (अरवल )डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जयंती पखवाड़ा का आयोजन। प्रखंड क्षेत्र के शहर तेलपा मैदान में बाबा साहेब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जयंती पखवाड़ा के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी ने किया। इस मौके पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि बाबासाहेब ने जो सम्मान दिया उस सम्मान के हम लोग ऋणी है।

इन्होंने भारतीय संविधान में समाज के दलित कमजोर वर्गो के लिए आरक्षण की व्यवस्था की जिसके परिणाम स्वरूप आज काफी उत्थान हुआ है, लेकिन यह काफी कम है। इन्होंने सभी लोगों से आह्वान किया कि अपने बच्चों को अनिवार्य रूप से शिक्षित करें। बिना शिक्षित किए परिवार का एवं समाज का भला नहीं हो सकता है। आजादी के कई दशक बीत गए लेकिन आज भी हम लोग नारे लगाते हैं लेकिन अपने परिवार और समाज की उन्नति कैसे हो इस पर विचार नहीं करते हैं। इन्होंने सभी लोगों के लिए एक समान शिक्षा प्रणाली लागू करने की मांग की। उन्होंने कहा कि चुनाव के समय लोग जाति एवं पैसे के लोभ में आ जाते हैं और वास्तविकता से हटकर अपना मताधिकार का प्रयोग करते हैं ।जिसका खामियाजा भुगतना पड़ता है । स्थानीय विधायक महानंद सिंह ने कहा कि आज लोकतंत्र खतरे में है इसलिए हम लोग सभी को इस पर विचार करने की आवश्यकता है। गरीब लोग अपना पेट काटकर धार्मिक अनुष्ठानों में चंदा देते हैं लेकिन अपने बच्चों को नहीं पढ़ाते हैं ऐसा नहीं होना चाहिए। कुर्था विधायक बागी कुमार वर्मा ने कहा कि अपने आप को बड़े महात्मा कहने वाले आसाराम बापू ,डेरा सच्चा सौदा के गुरु राम रहीम जैसे कई लोग जेल में है। ऐसे पाखंडियों से सावधान रहने की आवश्यकता है। इस मौके पर बाबासाहेब के पौत्र यशवंत राव अंबेडकर, सुमित भंते, राजद प्रदेश सचिव रामाशीष सिंह रंजन, वरिष्ठ नेता राजेंद्र यादव, शहर तेलपा पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि सुरंजन यादव समेत कई लोगों ने अपनी बातें रखी। कार्यक्रम की अध्यक्षता चौहर पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि रविंद्र गोप ने किया।

## आईआईएसईआर भोपाल के शोधकर्ताओं द्वारा विकसित विधि से तैयार सीओएफमेम्ब्रेन पानी से जहरीले मोलेक्यूल अलग करने में सक्षम होंगे

**भोपाल, एजेंसी।** भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान भोपाल के शोधकर्ताओं ने डॉ. अभिजीत पात्रा के मार्गदर्शन में मोलेक्युलर सेपरेशन के लिए पोरस मेंब्रेन बनाने के मामले में बड़ी कामयाबी दर्ज की है। शोधकर्ताओं ने एक अभिनव प्रक्रिया विकसित की है जिससे फ्री-स्टैंडिंग क्रिस्टलीन नैनोपोरस ऑर्गेनिक फिल्में तैयार की जा सकती हैं जो पानी से जहरीले आर्गेनिक सूक्ष्म प्रदूषकों को अलग करने में सक्षम होंगी। अध्ययन के विवरण जाने-माने जर्नल एंजवेन्डे चेमी में प्रकाशित किए गए हैं। यह शोध पत्र डॉ. अभिजीत पात्रा, एसोसिएट प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग, आईआईएसईआर भोपाल और उनके शोध विद्वान श्री अर्कप्रभा गिरी, श्री जी श्री राज और श्री तापस कुमार दत्ता ने मिल कर तैयार किया है। उद्योग जगत में विभिन्न पदार्थों को अलग-अलग करने और शुद्ध करने के लिए मेम्ब्रेन सेपरेशन तकनीक का काफी चलन रहा है। इसके लिए आम तौर पर पोरस मटीरियल्स से मेंब्रेन बनाए जाते हैं। ये मेंब्रेन कितने कारगर होंगे यह निर्धारित करने में इनके छिद्रों का आकार एक महत्वपूर्ण पहलू है। इसलिए वैज्ञानिक वर्षों से विभिन्न प्रकार के पोरस मटीरियल्स पर शोध करते रहे हैं। हाल ही में को वैलेंट आर्गेनिक फ्रेमवर्क (सीओएफ) मेंब्रेन के माध्यम से सेपरेशन की बड़ी संभावना बन कर सामने आया है। शोध की तकनीकी जानकारी देते हुए आईआईएसईआर भोपाल के डॉ. अभिजीत पात्रा ने कहा, ''हमारे निष्कर्षों के आधार पर अलग-अलग आयाम के दो क्रिस्टलीन एनटिटीज़ के बीच परस्पर संरचनात्मक रूपांतरण का नया द्वार खुल गया है। इसमें एक सामान्य परिवेश के कन्फ्राइंड इंटरफेस में डायनामिक को वैलेंट कैमिस्ट्री (डीसीसी) का उपयोग किया गया है।''

## झुनझुनवाला ने टाटा ग्रुप के स्टॉक पर फिर जताया भरोसा, खरीदे 10 लाख शेयर

**नयी दिल्ली, एजेंसी।** स्टॉक मार्केट में बड़ी संख्या में ऐसे भी निवेशक हैं जो कि बड़े इनवेस्टर्स के पसंदीदा स्टॉक पर दांव लगाना पसंद करते हैं। अगर आप भी उन्हीं निवेशकों में से एक हैं। तो आपके लिए अच्छी खबर है। राकेश झुनझुनवाला की पत्नी रेखा झुनझुनवाला ने टाटा ग्रुप की एक कंपनी में अपनी हिस्सेदारी पहले से बढ़ा दी है। बता दें, राकेश झुनझुनवाला के देहांत के बाद रेखा झुनझुनवाला ही उनका पोर्टफोलियो मैनेज कर रही हैं। रेखा झुनझुनवाला ने टाटा ग्रुप की कंपनी टाइटन में निवेश किया है। कंपनी की मार्च की शेयर होल्डिंग पैटर्न के अनुसार उन्होंने 10,50,000 शेयर खरीदे हैं। जिसकी वजह से उनकी टाइटन में अब हिस्सेदारी 0.12 प्रतिशत बढ़कर 5.29 प्रतिशत हो गई है। दिसंबर क्वार्टर तक उनकी कंपनी में कुल हिस्सेदारी 5.17 प्रतिशत थी। गुरुवार को टाइटन के शेयर के भाव 0.31 प्रतिशत लुढ़क कर 2580 रुपये के लेवल पर आ गया है। बीते एक महीने के दौरान टाटा ग्रुप की इस कंपनी के शेयरों में तेजी देखने को मिली है। जिस वजह से पोजीशनल निवेशकों को 5 प्रतिशत से अधिका का फायदा हुआ है। बता दें, शेयर बाजार में कंपनी का 52 वीक हाई 2791 रुपये है।

## भारत, मॉरीशस ने वोस्ट्रो खाता व्यवस्था की समीक्षा की

**नयी दिल्ली, एजेंसी।** भारत और मॉरीशस ने कारोबारी सौदों का निपटान रुपये में किए जाने संबंधी वोस्ट्रो खाता व्यवस्था और भारतीय यूपीआई प्रणाली एवं रुपे कार्ड को लागू करने से जुड़े बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा की है। विदेश सचिव विनय क्वात्रा की शुक्रवार को संपन्न हुई तीन-दिवसीय मॉरीशस यात्रा के दौरान द्विपक्षीय संबंधों की व्यापक समीक्षा की गई। इस दौरान दोनों देशों ने आपसी सहयोग बढ़ाने के बारे में चर्चा की। पोर्ट लुइस स्थित भारतीय उच्चायोग ने कहा कि भारत और मॉरीशस ने फरवरी, 2021 में संपन्न व्यापक आर्थिक सहयोग एवं भागीदारी समझौते से पहलुओं पर भी विचार-विमर्श किया। विदेश सचिव ने बृहस्पतिवार को मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रवींद कुमार जगन्नाथ से मुलाकात की थी और व्यापार, निवेश एवं क्षमता निर्माण में सहयोग बढ़ाने से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की। क्वात्रा की यात्रा के दौरान रुपये में विदेश व्यापार करने के लिए वोस्ट्रो खाता खोलने की व्यवस्था और भारत की यूपीआई एवं रुपे कार्ड को मॉरीशस में लागू करने से जुड़े बिंदुओं पर भी चर्चा हुई।

## वॉल्वो कार इंडिया की बिक्री जनवरी-मार्च में 38 प्रतिशत बढ़ी

**नई दिल्ली, एजेंसी।** वॉल्वो कार इंडिया ने इस वर्ष जनवरी से मार्च के बीच 544 इकाई बेची हैं जो पिछले वर्ष की समान अवधि के मुकाबले 38 प्रतिशत अधिक है। पिछले वर्ष जनवरी से मार्च के बीच कंपनी ने 393 इकाई की बिक्री की थी। कंपनी ने एक बयान में बताया कि बिक्री बढ़ने में सबसे ज्यादा योगदान एक्ससी60 का है जिसकी बिक्री 27 प्रतिशत बढ़ी है। स्थानीय स्तर पर तैयार की जाने वाली पूर्ण रूप से इलेक्ट्रिक एक्ससी40 की इस दौरान 138 इकाई बिकी जो पूरी बिक्री का 25 प्रतिशत है। वॉल्वो कार इंडिया के प्रबंध निदेशक ज्योति मल्होत्रा ने कहा, ''बिक्री में 38 प्रतिशत की वृद्धि इस बात की पुष्टि करती है कि हमारे महंगे वाहनों की पेशकश में ग्राहकों की अच्छी दिलचस्पी हे।'' मल्होत्रा ने कहा कि कंपनी को यह भरोसा है कि आने वाले दिनों में परिणाम और भी बेहतर होंगे। उन्होंने बताया कि हर साल एक नया इलेक्ट्रिक मॉडल पेश किया जाएगा।

# श्रीलंका में उबाल से भारतीय चाय के सुधरे हाल !

**नई दिल्ली, एजेंसी।** विदेशी खरीदारों की ओर से नए सीजन की ऑर्थोडॉक्स (पारंपरिक) चाय की मांग शुरू हो गई है। दुनिया में पारंपरिक चाय के सबसे बड़े उत्पादक श्रीलंका में पिछले साल हुए आर्थिक संकट का फायदा भारत को मिला था। इसकी कीमतें अब तक के सर्वाधिक स्तर को छू रही थीं। क्या इस साल भी हालात वैसे ही रहेंगे? उद्योग इस पर अध्ययन कर रहा है।

पारंपरिक चाय का उत्पादन परंपरागत तरीकों जैसे, तोड़ना, मुरझाना, रोल करना, ऑक्सीडेशन और सुखाने के बाद होता है। पिछले दिनों पारंपरिक चाय की पहली खेप की नीलामी कोलकाता में हुई। 245.65 रुपए प्रति किलोग्राम औसत कीमत के साथ इसकी अच्छी शुरूआत हुई। यह कीमत पिछले साल के मुकाबले 30 फीसदी अधिक है।

देश के सबसे बड़े पारंपरिक चाय उत्पादकों में से एक एम के शाह एक्सपोर्ट के चेयरमैन हिमांशु शाह कहते हैं, 'हम उपभोग करने वाले देशों से बात कर रहे हैं और वे इसमें रुचि दिखा रहे हैं। रूस को अभी कमी का सामना करना पड़ रहा है लेकिन वे उचित मूल्य पर चाय की खरीद करना चाहते हैं।'

ईरान जो आमतौर पर प्रीमियम दूसरे फ्लश की खरीद करता है और वह जून के बाद बाजार में आता है। उन्होंने कहा, 'वहां भी श्रीलंका में कम उत्पादन के कारण भारतीय चाय की काफी अधिक मांग है और अगस्त तक हमें मांग में किसी भी तरह की कोई गिरावट नहीं दिख रही है।' वैश्विक स्तर पर श्रीलंका करीब 50 फीसदी पारंपरिक चाय का व्यापार करता है। लेकिन, संकटग्रस्त द्वीप देश ने साल 2022 में सालाना आधार पर इसमें 15 से 17 फीसदी की गिरावट देखी है। टी एक्सपोर्टर्स एसोसिएशन श्रीलंका की वेबसाइट पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार, जनवरी से दिसंबर तक निर्यात केवल 25 करोड़ किलोग्राम ही रहा। यह सालाना आधार पर 12.6 फीसदी कम है। इसने भारत के लिए अवसर के द्वार खोल दिए।

आमतौर पर इराक, तुर्की, रूस, यूएई और ईरान श्रीलंका के शीर्ष पांच खरीदार हैं। इनमें से कुछ भारत के लिए भी प्रमुख बाजार हैं। इनमें यूएई, रूस, ईरान, इराक शामिल हैं। भारतीय चाय बोर्ड अनंतिम निर्यात के आंकड़ों के अनुसार, पिछले साल जनवरी से दिसंबर के दौरान देश के कुल चाय निर्यात में 52.42 फीसदी की हिस्सेदारी इन देशों की रही। साल 2021 में यह हिस्सेदारी 44.55 फीसदी थी।

प्रमुख पुनर्निर्यात केंद्र यूएई 146 फीसदी वृद्धि के साथ शीर्ष स्थान पर काबिज हो गया। लेकिन, यह भी सभी जानते हैं कि सीआईएस (स्वतंत्र देशों का राष्ट्रमंडल) और मेना (पश्चिम एशिया और उत्तरी अफ्रीका) जैसे दुनिया के शीर्ष दो चाय खपत क्षेत्रों में दुबई से ही विभिन्न इलाकों की चाय मिश्रित और पैक की जाती है। कुल मिलाकर जनवरी से दिसंबर 2022 के दौरान भारत का चाय निर्यात 15.49 फीसदी बढ़कर 22.69 करोड़ किलोग्राम हो गया। हालांकि भारतीय चाय बोर्ड का कहना है कि भारतीय चाय निर्यात में वृद्धि पूरी तरह से श्रीलंका के हालात के कारण नहीं हुई है, क्योंकि 2022 में भी वैश्विक स्तर पर निर्यात में श्रीलंका की भी 14 फीसदी हिस्सेदारी बनी रही। बोर्ड ने पुराने बाजारों के साथ-साथ मलेशिया, आयरलैंड और तुर्की जैसे नए बाजारों के जुड़ने को निर्यात में वृद्धि का श्रेय दिया। अलबत्ता उद्योग इस वृद्धि का श्रेय श्रीलंका के हालात को ही देता है। अब बड़ा सवाल यह है कि अगर श्रीलंका से इस संकट से उबर जाता है, क्या फिर भी भारतीय निर्माता इस गति को बरकरार रख पाएंगे? मगर इसका जवाब भी इस पर ही निर्भर करेगा कि आखिर श्रीलंका अपने नुकसान से कब उबरेगा। इस साल जनवरी और फरवरी में श्रीलंका का उत्पादन 3.79 करोड़ किलोग्राम था। यह 30 लाख किलोग्राम तक कम है। 3.61 करोड़ किलो के निर्यात में रूस, यूएई और इराक में कम खरीदारी के कारण 44.2 लाख किलोग्राम का कम निर्यात देखा गया।

शाह ने इशारा किया, 'एक बार जब चाय की झाड़ियों को झटका लग जाता है, तो उचित प्रयास के बिना खोई हुई फसल को वापस पाना कठिनाई भरा होता है।' कम से कम दार्जिलिंग में तो ऐसा ही हुआ है। यहां गोरखालैंड आंदोलन के दौरान साल 2017 में 107 दिनों का बंद हुआ था, तब से अब तक यह जूझ ही रहा है।

## आईटी सेक्टर में इस बार सैलरी नहीं बढ़ेगी?

**नई दिल्ली एजेंसी।** आईटी सेक्टर की दो दिग्गज कंपनियों के नतीजे शेयर बाजार के अनुमानों से कम रहे हैं। इससे चौथी तिमाही में आईटी सेक्टर का प्रदर्शन कमतर ही रहने की आशंका दिख रही है। एक्सपर्ट्स एक-दो तिमाही तक यही रुख बने रहने और उसके बाद ही स्थिति में सुधार की संभावना जता रहे हैं। देश की अग्रणी आईटी कंपनियों टीसीएस और इंफोसिस के तिमाही नतीजों के साथ आई प्रबंधन की टिप्पणी में सावधानी हावी दिखी। खासकर अमेरिकी बाजार में बीएफएसआई और प्रौद्योगिकी सेवाओं को लेकर दोनों ही कंपनियां सतर्क रुख अपनाए हुए हैं। इंडस्ट्री के दिग्गज और इंफोसिस के पूर्व निदेशक टी वी मोहनदास पई का कहना है कि वित्त वर्ष 2022-23 की चौथी तिमाही आईटी कंपनियों के लिए मंद रहेगी। लेकिन इसका असर और सीमा अलग-अलग कंपनियों की प्रोफाइल और रणनीति पर निर्भर करेगा। पई ने अप्रैल-जून तिमाही में अमेरिकी बाजार में अनिश्चितता कम होने की संभावना जताते हुए कहा कि नए ऑर्डर आने में 1-2 तिमाहियों का समय लगेगा। लिहाजा अक्टूबर-नवंबर का समय बेहतर रहने की उम्मीद है। हालांकि, उन्होंने कहा कि भारतीय आईटी इंडस्ट्री अपने आकार, पैमाने और ताकत के मामले में वैश्विक तकनीकी क्षेत्र में एक बड़ी ताकत है। यह बाजार की वास्तविकताओं को दर्शाएगा। आईटी इंडस्ट्री आज 200 अरब डॉलर निर्यात के साथ एक बड़ी ताकत है और टॉप-5 भारतीय आईटी कंपनियां वैश्विक बाजार में बड़ी भूमिका रखती हैं।

## मोबाइल फोन मैन्युफैक्चरिंग में भारत का दबदबा, 90 हजार करोड़ रुपए के पार हुआ निर्यात

**नई दिल्ली, एजेंसी।** भारतीयों के वोकल फॉर लोकल से मेड इन इंडिया प्रोडक्ट की डिमांड काफी बढ़ गई है। इसी का नतीजा है कि आज भारत अपनी आत्मनिर्भरता की छवि को सिर्फ कागज पर नहीं बल्कि हकीकत में साबित कर रहा है। ज्यादातर प्रोजक्ट मेड इन इंडिया दिख रहे हैं। टेलिकॉम सेक्टर भी उनमें से एक है जिसने हाल ही में मोबाइल फोन के निर्यात और मैन्युफैक्चरिंग में वृद्धि की है।

दरअसल, इंडिया सेल्युलर एंड इलेक्ट्रॉनिक्स एसोसिएशन ने रिपोर्ट जारी की है, जिसके मुताबिक भारत ने 2022-23 में मोबाइल फोन का निर्यात 90 हजार करोड़ रुपए यानि करीब 11.12 अरब डॉलर के पार कर लिया, जो वित्त वर्ष-2022 में 45 हजार करोड़ रुपए था। इसके साथ ही भारत अब दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल बनाने वाले देश बन गया है।

इस उपलब्धि पर केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि स्मार्टफोन के निर्यात को दोगुना करके 11 बिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक करने के साथ, भारत दुनिया के मोबाइल डिवाइस बाजार में अग्रणी बनने की राह पर है और भारत के इलेक्ट्रॉनिक निर्यात में एक प्रमुख भूमिका निभा रहा है। यह पीएम मोदी के 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम की बड़ी सफलता है।

### भारतीय भी पसंद कर रहे रहे मेड इन इंडिया

यही नहीं देश में जितने भी मोबाइल फोन बेचे जाते हैं उनमें से करीब 97 प्रतिशत स्मार्टफोन स्वदेशी यानि भारत में ही तैयार होते हैं। यही वजह है कि 2014-15 में जहां 78 प्रतिशत मोबाइल फोन दूसरे देश से आयात किया जाता था वहीं अब लगभग आयात 5 प्रतिशत रह गया है।

### इलेक्ट्रॉनिक निर्यात में भारत की प्रमुख भूमिका

इस उपलब्धि पर केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि स्मार्टफोन के निर्यात को दोगुना करके 11 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक करने के साथ, भारत दुनिया के मोबाइल डिवाइस बाजार में अग्रणी बनने की राह पर है और भारत के इलेक्ट्रॉनिक निर्यात में एक प्रमुख भूमिका निभा रहा है। यह पीएम मोदी के 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम की बड़ी सफलता है।

## कोका-कोला भारत में पहली बार किसी स्टार्टअप में करेगी निवेश, स्विगी-जोमैटो को मिलेगी टक्कर

**नई दिल्ली, एजेंसी।** कोल्ड्रिंक बनाने वाली कंपनी कोका-कोला ऑनलाइन फूड ऑर्डरिंग प्लेटफॉर्म थ्राइव में हिस्सेदारी खरीदने के लिए तैयार है। थ्राइव एक फूड सर्च और डिलीवरी प्लेटफॉर्म है, जिसकी 5,500 से अधिक रेस्तरां के साथ पार्टनरशिप है और यह स्विगी और जोमैटो के साथ सीधे कंपटीशन करता है। सूत्रों के मुताबिक, यह भारत में स्टार्टअप में कोका-कोला का पहला निवेश होगा लेकिन इसके सौदे के बारे में अभी तक कोई सटीक आंकड़ा मिला है।

इसके अलावा यह निवेश कोका-कोला को उनके कॉम्पटीटर के खिलाफ कंपनी को आगे बढ़ाएगा क्योंकि यह ग्राहकों को केवल कोका-कोला के कोल्ड्रिंक प्रोडक्ट के साथ-साथ थ्राइव ऐप पर किए गए भोजन के ऑर्डर देने के लिए भी प्रेरित करेगा। इससे उन्हें ऑर्डर कस्टमाइज करने, पैकेज डील और भोजन बेचने में मदद करेगा। 2021 के अंत में डोमिनोज के संचालक जुबिलेंट फूडवर्क्स ने थ्राइव में 35 प्रतिशत हिस्सेदारी लगभग 24.75 करोड़ रुपए में खरीदी थी। तब उसने कहा था कि यह ग्राहकों को सीधे डिलीवरी देने में मदद करेगा और साथ ही इसे ग्राहक डेटा तक पहुंच प्रदान करेगा।

बता दें कि अब तक, कोका-कोला- जो पैकेज्ड कोक और थम्स अप एरेटेड ड्रिंक्स, मिनट मेड जूस, जॉर्जिया कॉफी और किनले वॉटर बेचती है। उन्होंने केवल फास्ट फूड चेन मैकडॉनल्ड्स के साथ वैश्विक पार्टनरशिप का चयन किया है, जो केवल कोका-कोला कोल्ड्रिंक बेचती है। कोका-कोला इंडिया ने इस मामले पर टिप्पणी करने से इनकार कर दिया। थ्राइवनाउ का संचालन करने वाले हैशटैग लॉयल्टी के को-फाउंडर ध्रुव दीवान ने भी इस मामले पर कुछ कहने से इनकार कर दिया है।

## मुकेश अंबानी की रिलायंस ने जितना कमाया, टाटा की टीसीएस ने उससे ज्यादा गंवाया

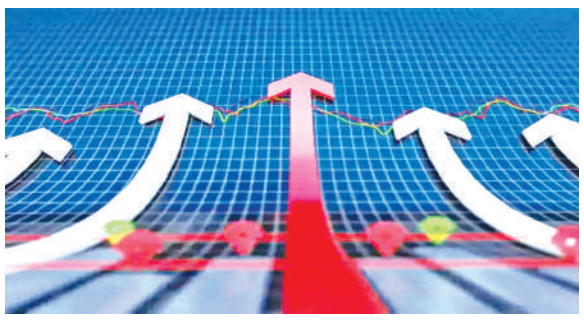

**नयी दिल्ली, एजेंसी।** सेंसेक्स की शीर्ष 10 में से सात कंपनियों के मार्केट कैप में बीते सप्ताह सामूहिक रूप से 67,859.77 करोड़ रुपये का इजाफा हुआ। सबसे अधिक फायदा आईसीआईसीआई बैंक और एचडीएफसी बैंक को हुआ। बीते सप्ताह बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 598.03 अंक या 0.99 प्रतिशत चढ़ गया। शेयर बाजार शुक्रवार (14 अप्रैल) को अंबेडकर जयंती के मौके पर बंद थे। सेंसेक्स की शीर्ष 10 कंपनियों में रिलायंस इंडस्ट्रीज , एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, एचडीएफसी , आईटीसी , भारतीय स्टेट बैंक और भारती एयरटेल लाभ में रहीं। वहीं टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज , हिंदुस्तान यूनिलीवर और इन्फोसिस के बाजार मूल्यांकन में गिरावट आई।

बीते सप्ताह आईसीआईसीआई बैंक का मार्केट कैप 17,188.25 करोड़ रुपये बढ़कर 6,27,940.23 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। एचडीएफसी बैंक का बाजार मूल्यांकन 15,065.31 करोड़ रुपये के उछाल के साथ 9,44,817.85 करोड़ रुपये रहा। एचडीएफसी की बाजार हैसियत 10,557.84 करोड़ रुपये बढ़कर 5,11,436.51 करोड़ रुपये रही, जबकि आईटीसी का मूल्यांकन 10,190.97 करोड़ रुपये बढ़कर 4,91,465.96 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। रिलायंस इंडस्ट्रीज का बाजार मूल्यांकन 9,911.59 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी के साथ 15,93,736.01 करोड़ रुपये रहा। एसबीआई की बाजार हैसियत 4,640.8 करोड़ रुपये के उछाल के साथ 4,75,815.69 करोड़ रुपये पर और भारती एयरटेल की 305.01 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी के साथ 4,27,416.08 करोड़ रुपये रही।

**टीसीएस का हाल :** इस रुख के उलट इन्फोसिस का बाजार मूल्यांकन 13,897.67 करोड़ रुपये टूटकर 5,76,069.05 करोड़ रुपये रह गया। टीसीएस की बाजार हैसियत 11,654.08 करोड़ रुपये के नुकसान के साथ 11,67,182.50 करोड़ रुपये पर आ गई। हिंदुस्तान यूनिलीवर का बाजार मूल्यांकन 6,954.79 करोड़ रुपये घटकर 5,95,386.43 करोड़ रुपये रह गया। देश की सबसे बड़ी सूचना प्रौद्योगिकी सेवा निर्यातक टीसीएस का मार्च तिमाही का शुद्ध लाभ 14.8 प्रतिशत बढ़कर 11,392 करोड़ रुपये रहा है। हालांकि, कंपनी ने अपने प्रमुख उत्तरी अमेरिका के बाजार को लेकर चिंता जताई है। कंपनी का तिमाही परिणाम बुधवार को आया था। इन्फोसिस का चौथी तिमाही का शुद्ध लाभ उम्मीद से कम रहा है। इसके अलावा कंपनी ने चालू वित्त वर्ष के लिए राजस्व में चार से सात प्रतिशत की वृद्धि का संकेत दिया है, जो काफी कमजोर है। शीर्ष 10 कंपनियों की सूची में रिलायंस इंडस्ट्रीज पहले स्थान पर कायम रही।

# एसीसी लिमिटेड ने इंडीविलेज फाउंडेशन के साथ की साझेदारी

### महिला-केंद्रित 'रूरल बीपीओ पायलट प्रोजेक्ट' लॉन्च करेगी

**कटनी, एजेंसी।** अडानी सीमेंट की सीमेंट और निर्माण सामग्री कंपनी और अडानी समूह का हिस्सा एसीसी लिमिटेड ने महिला-केंद्रित 'रूरल बीपीओ पायलट प्रोजेक्ट' लॉन्च करने के लिए इंडीविलेज फाउंडेशन के साथ साझेदारी की है। इस तरह एसीसी ने ग्रामीण भारतीय महिलाओं को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। यह पालयल प्रोजेक्ट किमोर और अमेठा में एसीसी संयंत्र के आसपास रहने वाली महिलाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए शुरू किया गया था। पायलट प्रोजेक्ट एक एचपी-डब्ल्यूओडब्ल्यू (वर्ल्ड ऑन व्हील्स) बस पर शुरू हुआ, जिसमें इंटरनेट कनैक्शन समेत 20 कंप्यूटर लगाए गए हैं। इस तरह यह वाहन इस प्रोजेक्ट के लिए एक डिजिटल प्लेटफॉर्म प्रदान करता है। यह ग्रामीण बीपीओ प्रोजेक्ट इंडीविलेज टेक सॉल्यूशंस एलएलपी द्वारा संचालित किया जा रहा है, जो इंडीविलेज फाउंडेशन की एक संबद्ध इकाई है, जो एक्सपर्ट डेटा एनोटेशन, नेचरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आदि के क्षेत्र में काम करती है। डेटा एनोटेशन, नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस पर काम करने से पहले इन महिलाओं को स्थानीय स्तर पर 15 दिनों के लिए इंडीविलेज टेक सॉल्यूशंस एलएलपी की विशेषज्ञ तकनीकी टीम द्वारा प्रशिक्षित किया जाता है। 3 महीने के लंबे पायलट प्रोजेक्ट में 20 लड़कियों को सफलतापूर्वक शामिल किया गया था, जिनमें से 19 को प्रशिक्षित किया गया है और इंडीविलेज टेक सॉल्यूशंस एलएलपी द्वारा इन्हें डेटा प्रोसेसिंग एनालिस्ट (डीपीए) के रूप में नियुक्त किया गया है। जबकि एक महिला को टीम लीड के तौर पर नियुक्त किया गया है। ये महिलाएं अब प्रति माह क्रमशः 11,000 और 22,000 रुपए प्रति माह अर्जित कर रही हैं। इस अनूठे इनोवेटिव प्रोजेक्ट के सफलतापूर्वक संचालन के साथ, केंद्र को अप्रैल 2023 के अंत तक 46 महिलाओं की एक टीम में अपग्रेड किया जा रहा है। 33 लड़कियों को पहले ही शामिल किया जा चुका है और 13 और महिलाएं शामिल की जाएंगी और इस तरह सभी को एक सुरक्षित और अनुकूल कार्य वातावरण के साथ-साथ अपने घरों पर ही एक स्थिर आजीविका प्राप्त होगी। इस ग्रामीण बीपीओ प्रोजेक्ट के लिए एक डेडिकेटेड और डिजिटल रूप से सुसज्जित फिजिकल वर्कस्पेस है, जिसका उद्घाटन कटनी के जिला कलेक्टर श्री प्रियंक मिश्रा ने 22 अक्टूबर 2022 को किया था। सफल पायलट प्रोजेक्ट ने एसीसी और इंडीविलेज फाउंडेशन के सीनियर मैनेजमेंट को दिसंबर 2023 तक 100 लोगों वाले टेक सेंटर के तौर पर इस केंद्र का विस्तार करने के लिए प्रेरित किया है। इससे क्षेत्र में महिलाओं के लिए रोजगार के अधिक अवसर पैदा होंगे। यह प्रोजेक्ट महिलाओं की कई समस्याओं का समाधान प्रदान करता है, उन्हें उनकी क्षमता का पता लगाने और सम्मान का जीवन जीने में मदद करता है। विजयराघवगढ़ की रहने वाली 23 साल की प्रिया बड़गैयां ने एचआर में एमबीए किया था, लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियों के चलते काम नहीं कर पाई। कोविड-19 महामारी के दौरान अपने पिता की मृत्यु के बाद वह अपने परिवार के लिए रोजी-रोटी जुटाने वाली एकमात्र सदस्य बन गई। इंडीविलेज फाउंडेशन के रूरल बीपीओ प्रोजेक्ट में टीम लीडर और मेंटर के रूप में काम करने के लिए चुने जाने से पहले उन्होंने 22,000 रुपये के मासिक वेतन के साथ एक ट्रेनर के रूप में काम किया। वह अब अपने परिवार को सपोर्ट करने और बचत करने में भी सक्षम है। देवरी मझगवां पंचायत, किमोर की प्राप्ति त्रिवेदी नाम की एक और 22 वर्षीय लड़की, जिसने 13 साल की उम्र में अपने पिता को खो दिया था, ने वित्तीय संघर्षों के बावजूद अपना स्नातक और पीजीडीसीए का कोर्स पूरा किया। इसके बाद उन्होंने एसीसी किमोर में ग्रामीण बीपीओ प्रोजेक्ट में नौकरी की, जहां वह चिकित्सा, कृषि और ई-कॉमर्स परियोजनाओं को संभालती हैं। वह 11,000 रुपए प्रति माह कमाती हैं और अब वह अपनी मां की देखभाल करने और अपने छोटे भाई-बहनों की शिक्षा में मदद करने में सक्षम हैं।

# कोई खिलाड़ी खेल रहा हो या नहीं सीएसके फ्रेंचाइजी सभी को सम्मान देती है : जडेजा

**चेन्नई (एजेंसी)।** आईपीएल में पिछले लंबे समय से चेन्नई सुपर किंग्स टीम के लिए खेल रहे रविंद्र जडेजा का कहना है कि सीएसके फ्रेंचाइजी अपने अनुभवी खिलाड़ियों और युवा खिलाड़ियों के प्रति एक से रवैया और सहानुभूति रखती है। उन्होंने कहा है कि सीएसके फ्रेंचाइजी इसी रवैये के चलते आईपीएल में अब तक चार खिताब जीत चुकी है। जडेजा जो पिछले संस्करण में कुछ मैचों के लिए सीएसके के कप्तान रहे, इस दौरान उनका कप्तानी का अनुभव सही नहीं रहा और टीम को असफलता का सामना करना पड़ा। सीएसके टीम में कप्तानी के रोल को सही से ना निभा पाने की वजह से जडेजा थोड़ा परेशान भी थे, लेकिन फ्रेंचाइजी ने हमेशा जडेजा का साथ दिया और वह इस साल टीम में बतौर ऑल राउंडर शानदार प्रदर्शन दे रहे हैं।

जडेजा ने कहा, सीएसके प्रबंधन और मालिकों ने कभी भी किसी भी खिलाड़ी पर कोई दबाव नहीं डाला। सीएसके के साथ 11 साल बाद भी, उनके पास वही रवैया और दृष्टिकोण है। जब आप प्रदर्शन नहीं कर रहे हों तब भी वे आपको कभी भी अलग महसूस नहीं कराएंगे।

उन्होंने आगे कहा, वहां कोई वरिष्ठ और कनिष्ठ प्रकार की चीज नहीं है। यहां तक कि अंडर-19 के किसी भी युवा खिलाड़ी को अन्य वरिष्ठ खिलाड़ियों की तरह ही सम्मान और उपचार मिलेगा। सीएसरके फ्रेंइचाजी में कोई दबाव नहीं है। किसी भी खिलाड़ी के बीच कोई पक्षपात नहीं है, चाहे वे खेल रहे हों या नहीं।

जडेजा ने सीएसके टीम के प्रशंसकों के साथ फ्रेंइचाजी के विशेष जुड़ाव का जिक्र भी किया। उन्होंने बताया कि सीएसके फ्रेंचाइजी ने प्रशंसकों के साथ गहरा संबंध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, खासकर जब उन्हें टूर्नामेंट के 2018 संस्करण में पुणे में अपना घरेलू मैच खेलना था।

उन्होंने कहा, पुणे में, सीएसके फ्रैंचाइज़ी ने 2000-3000 प्रशंसकों के लिए पुणे में रहने और उन सभी सात मैचों को देखने के लिए पूरी व्यवस्था की जो पुणे में खेले जाने वाले थे। उनके रहने और खाने की व्यवस्था, सब कुछ सीएसके फ्रैंचाइज़ी द्वारा किया गया था। साथ ही उन्हें सीएसके की जर्सी भी दी गई थी।

वहीं सीएसके अब अपने घरेलू मैदान चेन्नई में वापस आ चुकी है और जडेजा का कहना है कि जब वह होम ग्राउंड में प्रशिक्षण भी करते हैं तो सीएसके प्रशंसकों की दीवानगी खास तरह की होती है। उन्होंने कहा, इस बार घरेलू मैदान पर काफी उत्साह होगा क्योंकि कभी-कभी जब हम अभ्यास करते हैं तो ऐसा लगता है कि हम यहां मैच खेलने आए हैं क्योंकि 15 से 20 हजार प्रशंसक हमें अभ्यास देखने आते हैं।जब तक हम अभ्यास करते हैं तब तक पूरा एक स्टैंड भर जाता है और हमारे लिए खुश हो जाता है।

## रुबलेव ने जीता मोंटे कार्लो मास्टर्स

**मोंटे कार्लो (एजेंसी)।** रूस के आंद्रे रुबलेव ने मोंटे कार्लो मास्टर्स के फाइनल में डेनमार्क के होल्गर रूने को हराकर अपने करियर का पहला मास्टर्स 1000 खिताब जीत लिया है। पांचवीं सीड रुबलेव ने रविवार को एक घंटे 34 मिनट तक चले मुकाबले में पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए रूने को 5-7, 6-2, 7-5 से मात दी। रुबलेव निर्णायक सेट में भी 1-4 से पिछड़े हुए थे लेकिन उन्होंने एक बार फिर वापसी करके अपने करियर की सबसे बड़ी जीत दर्ज की।

रुबलेव ने इस जीत के बाद कहा, मैं नहीं जानता कि मैं क्या कहूं। (निर्णायक सेट में) 1-4, 0/30 से पीछे चल रहा था, ब्रेक पॉइंट बचा रहा था, यह सोचकर कि जीतने का कोई मौका नहीं है। लेकिन किसी तरह मैंने इसे कर दिखाया। रुबलेव ने 2021 में भी मोंटे कार्लो मास्टर्स में जगह बनायी थी लेकिन तब उन्हें स्टेफानोस सितसिपास के हाथों हार मिली थी। उन्होंने कहा, मैं अंदर से उम्मीद कर रहा था कि मेरे पास एक मौका होगा, इसलिये अंत तक खेलना होगा। मुझे पिछला फाइनल याद है, और जब मैं हार रहा था, तो मुझे लगा कि मेरे पास कोई मौका नहीं है। लेकिन आज मैंने सोचा, 'बस अंत तक विश्वास रखें', और यही मैं तीसरे सेट में करने की कोशिश कर रहा था। यूक्रेन पर रूसी आक्रमण के बाद अपने राष्ट्रीय ध्वज से वंचित 25 वर्षीय रुबलेव ने दर्शकों को उनके समर्थन के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा, जिस देश से मैं आता हूं, वहां से आकर इस तरह का अंतरराष्ट्रीय समर्थन प्राप्त करना बहुत बड़ी बात है।

## बीसीसीआई ने स्टार के साथ 2018-2023 के मीडिया अधिकार के 78.90 करोड़ रुपये माफ किए

**नयी दिल्ली (एजेंसी)।** भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने स्टार इंडिया के साथ अपने 2018 से 2023 तक के मीडिया अधिकार करार (एमआरए) में से एक मैच को हटाने का फैसला किया है जिससे स्टार को 78.90 करोड़ रुपये की छूट मिलेगी।

बीसीसीआई का स्टार इंडिया के साथ मीडिया अधिकार करार 2018 से 2023 तक था जो 31 मार्च को समाप्त हो गया। इस दौरान 102 मैचों के लिए 6138.1 करोड़ रुपए का करार किया गया था लेकिन बीसीसीआई ने पांच साल के चक्र में 103 मैच खेले।

बीसीसीआई नोट में कहा गया है,'' बीसीसीआई के अंतरराष्ट्रीय और घरेलू मैचों के लिए पांच अप्रैल 2018 को किए गए बीसीसीआई और स्टार मीडिया अधिकार करार के तहत स्टार इंडिया प्राइवेट लिमिटेड को एक मैच की छूट देने का फैसला किया गया है। इस अवधि के दौरान कुल मैचों की संख्या 103 से घटाकर 102 कर दी गई है।''

हालांकि स्टार इंडिया के सूत्रों ने कहा की 2018 में जिस मीडिया अधिकार करार पर हस्ताक्षर किए गए थे उसमें 102 मैचों के आयोजन की संभावना थी इसलिए एक मैच के शुल्क को माफ किए जाने का सवाल ही नहीं उठना चाहिए।

सूत्रों ने मीडिया से कहा,'' मीडिया अधिकार करार 102 मैचों के लिए था और स्टार इन मैचों के लिए भुगतान करेगा। मुझे यहां कोई मसला नजर नहीं आता है।''

## तेंदुलकर ने बेटे के आईपीएल पदार्पण पर कहा, चाहता हूं कि अर्जुन खुलकर खुद को जाहिर करे

**मुंबई (एजेंसी)।** कोलकाता नाइट राइडर्स के खिलाफ मुंबई इंडियन्स की ओर से जब अर्जुन तेंदुलकर पदार्पण मुकाबला खेल रहे थे तो महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर डग आउट की जगह ड्रेसिंग रूम में थे क्योंकि वह नहीं चाहते थे कि उनके बेटे का ध्यान भटके।

बाएं हाथ के 23 साल के तेज गेंदबाज अर्जुन ने दो ओवर में 17 रन दिए लेकिन उन्हें कोई विकेट नहीं मिला। कार्यवाहक कप्तान सूर्यकुमार यादव ने उनसे पहला और तीसरा ओवर कराया।

गोवा के लिए प्रथम श्रेणी क्रिकेट खेलने वाले अर्जुन ने 'आईपीएलटी20.कॉम' से कहा, ''यह शानदार लम्हा था। उस टीम के लिए खेलना शानदार था जिसका मैं 2008 से समर्थन कर रहा हूं और मुंबई इंडियन्स तथा भारतीय टीम के कप्तान रोहित शर्मा से कैप मिलना शानदार था।''तेंदुलकर ने पहली बार अपने बेटे को प्रतिस्पर्धी मुकाबला खेलते हुए देखा।

रविवार को मुंबई इंडियन्स की नाइट राइडर्स के खिलाफ सात विकेट की जीत के बाद तेंदुलकर ने कहा, ''यह मेरे लिए नया अनुभव था क्योंकि इससे पहले मैं मैदान पर उसे खेलते हुए देखने नहीं गया था। मैं चाहता था कि मैं मैदान पर खुलकर खुद के जाहिर रहे और जो वह करना चाहता है वह करे।''

हालांकि नाइट राइडर्स की पारी की शुरुआत में तेंदुलकर बाउंड्री के बाहर डग आउट में नहीं बैठे क्योंकि इससे अर्जुन का ध्यान भटक सकता था।

तेंदुलकर ने कहा, ''आज मैं ड्रेसिंग रूम में बैठा क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि उसका (अर्जुन का) ध्यान अपनी योजना से भटके और वह बड़ी स्क्रीन की तरफ देखे और अचानक महसूस करे कि मैं उसे देख रहा हूं इसलिए मैं अंदर था।''

पिता के रूप में यह तेंदुलकर के लिए भावनात्मक लम्हा था और उन्होंने फ्रेंचाइजी के साथ 16 साल के अपने जुड़ाव को याद किया। वह छह साल खिलाड़ी के रूप में और पिछले 10 साल से 'मार्गदर्शक' के रूप में टीम से जुड़े रहे हैं।

उन्होंने कहा, ''अलग अहसास है क्योंकि 2008 मेरे लिए पहला सत्र था और 16 साल बाद वह इसी टीम की ओर से खेल रहा है, यह बुरा नहीं है।''

## भारत के डी गुकेश नें जीता मेनोर्का इंटरनेशनल शतरंज का खिताब

**मेनोर्का,स्पेन (एजेंसी)।** मेनोर्का इंटरनेशनल शतरंज में अपने खिताब को बचाने उतरे भारत के नंबर 2 शतरंज खिलाड़ी 16 वर्षीय ग्रांड मास्टर डी गुकेश नें आखिरकार सफलता पा ली है और लगातार दूसरी बार यह प्रतिष्ठित खिताब अपने नाम कर लिया है । हालांकि अंतिम राउंड के बाद 7 अंको पर उन्हे बराबर टाईब्रेक अंको के चलते हमवतन ग्रांड मास्टर प्रणव वी से ब्लिट्ज़ टाईब्रेकर खेलना पड़ा जिसमें गुकेश 1.5-0.5 से जीतने में सफल रहे,प्रणव को उपविजेता का स्थान मिला । बड़ी बात यह रही की 2730 रेटिंग वाले गुकेश प्रतियोगिता के बाद 2 अंको का सुधार करते हुए लाइव रेटिंग में 2732 अंको के साथ 3 स्थान का सुधार करते हुए विश्व रैंकिंग में 17वें स्थान पर पहुँच गए है । नीदरलैंड के वान फॉरेस्ट जॉर्डन तीसरे स्थान पर रहे जबकि अन्य खिलाड़ियों में भारत के आर्यन चोपड़ा , रूस के व्लादिमीर फेडोसीव ,यूएसए के नीमन हंस मोके ,इसराइल के कोबो ओरी ,रूस के मकसीम चिगेव ,चीन के क्सू जियांगयू और भारत के कौस्तव चटर्जी क्रमशः चौंथे से दसवें स्थान पर रहे ।

## एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी हॉकी की मेजबानी करेगा चेन्नई

**चेन्नई (एजेंसी)।** भारत तीन से 12 अगस्त तक पहली बार एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी हॉकी टूर्नामेंट की मेजबानी करेगा जिसका आयोजन इस शहर में होगा। इस प्रतिष्ठित खेल आयोजन का सातवां सत्र सितंबर में चीन के हांगझोऊ में होने वाले एशियाई खेलों के तैयारी के रूप में काम करेगा। तमिलनाडु के खेल मंत्री उधयनिधि स्टालिन ने यह घोषणा करते हुए कहा कि यह अच्छा है कि हॉकी उस शहर में वापसी कर रहा है जो कभी दक्षिण भारत में खेल की राजधानी हुआ करता था।

उन्होंने कहा, 'हीरो एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी 2023 की चेन्नई में मेजबानी करना बेहद खुशी और सम्मान की बात है। यह शहर कभी दक्षिण भारत में हॉकी की राजधानी हुआ करता था और यहाँ कई प्रतिष्ठित घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती थीं।

उन्होंने यहां संवाददाताओं से कहा, 'मेरा मानना है कि यहां हीरो एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी की मेजबानी से इस क्षेत्र में खेल की लोकप्रियता बढ़ेगी और एशिया में शीर्ष टीमों को देखने से युवा पीढ़ी भी हॉकी को करियर के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित होगी।% चेन्नई ने पिछली बार 2007 में अंतरराष्ट्रीय हॉकी प्रतियोगिता की मेजबानी एशिया कप के रूप में की थी। उस समय यहां का मेयर राधाकृष्णन स्टेडियम भारतीय टीम के लिए भाग्यशाली साबित हुआ जिसने फाइनल में कोरिया को 7-2 से हराकर खिताब जीता था। एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी में तीन बार की चैम्पियन भारत के अलावा गत चैम्पियन दक्षिण कोरिया, मलेशिया, पाकिस्तान, जापान और चीन हिस्सा लेंगे। आयोजकों ने कहा कि पाकिस्तान ने अभी तक अपनी भागीदारी की पुष्टि नहीं की है। उन्होंने कहा, 'अगर पाकिस्तान इस टूर्नामेंट में भाग लेता है तो उसे पर्याप्त सुरक्षा प्रदान की जाएगी। उन्होंने कहा कि चीन और पाकिस्तान 25 अप्रैल तक अपनी भागीदारी की पुष्टि करेंगे।

## बोल्ट ने कहा, कई खिलाड़ियों का टीम के लिए बेहतर प्रदर्शन करना सकारात्मक पहलू

**अहमदाबाद (एजेंसी)।** तेज गेंदबाज ट्रेंट बोल्ट ने कहा कि अलग-अलग समय पर विभिन्न खिलाड़ियों का टीम के लिए बेहतर प्रदर्शन करना राजस्थान रॉयल्स की बल्लेबाजी इकाई का सकारात्मक पहलू रहा है। राजस्थान रॉयल्स ने रविवार को गुजरात टाइटंस के खिलाफ जीत के लिए 178 रन के लक्ष्य को सात विकेट गंवा कर हासिल कर लिया।

टीम शुरुआती तीन ओवरों के बाद चार रन पर दो विकेट गंवाकर मुश्किल परिस्थिति में थी लेकिन कप्तान संजू सैमसन (60) और शिमरोन हेटमेयर (नाबाद 56) की प्रभावशाली बल्लेबाजी से उसने चार गेंद शेष रहते जीत दर्ज कर ली। बोल्ट ने मैच के बाद संवाददाता सम्मेलन में कहा, 'हमारी टीम में कुछ बेहद प्रतिभाशाली बल्लेबाज हैं और मुझे लगता है कि असली सकारात्मक यह है कि अलग-अलग समय पर विभिन्न खिलाड़ियों ने टीम के लिए दमदार प्रदर्शन किया।न्यूजीलैंड के 33 साल के इस तेज गेंदबाज ने कहा, 'जोस (बटलर) जाहिर तौर पर हमारे लिए एक बड़ा खिलाड़ी है और मुझे यकीन है कि इस मैच में रन नहीं बनाने का उसे मलाल होगा। लेकिन बल्लेबाजी इकाई में अन्य खिलाड़ियों के द्वारा योगदान देने की भूख अद्भुत है। बोल्ट ने कहा, 'कप्तान (सैमसन) ने वहां बहुत दबाव झेला। उसने खेल को आगे बढ़ाने की कोशिश की और मैच में टीम की वापसी करायी। उसे दूसरे खिलाड़ियों का अच्छा समर्थन मिला।

उन्होंने टाइटंस के बल्लेबाजों पर लगातार दबाव बनाने के लिए रविचंद्रन अश्विन, युजवेंद्र चहल और एडम जम्पा की स्पिन तिकड़ी के साथ तेज गेंदबाज संदीप शर्मा की भी सराहना की। अपने चार ओवर में 46 रन लुटा कर एक विकेट लेने वाले बोल्ट ने कहा, 'स्पष्ट रूप से स्पिनरों के 12 ओवर ने मैच में हमारी वापसी कराई। हर ओवर मायने रखता है लेकिन सैंडी (संदीप शर्मा) ने आखिरी ओवर में बेहतरीन गेंदबाजी की। इस विकेट पर उन्हें 175 रन के आसपास रोकना शानदार रहा। संदीप ने हमें दिखाया लेंथ और अच्छी स्विंग के साथ कैसे गेंदबाजी करनी है।

## राजस्थान में 23 जून से होंगे ग्रामीण और शहरी ओलंपिक खेल

**जयपुर (एजेंसी)।** राजस्थान में जून महीने में राजीव गांधी ग्रामीण व शहरी ओलंपिक खेलों का आयोजन होगा। मुख?यमंत्री अशोक गहलोत ने इसके लिए 130 करोड़ रुपए के वित्तीय प्रस्ताव को दी मंजूरी दी है।

एक सरकारी प्रवक्ता ने बताया कि राज?य में एक बार फिर से राजीव गांधी ग्रामीण खेलों के साथ शहरी ओलंपिक खेलों का बिगुल बजेगा। ग्रामीण ओलंपिक की सफलता और खिलाड़ियों के उत्साह को देखते हुए अब ग्रामीण और शहरी ओलंपिक खेलों का एक साथ आयोजन होगा। इन खेलों के आयोजन में लगभग 130 करोड़ रुपए खर्च होंगे। मुख्यमंत्री गहलोत ने आयोजन के लिए वित्तीय प्रस्ताव को मंजूरी दी है।

इसके तहत खेलों की शुरुआत 23 जून से होगी। ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया जल्द ही शुरू की जाएगी। खेल दिवस 29 अगस्त, 2023 को राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं का आयोजन प्रस्तावित है। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री ने बजट 2023-24 में राजीव गांधी ग्रामीण और शहरी ओलंपिक खेलों के आयोजन के लिए घोषणा की थी।इन खेलों में ग्रामीण क्षेत्र में कबड्डी, खो-खो (महिला वर्ग), शूटिंगबॉल (पुरूष वर्ग), टेनिसबॉल क्रिकेट, फुटबॉल, वालीबॉल, रस्साकशी (महिला वर्ग) खेल होंगे।शहरी क्षेत्र में कबड्डी, बास्केटबॉल, टेनिसबॉल क्रिकेट, खो-खो (महिला वर्ग), फुटबॉल (पुरूष वर्ग), वॉलीबॉल, एथलेटिक्स (100, 200 व 400 मीटर) खेलों में प्रतिभागी हिस्सा लेंगे। प्रवक?ता के अनुसार खेलों से राज्य सरकार का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में खेलों का वातावरण तैयार कर प्रदेशवासियों को खेलों से जोड़कर मैदान तक लाना है। साथ ही, शारीरिक व मानसिक तनाव से दूर कर खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना है।

# आईपीएल 2023- संजू सैमसन ने बनाया बड़ा रिकॉर्ड

### राजस्थान रॉयल्स के लिए ऐसा करने वाले पहले खिलाड़ी बने

**नईदिल्ली (एजेंसी)।** राजस्थान रॉयल्स (आरआर) के कप्तान संजू सैमसन ने रविवार को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में अपने फ्रेंचाइजी के लिए 3,000 रन पूरे किए और वह ऐसा करने वाले पहले बल्लेबाज बन गए हैं। सैमसन ने अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में गुजरात टाइटन्स (जीटी) के खिलाफ आईपीएल 2023 के अपने मैच के दौरान इस मुकाम को हासिल किया। मैच में 178 रनों के लक्ष्य का पीछा करने के दौरान सैमसन ने केवल 32 गेंदों में 60 रनों की खेल बदल देने वाली पारी खेली। उनकी दस्तक में तीन चौके और छह छक्के शामिल थे। उनके रन 187.50 के स्ट्राइक रेट से आए।

115 मैचों में राजस्थान रॉयल्स के लिए सैमसन ने 29.76 के औसत और 139.10 के स्ट्राइक रेट से 3,006 रन बनाए हैं। उन्होंने 119 के सर्वश्रेष्ठ स्कोर के साथ टीम के लिए 2 शतक और 16 अर्द्धशतक बनाए हैं। उनका सबसे शानदार सीजन 2021 में आया जब 14 मैचों में सैमसन ने 40.33 के औसत और 136.72 के स्ट्राइक रेट से 484 रन बनाए। उन्होंने 119 के सर्वश्रेष्ठ स्कोर के साथ एक शतक और दो अर्धशतक बनाए।

राजस्थान के लिए रन-स्कोरिंग चार्ट में उनके पीछे अजिंक्य रहाणे (100 मैचों में 2,810 रन), जोस बटलर (63 मैचों में 2,508), शेन वॉटसन (78 मैचों में 2,372 रन) और राहुल द्रविड़ (46 मैचों में 1,276 रन) हैं। अपने आईपीएल करियर में उन्होंने दिल्ली कैपिटल्स का प्रतिनिधित्व भी किया है। संजू ने 29.23 के औसत और 136.76 के स्ट्राइक रेट से 3,683 रन बनाए हैं। संजू लीग के इतिहास में 17वें सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं।

### आईपीएल में शीर्ष पांच सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी

- विराट कोहली - 227 मैचों में 6,838 रन
- शिखर धवन - 210 मैचों में 6,477 रन
- डेविड वार्नर - 167 मैचों में 6,109 रन
- रोहित शर्मा - 231 मैचों में 5,986 रन
- सुरेश रैना - 205 मैचों में 5,528 रन

# नोएडा बना अंग प्रत्यारोपण का हब, 6 अस्पतालों में होता है आर्गन ट्रांसप्लांट

**नोएडा, एजेंसी।** नोएडा शहर आज अपना 48वां स्थापना दिवस मना रहा है। इस दौरान शहर स्वास्थ्य के क्षेत्र में आए बदलाव का साक्षी रहा है। निजी अस्पतालों के आगमन से सुपर स्पेशियलिटी सेवा समेत किडनी ट्रांसप्लांट, जटिल सर्जरी व कैंसर का इलाज भी होने लगा है। शहर अंग प्रत्यारोपण के लिए देश के साथ विदेश में रहने वाले लोगों की पहली पसंद बना है।

शहर की स्थापना से पहले यहां सर्दी, जुकाम, बुखार का इलाज होता था। जटिल बीमारियों के इलाज के लिए दिल्ली की दौड़ लगाना और घंटों कतार में खड़े रहना लोगों की मजबूरी थी। 80 के दशक तक लगभग ऐसी ही स्थिति रही, लेकिन 90 के दशक से सरकारी और निजी स्वास्थ्य सेवाओं में विस्तार शुरू हुआ। अब सुपर स्पेशियलिटी सेवा समेत किडनी ट्रांसप्लांट, जटिल सर्जरी व कैंसर का इलाज भी शहर में होने लगा है। शहर के जेपी, फोर्टिस, अपोलो, मेट्रो, आईकेयर, यथार्थ, मैक्स अस्पताल में लिवर, किडनी, हृदय, फेफड़े, आंत, कार्निया ट्रांसप्लांट हो रहे हैं। प्रत्यारोपण के क्षेत्र में जेपी अस्पताल ने तो नई इबारत गढ़ी हैं। अकेले जेपी अस्पताल ने पिछले आठ वर्षों में एक हजार से अधिक लिवर व किडनी प्रत्यारोपित कर मरीजों को नई जिंदगी दी है। फोर्टिस अस्पताल ने भी लिवर व किडनी ट्रांसप्लांट में नई पहचान बनाई है। जाने लगा है। शहर में दिल्ली, यूपी, हरियाणा, पंजाब समेत विदेशों के मरीज भी लिवर व किडनी ट्रांसप्लांट के लिए आ रहे हैं। इनमें अफगानिस्तान, मंगोलिया, ईराक, ईरान, नाइजीरिया, किर्गिज़्स्तान, दुबई, मारीशस, नेपाल, भूटान जैसे देशों के मरीज ज्यादा हैं। 48 साल पहले जिले में एक भी सरकारी स्वास्थ्य केंद्र और अस्पताल नहीं था। अब इनकी तादाद 150 से ज्यादा है। पहले सर्जरी और जांच की सुविधाएं सीमित थीं। अब आइसीयू, आक्सीजन, आपूर्ति बेड, सीएचसी पर प्रथम रेफरल इकाइयों (एफआरयू) सुविधा, सिजेरियन डिलीवरी, टीकाकरण और कोरोना जैसी महामारी से निपटने के इंतजाम हैं। समस्या है तो विशेषज्ञ चिकित्सकों की। सभी जरूरी संसाधन के बावजूद चिकित्सकों के अभाव में जिला अस्पताल और स्वास्थ्य विभाग में सेवाएं प्रभावित हैं।

# सुप्रीम कोर्ट ने 13 उम्रकैदियों की समय पूर्व रिहाई की मांग पर दिल्ली सरकार को जारी किया नोटिस

**नई दिल्ली, एजेंसी।** सुप्रीम कोर्ट ने 13 उम्रकैदियों की समय पूर्व रिहाई की मांग पर दिल्ली सरकार को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। इसके साथ ही कोर्ट ने कोरोना के दौरान जमानत और पैरोल पर बाहर आ चुके याचिकाकर्ता उम्रकैदियों को अगले आदेश तक समर्पण से छूट भी दे दी है।

हालांकि, इनमें से 12 उम्रकैदी वापस समर्पण कर चुके हैं और अब इन कैदियों की ओर से सुप्रीम कोर्ट में अंतरिम जमानत अर्जी दी गई है जिस पर कोर्ट सोमवार को सुनवाई करेगा।

उम्रकैद की सजा पाए और 14 से लेकर 20 वर्ष तक का कारावास भुगत चुके 13 उम्रकैदियों कुलदीप , राजीव, संदीप, प्रमोद गोस्वामी, किशन, छत्तर सिंह, राम सिंह, विजय पाल, मौइनुद्दीन, मोहम्मद अहद, सुरेन्दर कुमार, प्रकाश और मोती उर्फ मोहित ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल कर दिल्ली की 16 जुलाई 2004 की समय पूर्व रिहाई नीति के मुताबिक समय पूर्व रिहाई दिये जाने की मांग की है।

उम्रकैदियों के वकील ऋषि मल्होत्रा ने समय पूर्व रिहाई की मांग करते हुए कहा कि याचिकाकर्ता 14 से लेकर 20 वर्ष का कारावास भुगत चुके हैं और दिल्ली के उपराज्यपाल द्वारा मंजूर 16 जुलाई, 2004 की समय पूर्व रिहाई नीति के मुताबिक रिहाई की पात्रता रखते है, लेकिन उनकी समय पूर्व रिहाई अर्जी पर विचार नहीं हो रहा और वे लगातार जेल भुगत रहे हैं।

मल्होत्रा ने कहा कि दिल्ली में सेंटेंस रिव्यू बोर्ड मामले को जघन्य कह कर समय पूर्व रिहाई की अर्जी खारिज कर देता है, लेकिन हत्या का तो हर मामला ही जघन्य कहा जाएगा। कुछ मामलों में तो बोर्ड ने अर्जी पर विचार ही नहीं किया है। कोर्ट ने दलीलें सुनने के बाद याचिका पर दिल्ली सरकार को नोटिस जारी किया। इसके बाद मल्होत्रा ने कहा कि याचिकाकर्ता कोरोना के दौरान कोर्ट के आदेश पर जमानत और पैरोल पर बाहर आ गए थे। अभी हाल ही में सुप्रीम कोर्ट की एक अन्य पीठ ने उस दौरान जमानत या पैरोल पर बाहर आये सभी कैदियों को समर्पण कर वापस जेल जाने का आदेश दिया है, ऐसे में कोर्ट उन याचिकाकर्ताओं को समर्पण करने से अंतरिम राहत दे दे जिन्होंने अभी तक समर्पण नहीं किया है और जिन्होंने समर्पण कर दिया है उन्हें अंतरिम जमानत दे दी जाए।

पीठ ने अभी तक समर्पण न करने वाले याचिकाकर्ताओं को फिलहाल समर्पण से छूट दे दी है। पीठ ने समर्पण कर चुके याचिकाकर्ताओं के लिए कहा कि वे पहले अंतरिम जमानत अर्जी दाखिल करें तब उस पर विचार होगा।

# बंध्याकरण आपरेशन के दौरान महिला की मौत पर अस्पताल देगा 13.60 लाख रुपये मुआवजा

**नई दिल्ली, एजेंसी।** बंध्याकरण के आपरेशन के दौरान महिला की मौत के मामले में इलाज में लापरवाही और सेवा में कमी का जिम्मेदार ठहराए गए चेन्नई के ग्रेस अस्पताल को 13.60 लाख का मुआवजा पीड़ित परिवार को देना होगा। राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग (एनसीडीआरसी) ने अस्पताल की रिवीजन याचिका खारिज करते हुए जिला फोरम और राज्य उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग के आदेश को सही ठहराया है।

इस मामले में एम. जयप्रकाश ने अपनी पत्नी को प्रसव के के लिए अस्पताल में भर्ती कराया था। अस्पताल की सलाह के मुताबिक प्रसव के दो दिन बाद महिला का बंध्याकरण का आपरेशन होना था। महिला स्वस्थ थी और उसने स्वस्थ बच्चे को जन्म दिया था लेकिन बंध्याकरण आपरेशन के बाद उसकी मौत हो गई। स्वयं और दो बच्चों की ओर से अस्पताल के खिलाफ जिला उपभोक्ता फोरम में शिकायत दाखिल की और 19.50 लाख रुपये मुआवजा और 25 हजार रुपये शिकायत दाखिल करने का खर्च दिलाए जाने की मांग की। अस्पताल ने कहा कि शिकायतकर्ता की पत्नी को जब आपरेशन के लिए एनेश्थीशिया देने और सर्जरी की तैयारी की जा रही थी तभी मरीज को झटके आने लगे, उसे दौरा पड़ने लगा। अस्पताल प्रशासन ने तत्काल इसकी सूचना शिकायतकर्ता को दी। मरीज को इंटेसिव केयर और वेंटीलेटर सपोर्ट के लिए हायर सेंटर रिफर किया गया। अस्पताल ने फिजीशियन की भी सलाह ली। कुछ देर बाद उसे दिल का दौरा पड़ गया। जिला फोरम ने 18 अगस्त 2016 को दिये आदेश में अस्पताल को इलाज में लापरवाही और सेवा में कमी का जिम्मेदार ठहराया और 12.60 लाख रुपये मुआवजा देने का अस्पताल को आदेश दिया। इस मुआवजे में पांच लाख रुपये महिला की मौत से आय में होने वाले नुकसान के लिए महिला गृहणी थी, एक लाख रुपये जयप्रकाश को पत्नी के प्रेम और लगाव को हुए नुकसान के लिए, चार लाख रुपये दोनों बच्चों को मां की देखभाल के हुए नुकसान के लिए, दो लाख रुपये मानसिक और शारीरिक पीड़ा के लिए, पचास हजार रुपये इलाज, अंतिम संस्कार आदि पर आये अन्य खर्च का और दस हजार रुपये इलाज में लापरवाही के हर्जाने का देने का आदेश दिया।

# केजरीवाल और उनके साथी सहानुभूति या समर्थन के हकदार नहीं- अजय माकन

**नई दिल्ली, एजेंसी।** मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल सहित आबकारी घोटाले में भ्रष्टाचार के विभिन्न आरोपों का सामना कर रहे आम आदमी पार्टी के नेताओं पर वरिष्ठ कांग्रेस नेता अजय माकन ने भी जमकर हमला बोला है। उन्होंने कहा है कि केजरीवाल और उनके साथी सहानुभूति या समर्थन के हकदार नहीं हैं।

एक ट्वीट के जरिये रविवार शाम माकन ने कहा, केजरीवाल जैसे लोगों और उनके साथियों, जिन पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगे हैं, किसी तरह की सहानुभूति या समर्थन नहीं दिया जाना चाहिए। आबकारी घोटाले के आरोपों की गहन जांच होनी चाहिए और दोषी पाए जाने वालों को सजा मिलनी चाहिए।

माकन ने आगे कहा, कांग्रेस सहित सभी राजनीतिक दलों के नेताओं के लिए यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि केजरीवाल द्वारा भ्रष्ट तरीकों से अर्जित धन का उपयोग पंजाब, गोवा, गुजरात, उत्तराखंड, दिल्ली एवं हिमाचल प्रदेश सहित कई राज्यों में कांग्रेस के खिलाफ किया गया है।

केजरीवाल ने अन्ना हजारे आंदोलन के बाद भ्रष्टाचार से लड़ने के उद्देश्य से 2013 में आम आदमी पार्टी (आप) की स्थापना की। पार्टी ने लोकपाल विधेयक को लागू करने का वादा किया, जिसे विपक्षी दलों ने कांग्रेस में भ्रष्टाचार के समाधान के रूप में देखा। हालांकि, केजरीवाल ने सत्ता में आने के 40 दिन बाद फरवरी 2014 में एक मजबूत लोकपाल बिल की मांग करते हुए अपनी ही सरकार को भंग कर दिया, जिसे बाद में सार्वजनिक कर दिया गया।

बकौल माकन, इसके बावजूद दिसंबर 2015 में, केजरीवाल ने लोकपाल बिल का एक कमजोर संस्करण पेश किया, जो 2014 में प्रस्तावित मूल बिल से बहुत अलग था। यह केजरीवाल के असली चरित्र और इरादों को उजागर करता है। मूल बिल, जिसने उनकी 40 दिन की सरकार को भंग करने का आधार बनाया था, अभी तक लागू नहीं किया गया है। 2015 के बाद से, केजरीवाल और उनकी पार्टी एक मजबूत लोकपाल विधेयक को आगे बढ़ाने में विफल रही है। इसके बजाय, वे केवल अधिक शक्ति की मांग के लिए अपने विरोध, मार्च और प्रति-आरोप के लिए जाने जाते हैं। अब जबकि केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआइ) या प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने केजरीवाल को तलब किया है, इसके बजाय एक मजबूत लोकपाल बिल आबकारी घोटाले के आरोपों की जांच कर सकता था।

## द्रमुक ने भाजपा नेता को भेजा 500 करोड़ रुपये का कानूनी नोटिस, लगाए थे भ्रष्टाचार के आरोप

**चेन्नई, एजेंसी।** तमिलनाडु में सत्तारूढ़ द्रमुक ने भ्रष्टाचार के आरोपों पर भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष के अन्नामलाई को कानूनी नोटिस भेजकर हर्जाने के तौर पर 500 करोड़ रुपये की मांग की। नोटिस में आरोपों को लेकर माफी मांगने की भी मांग की गई है। अन्नामलाई ने द्रमुक और इसके अध्यक्ष एवं मुख्यमंत्री एमके स्टालिन पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए थे। द्रमुक के संगठन सचिव आर एस भारती 75र से जारी 10 पन्नों के नोटिस में कहा गया है कि डीएमके फाइल्स में लगाए गए अन्नामलाई के आरोपों में स्टालिन और पार्टी के अन्य नेताओं को निशाना बनाया गया है, जो झूठे, निराधार, मानहानिकारक, काल्पनिक और निंदनीय हैं। स्टालिन के खिलाफ अन्नामलाई के 200 करोड़ रुपये के भ्रष्टाचार के आरोप का उल्लेख करते हुए नोटिस में कहा गया कि द्रमुक अध्यक्ष को अपने 56 साल के सार्वजनिक जीवन के दौरान भ्रष्टाचार के रूप में एक पैसा भी नहीं मिला है। स्टालिन की ओर से अन्नामलाई से बिना शर्त, सार्वजनिक माफी की मांग करने के अलावा नोटिस में आरोपों वाले अपमानजनक वीडियो को इंटरनेट मीडिया और वेबसाइट से हटाने को कहा गया है। इसमें कहा गया कि नोटिस प्राप्त होने के 48 घंटे के भीतर मांगें पूरी नहीं करने की सूरत में कानूनी कार्यवाही शुरू की जाएगी।

# कर्नाटक में आदर्श आचार संहिता लागू होने के बाद की गई 170 करोड़ रुपये से अधिक की जब्ती

**बेंगलुरु, एजेंसी।** निर्वाचन आयोग ने कहा कि कर्नाटक में 29 मार्च को आदर्श आचार संहिता लागू होने के बाद से प्रवर्तन एजेंसियों ने राज्य में कुल 170 करोड़ रुपये से अधिक की जब्ती की है। राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी के कार्यालय ने कहा कि कुल 170.27 करोड़ रुपये की जब्ती में 71 करोड़ रुपये नकद, 38 करोड़ रुपये की शराब, 29 करोड़ रुपये की कीमती धातुएं, 19 करोड़ रुपये के मुफ्त उपहार और 13 करोड़ रुपये के मादक पदार्थ शामिल हैं।

उन्होंने कहा कि इस संबंध में 1,410 प्राथमिकियां दर्ज की गई हैं। 10 मई को विधानसभा चुनाव की घोषणा किये जाने से पहले नौ मार्च से 27 मार्च के बीच जब्त की गई वस्तुओं की कुल कीमत लगभग 58 करोड़ रुपये थी। राज्य में 10 मई को एक ही चरण में मतदान होगा और चुनाव परिणाम 13 मई को घोषित किए जाएंगे।

मालूम हो कि 224 सीट वाले कर्नाटक विधानसभा में वर्तमान में सत्तारूढ़ भाजपा के 119 विधायक हैं, जबकि कांग्रेस के पास 75 और उसके सहयोगी जद (एस) के पास 28 सीटें हैं। विधान सभा चुनाव के मद्देनजर सभी पार्टियां एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगा रही हैं। इधर, कांग्रेस पार्टी ने कर्नाटक में विधानसभा चुनाव की तैयारियों की निगरानी के लिए बेंगलुरु शहर और विधानसभा स्तर के पर्यवेक्षकों की सूची जारी की है। कर्नाटक में आगामी चुनावों की तैयारियों की देखरेख के लिए कांग्रेस ने राज्य में कुल 61 पर्यवेक्षक नियुक्त किए हैं।

# पाकिस्तान में ईशनिंदा के आरोप में 2 महिलाओं समेत तीन के खिलाफ मामला दर्ज

**पेशावर, एजेंसी।** पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में दो अलग-अलग घटनाओं में दो महिलाओं सहित तीन लोगों पर ईशनिंदा के आरोप में मामला दर्ज किया गया। अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि पहली घटना प्रांतीय राजधानी लाहौर से करीब 150 किलोमीटर दूर फैसलाबाद कस्बे में हुई, जिसमें एक महिला ने शनिवार को सोशल मीडिया पर एक वीडियो में खुद के 'सनाउल्लाह (पैगंबर) होने का दावा किया था। एक अन्य वीडियो में उसकी बहन हिना ने कहा कि वह 'सनाउल्लाह के दावे की गवाह है, जो सच है। हिना ने वीडियो में कहा, हम अपनी जान कुर्बान करने के लिए तैयार हैं, लेकिन अपनी बहन के इस दावे से पीछे नहीं हटेंगे कि वह पैगंबर है। सोशल मीडिया पर वीडियो के तेजी से फैलने के बाद, कट्टरपंथी तहरीक-ए-लब्बैक पाकिस्तान समूह के सदस्य फैसलाबाद में हिना के घर के बाहर जमा हो गए, हालांकि पुलिस ने स्थिति को नियंत्रित कर लिया। पुलिस ने हिना को गिरफ्तार कर लिया और उसे एक अज्ञात स्थान पर ले गई। बताया जाता है कि उसकी बहन लाहौर में है। पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी अली नासिर रिजवी ने कहा कि दोनों महिलाओं के खिलाफ ईशनिंदा कानून के तहत मामला दर्ज किया गया है। उन्होंने कहा कि मुख्य संदिग्ध को गिरफ्तार करने के लिए पुलिस के एक दल को लाहौर भेजा गया है। एक अन्य घटना में, लाहौर से करीब 170 किलोमीटर दूर गुजरात में पुलिस ने जमील नामक एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया। पुलिस के मुताबिक, संदिग्ध व्यक्ति शनिवार को गुजरात के पूरन गांव में एक मस्जिद में घुस गया और खुद के पैगंबर होने का दावा किया। उन्होंने बताया कि वहां मौजूद लोगों ने उसकी पिटाई की, जिसमें वह घायल हो गया। पुलिस ने संदिग्ध व्यक्ति को हिरासत में ले लिया। उन्होंने कहा, संदिग्ध व्यक्ति को एक अज्ञात स्थान पर ले जाया गया है।

# कस्टमर्स की ड्रिंक में अपना खून मिलाती थी महिला वेटर

**टोक्यो, एजेंसी।** एक विचित्र घटना में, जापान के एक कैफे में एक वेट्रेस को इसलिए नौकरी से निकाल दिया गया, जब पता लगा कि वह ग्राहकों के कॉकटेल ड्रिंक में अपना खून मिलाती थी। इंडिपेंडेंट के अनुसार, घटना मोंडाईजी कॉन कैफे डाकु नाम के कैफे की बताई जा रही है। महिला वेटर के खिलाफ शिकायत आने के बाद कैफे ने उसके खिलाफ ऐक्शन लिया है। वह ग्राहकों की ड्रिंक में फलों और रंगीन सिरप के साथ अपनी खून मिक्स करती थी। कैफे ने इस घटना को नौकरी आतंकवाद करार दिया और इसे घृषित कार्य बताया है। महिला वेटर की इस हरकत के लिए कैफे को एक दिन अपना काम बंद तक करना पड़ा। महिला वेटर ने इस हरकत के लिए वजह का भी खुलासा किया है। जापान के प्रतिष्ठित मोंडाईजी कॉन कैफे ने अपने यहां काम करने वाली महिला वेटर को घृषित कार्य के लिए नौकरी से निकाल दिया है। महिला

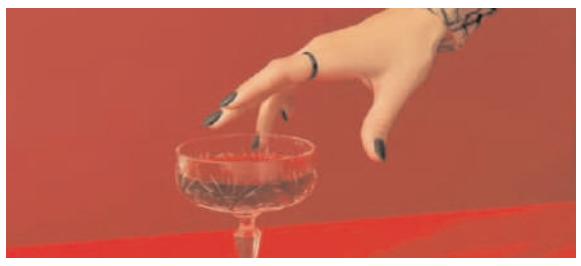

वेटर पर ग्राहकों की ड्रिंक में अपना खून मिक्स करने का आरोप है। एक ट्वीट में कैफे ने कहा कि यह घटना नौकरी आतंकवाद से कम नहीं है। एक दिन के लिए कैफे को अपना संचालन बंद करना पड़ा ताकि, महिला द्वारा अपने खून से गंदे किए ग्लास को साफ किया जा सके। इंडिपेंडेंट के मुताबिक, कैफे के संचालकों ने बताया कि महिला वेटर की पहचान को गुप्त रखा गया है। वह सबसे अलग दिखती थी। वह अक्सर डार्क और बेहद चमकीले कपड़े पहना करती थी। वह ग्राहकों की ड्रिंक में फलों, रंगीन सिरप के साथ अपनी खून मिक्स करती थी। डॉक्टरों के मुताबिक, इस तरह के ड्रिंक पीने से एचआईवी और हेपेटाइटस जैसी गंभीर बीमारी का खतरा हो सकता है। डॉक्टरों ने ऐसा काम करने वाली महिला को मानसिक तौर पर बीमार बताया है। कैफे द्वारा महिला को ड्रिंक में अपना खून मिलाते हुए पकड़ा गया तो उसने अपना जुर्म तुरंत कबूल कर लिया। महिला ने वजह के तौर पर बताया कि वह ऐसा काम ग्राहकों के कहने पर करती थी। ग्राहक उसे उनकी ड्रिंक में अपना खून मिलाने के लिए कहते थे। लेकिन, एक-आध घटना के बाद महिला ऐसा अक्सर करने लगी।

# शी जिनपिंग की नई शैतानी, अरुणाचल प्रदेश के बाद अब दक्षिणी हिन्द महासागर में 19 जगहों के बदले नाम

**बीजिंग, एजेंसी।** वैश्विक मंच पर उभरते चीन ने अपने विस्तारवादी इरादों का संकेत देते हुए दक्षिणी हिन्द महासागर की गहराई में स्थित 19 समुद्री तलों के नाम बदल दिए हैं। चीन की तरफ से की गई यह कार्रवाई भारत की संप्रभुता और हिंद महासागर क्षेत्र में भारतीय प्रभाव क्षेत्र में सीधा दखल है। एक महीने में भारतीय संप्रभुता के साथ छेड़छाड़ करने की यह शी जिनपिंग के शासनकाल में चीन की दूसरी हिमाकत है। इसे हिन्द महासागर में चीन की बढ़ती दखल के रूप में भी देखा जा रहा है। इससे पहले चीन ने 2 फरवरी को अरुणाचल प्रदेश में 11 जगहों के भौगोलिक नाम बदल दिए थे, जिसकी भारत सरकार ने कड़ी निंदा की थी और चीनी दावों को खारिज कर दिया था। इस घटना के एक दिन पहले ही चीन ने दक्षिण हिंद महासागर की गहराई में स्थित 19 समुद्री तल के नाम बदल दिए, जो भारतीय प्रायद्वीप से लगभग 2,000 किलोमीटर दूर हैं। चीनी प्रचार मीडिया ने इसे बीजिंग का सॉफ्ट पावर प्रोजेक्शन कहा है। बता दें कि 2011 में इंटरनेशनल सी-बेड अथॉरिटी ने चाइना ओशन मिनरल रिसोर्सेज आरएंडडी एसोसिएशन के साथ मेडागास्कर के पास हिंद महासागर के दक्षिण-पश्चिम रिज में 15 साल के लिए एक उत्खनन अनुबंध किया था जो चीनी मुख्य भूमि से दूर था। हिंद महासागर में चीन को अलॉट किए गए समुद्री इलाके से उत्तर स्थित दक्षिण-पश्चिम रिज में इंटरनेशनल सी-बेड अथॉरिटी ने भारत के साथ भी

कीमती धातु पॉलीसल्फाइड मॉड्यूल के उत्खनन लिए अनुबंध करार किया था। हिंद महासागर में चीन द्वारा नामित 19 समुद्री तल सुविधाओं में से, छह ओमान के तट और अफ्रीकी हॉर्न से दूर जिबूती के चीनी बंदरगाह के करीब हैं। इनके अलावा मेडागास्कर के तट पर चार सी-बेड फीचर्स हैं। आठ हिंद महासागर के दक्षिण-पश्चिम रिज पर और एक अंटार्कटिका की ओर गहरे हिंद महासागर में रिज फीचर्स के पूर्व में स्थित है। मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए साउथ ब्लॉक के एक अधिकारी ने कहा, अरुणाचल प्रदेश और गहरे हिंद महासागर में विविध भौगोलिक स्थानों का नाम बदलना चीन की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीसी) की मध्य साम्राज्य की मानसिकता को दर्शाता है और 19वीं शताब्दी में प्रभुत्व और शक्ति को प्रोजेक्ट करने के लिए ब्रिटिश शाही दृष्टिकोण को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि यहां तक कि चीन में तैनात राजनयिकों को उनके राजनयिक कागजात पेश करते समय मंदारिन नाम दिया जाता है।

# अमेरिकी विदेश मंत्री ब्लिंकन ने विदेश मंत्री जयशंकर से फोन पर की बात, वैश्विक मुद्दों पर की चर्चा

**वाशिंगटन एजेंसी।** अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने रविवार को विदेश मंत्री एस जयशंकर से टेलीफोन पर बातचीत की और हालिया क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर चर्चा की। जयशंकर ने ट्विटर पर इसकी जानकारी देते हुए कहा, आज सुबह अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन के साथ गर्मजोशी से बातचीत हुई । वार्ता में मौजदू क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर चर्चा की और हमारे द्विपक्षीय संबंधों में लगातार प्रगति का उल्लेख किया। वहीं, अमेरिकी विदेश विभाग के प्रवक्ता नेड प्राइस ने बताया कि दोनों नेताओं ने हाल ही में ताइवान खाड़ी में बढ़े तनाव सूडान में हिंसा जैसे मसलों पर भी विचार विमर्श किया। नेड प्राइस ने यह भी बताया कि ब्लिंकेन और जयशंकर ने सामरिक प्रौद्योगिकी और रक्षा औद्योगिक सहयोग को बढ़ाने और विस्तार करने और खाद्य, ऊर्जा और वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा को बढ़ावा देने के प्रयासों के बारे में बात की।

# सूडान में अर्धसैनिक बलों पर वायु सेना का हवाई हमला, सत्ता के लिए जारी खूनी संघर्ष में एक भारतीय समेत 61 की मौत

**खारतूम, एजेंसी।** सूडान में सत्ता पर नियंत्रण के लिए सेना तथा अर्धसैनिक बलों के बीच राजधानी खारतूम और अन्य इलाकों में खूनी संघर्ष छिड़ा हुआ है। दोनों पक्षों की लड़ाई में रविवार को एक भारतीय समेत कम-से-कम 61 लोगों की मौत हो गई। हिंसा में लगभग 670 लोग जख्मी हुए हैं। मारे गए लोगों में विश्व खाद्य कार्यक्रम के तीन कर्मचारी भी शामिल हैं। संयुक्त राष्ट्र ने इन कर्मचारियों के मारे जाने की निंदा करते हुए कहा कि ये लोग अपने कर्तव्यों का निर्वाह कर रहे थे। सेना और आरएसएफ के बीच महीनों के तनाव के बाद हुआ संघर्ष मालूम हो कि खारतून, पास के शहर ओमडुरमैन और देश के अन्य मोर्चों पर भारी लड़ाई जारी है। दोनों पक्षों ने बख्तरबंद वाहनों और मशीनगनों को तैनात कर दिया है। वायु सेना की ओर से अर्धसैनिक बलों पर हवाई हमले किए जा रहे हैं। माना जा रहा है कि दोनों प्रतिद्वंद्वी ताकतों के पास सिर्फ खारतूम में दसियों हजार लड़ाके हैं। सेना और अर्धसैनिक बल रैपिड सपोर्ट फोर्स (आरएसएफ) के बीच महीनों के तनाव के बाद संघर्ष हुआ है। सेना प्रमुख और आरएसएफ के मुखिया के बीच छिड़ी वर्चस्व की लड़ाई सेना प्रमुख अब्देल फत्ताह अल-बुरहान और आरएसएफ के मुखिया मोहम्मद हमदान दगालो पहले सत्ता में साझेदार थे, लेकिन अब दोनों में वर्चस्व की लड़ाई छिड़ गई है। 2021 में सूडान में तख्तापलट हुआ था और अब इस तरह के संकेत मिल रहे हैं कि दोनों पक्षों के बीच संघर्ष लंबे समय तक जारी रह सकता है। दोनों पक्षों ने कहा है कि वे बातचीत के इच्छुक नहीं हैं। प्रत्यक्षदर्शियों ने रविवार तड़के बताया कि राजधानी खारतूम में रातभर गोलीबारी और विस्फोट की आवाजें आती रहीं। अल अरबिया टेलीविजन पर प्रसारित कुछ फुटेज में खारतूम के कुछ इलाकों में धुएं के घने गुबार दिखाए गए हैं। सूडान के सरकारी टीवी चैनल ने अपना प्रसारण बंद कर दिया है। इस बीच, खारतूम में भारतीय दूतावास ने बताया कि मृत भारतीय की पहचान अलबर्ट आगस्टाइन के रूप में हुई है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भारतीय नागरिक की मौत पर संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि खारतूम की स्थिति चिंताजनक बनी हुई है। भारत उस देश के घटनाक्रमों पर नजर रखेगा। अलबर्ट आगस्टाइन केरल के कन्नूर जिले के रहने वाले थे। वे पूर्व सैनिक थे और पिछले कुछ वर्षों से डल ग्रुप कंपनी में सुपरवाइजर का काम कर रहे थे। अलबर्ट आगस्टाइन के पिता ने कहा कि दोनों पक्षों की गोलीबारी में उनके बेटे को गोली लगी। उस समय वे फोन पर किसी से बात कर रहे थे। अलबर्ट आगस्टाइन के स्वजन ने बताया कि उन्होंने उनका पार्थिव शरीर गृह नगर लाने के लिए सरकार को आवेदन दिया है। अमेरिका और ब्रिटेन समेत कई देशों ने सूडान में छिड़े सत्ता संघर्ष की निंदा की है। अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने दोनों पक्षों से तत्काल हिंसा छोड़ने और गतिरोध वाले मुद्दों के समाधान के लिए बातचीत शुरू करने की अपील की है। ब्रिटेन के विदेश मंत्री जेम्स क्लेवर्ली ने हिंसा की निंदा करते हुए सूडानी नेतृत्व से खून-खराबा रोकने का अनुरोध किया है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरस ने भी युद्धरत पक्षों से हिंसा बंद करने की अपील की है। एक महत्वपूर्ण घटना के तहत दोनों पक्ष मानवीय आधार पर प्रतिदिन तीन घंटे का युद्धविराम लागू करने पर सहमत हो गए हैं। सेना और रैपिड सपोर्ट फोर्स ने कहा कि स्थानीय समय के अनुसार, शाम चार बजे से सात बजे तक युद्धविराम लागू रहेगा।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद
(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129, 9430990555